GULDASTA E AQAAIDO AA'MAAL (HINDI)

अ़क़ाइद व आ'माल के बुन्यादी मसाइल पर 300 से ज़ाइद
सुवालात व जवाबात का मदनी गुलदस्ता

गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल

مکتبۃ المدینہ
(دعوتِ اسلامی)

المدینۃ العلمیۃ
(دعوتِ اسلامی)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी किताब** या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले जैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े ख़ोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले।

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دار الفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक-एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इ़ल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इ़ल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इ़ल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

www.dawateislami.net

"गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल" का हिन्दी रस्मुल ख़त़

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" ने येह किताब '**उर्दू**' ज़बान में पेश की है और **मजलिसे तराजिम** ने इस किताब का '**हिन्दी' रस्मुल ख़त़** (लीपियांतर) करने की सआ़दत ह़ासिल की है [**भाषांतर** (Translation) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (Transliteration) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि (लिखाई) **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है।

इस किताब में अगर किसी जगह **कमी-बेशी** या **ग़लत़ी** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए Sms, E-mail या Whats App ब शुमूल सफ़ह़ा व सत़्र नम्बर) **मुत्त़लअ़** फ़रमा कर सवाब कमाइये।

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त़ का लीपियांतर ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स़ = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स़ = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ा = ئ	ॽ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ہ	व = و	न = ن

-: राबित़ा :-

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर, नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द, ☎ 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

www.dawateislami.net

अ़क़ाइद व आ'माल के बुन्यादी मसाइल पर 300 से ज़ाइद
सुवालात व जवाबात का मदनी गुलदस्ता

गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल

-: पेशक्श :-
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)
शो'बए तख़रीज

-: नाशिर :-
मक्तबतुल मदीना, देहली

www.dawateislami.net

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْكَ یَا رَسُوْلَ اللہ وَعَلٰی اٰلِكَ وَاَصْحٰبِكَ یَا حَبِیْبَ اللہ

नाम किताब : गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल
पेशकश : मदनी उ़लमा शो'बए तख़रीज
त़बाअ़त अव्वल : जमादिल अव्वल, 1435 (अह़मदाबाद)
त़बाअ़त दुवुम : जमादिल आख़िर, 1437 (देहली)
नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

-: मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें :-

❀.... अजमेर शरीफ़ : मक्तबतुल मदीना, 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद, नला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह अजमेर शरीफ़, राजस्थान, फ़ोन : 0145-2629385

❀... बरेली शरीफ़ : मक्तबतुल मदीना, दरगाह आ'ला ह़ज़रत, मह़ल्ला सौदा गरान, रज़ा नगर, बरेली शरीफ़, यु.पी. फ़ोन : 09313895994

❀... गुलबर्गा शरीफ़ : मक्तबतुल मदीना, फ़ैज़ाने मदीना मस्जिद, तिम्मापुरी चौक, गुलबर्गा शरीफ़, कर्नाटक फ़ोन : 09241277503

❀... बनारस : मक्तबतुल मदीना, अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी. फ़ोन : 09369023101

❀... कानपुर : मक्तबतुल मदीना, मस्जिद मख़्दूमे सिमनानी, नज़्द गुर्बत पार्क, डिपटी पडाव चौराहा, कानपुर, यु.पी. फ़ोन : 09616214045

❀... कलकत्ता : मक्तबतुल मदीना, 35A/H/2 मोमिन पुर रोड, दो तल्ला मस्जिद के पास, कलकत्ता, बंगाल, फ़ोन : 033-32615212

❀... नागपुर : मक्तबतुल मदीना, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपुर (ताजपुर) महाराष्ट्र, फ़ोन : 09326310099

❀... अनंतनाग : मक्तबतुल मदीना, मदनी तरबिय्यत गाह, टाउन होंल के सामने, अनंतनाग, (इस्लामाबाद), कश्मीर, फ़ोन : 09797977438

❀... सुरत : मक्तबतुल मदीना, वलिया भाई मस्जिद के सामने, ख़्वाजा दाना दरगाह के पास, सुरत, गुजरात, फ़ोन : 09601267861

❀... इन्दोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, बॉम्बे बाज़ार, उदा पुरा, इन्दोर, एम. पी. (मध्य प्रदेश) फ़ोन : 09303230692

❀... बेंग्लोर : मक्तबतुल मदीना, शॉप नम्बर 13, ह़ज़रत बिलाल मस्जिद कॉम्पलेक्स, नवां मेन पिल्लाना गार्डन, अ़रेबिक कॉलेज, बेंग्लोर, कर्नाटक : 09343268414

❀... हुबली : मक्तबतुल मदीना, ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860

Web : www.dawateislami.net / E.mail : ilmiapak@dawateislami.net

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा
इस किताब को पढ़ने की निय्यतें	4	नापाकी दूर करने का त़रीक़ा	119
पेशे लफ़्ज़	8	इस्तिन्जा का बयान	121
तौह़ीदे बारी तआ़ला	13	पानी का बयान	123
सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم	16	कुंवें का बयान	126
ईमान व कुफ़्र का बयान	27	अवक़ाते नमाज़ का बयान	129
खुदा عَزَّوَجَلَّ के रसूल व नबी عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام	34	जमाअ़त का बयान	133
कुरआने करीम	40	इमामत का बयान	139
सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم	44	मुफ़्सिदाते नमाज़	146
ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم	47	नमाज़े मरीज़ का बयान	150
अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم	49	नमाज़े मुसाफ़िर का बयान	153
मो'जिज़े और करामतें	54	नमाज़े जुमुआ़ का बयान	157
औलियाउल्लाह رَحِمَہُمُ اللّٰہُ تَعَالٰی	55	सजदए तिलावत का बयान	159
तक़्दीरे इलाही عَزَّوَجَلَّ का बयान	58	मय्यित का बयान	164
आ़लमे बरज़ख़	62	ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब	181
अ़लामाते क़ियामत का बयान	67	ईसाले सवाब के 18 मदनी फूल	185
ह़श्रो नश्र का बयान	79	ईसाले सवाब का त़रीक़ा	189
आख़िरत के वाक़िआ़त	85	ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा	189
शफ़ाअ़त का बयान	94	ईसाले सवाब के लिये दुआ़ का	
तक़्लीद का बयान	101	त़रीक़ा	193
बिदअ़त व गुनाहे कबीरा व सग़ीरा	104	इमाम के लिये 30 मदनी फूल	194
त़हारत के मसाइल	111	जमाअ़त से क़ब्ल ए'लान	198
वुज़ू के मसाइल	113	नेकी की दा'वत	199
ग़ुस्ल के मसाइल	117	दुआ़एं	199

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

"इ़ल्मे दीन का सीखना इ़बादत है" के बीस हुरूफ़ की निस्बत से इस किताब को पढ़ने की "20 निय्यतें"

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صلّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلّم **:**
"अच्छी निय्यत बन्दे को जन्नत में दाख़िल कर देती है।"

(الجامع الصغیر،الحدیث ۹۳۲۶،ص ۵۵۷، دارالکتب العلمیۃ بیروت)

दो मदनी फूल :-

﴾1﴿ बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।
﴾2﴿ जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिया से आग़ाज़ करूंगा । (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़रबी इबारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा के लिये इस किताब का अव्वल ता आख़िर मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾6﴿ ह़त्तल इमकान इस का बा वुज़ू और ﴾7﴿ क़िब्ला रू मुत़ालआ़ करूंगा। ﴾8﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾9﴿ अह़ादीसे मुबारका की ज़ियारत करूंगा। ﴾10﴿ जहां जहां "**अल्लाह**" का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾11﴿ जहां जहां "**सरकार**" का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّی اللہُ تعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा। ﴾12﴿ जो मस्अला समझ में नहीं आएगा उस के लिये आयते करीमा " فَسْـَٔلُوْۤا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۙ" (پ۱٤، النحل:٤٣) **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** "तो ऐ लोगो इ़ल्म वालों से पूछो अगर तुम्हें इ़ल्म नहीं।" पर अ़मल करते हुवे उ़लमा से रुजूअ़ करूंगा ﴾13﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) "याद दाश्त" वाले सफ़ह़े पर ज़रूरी निकात लिखूंगा ﴾14﴿ (अपने ज़ाती नुस्ख़े पर) इन्दज़्ज़रूरत (या'नी ज़रूरतन) ख़ास ख़ास मक़ामात पर अन्डर लाइन करूंगा ﴾15﴿ दूसरों को **येह**

www.dawateislami.net

किताब पढ़ने की तरग़ीब दिलाऊंगा ﴾16﴿ इस ह़दीसे पाक "**تَهَادَوْا تَحَابُّوْا**" एक दूसरे को तोह़फ़ा दो आपस में मह़ब्बत बढ़ेगी। (مؤطا امام مالك، ج٢،ص٤٠٧، رقم: ١٧٣١،دارالمعرفة بيروت) पर अ़मल की निय्यत से (एक या ह़स्बे तौफ़ीक़ ता'दाद में) येह किताबें ख़रीद कर दूसरों को तोह़फ़तन दूंगा ﴾17﴿ जिन को दूंगा ह़त्तल इमकान उन्हें येह हदफ़ भी दूंगा कि आप इतने (मसलन 41) दिन के अन्दर अन्दर मुकम्मल पढ़ लीजिये ﴾18﴿ इस किताब के मुत़ालए़ का सारी उम्मत को ईसाले सवाब करूंगा ﴾19﴿ हर साल एक बार येह किताब पूरी पढ़ा करूंगा ﴾20﴿ किताबत वग़ैरा में शरई ग़लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा। (नाशिरीन व मुसन्निफ़ वग़ैरा को किताबों की अग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

अच्छी अच्छी निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ रहनुमाई के लिये, ***अमीरे अहले सुन्नत*** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه *का सुन्नतों भरा बयान* ***"निय्यत का फल"*** *और निय्यतों से मुतअ़ल्लिक़ आप के मुरत्तब कर्दा कार्ड और पेम्फ़लेट* ***मक्तबतुल मदीना*** *की किसी भी शाख़ से हदिय्यतन त़लब फ़रमाएं।*

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा *मौलाना अबू बिलाल* ***मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार*** *क़ादिरी रज़वी ज़ियाई* دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक "**दा'वते इस्लामी**" नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते **इल्मे शरीअ़त** को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब हुस्ने ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस "**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल **छे शो'बे** हैं :

﴾1﴿ शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत
﴾2﴿ शो'बए दर्सी कुतुब
﴾3﴿ शो'बए इस्लाही कुतुब
﴾4﴿ शो'बए तराजिमे कुतुब
﴾5﴿ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
﴾6﴿ शो'बए तख़रीज

"**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**" की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल बरकत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो बरकत, ह़ज़रते

www.dawateislami.net

अ़ल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह **इमाम अहमद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُالرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे हाज़िर के तक़ाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वस्अ़ सहल उस्लूब में पेश करना है । तमाम **इस्लामी भाई** और **इस्लामी बहनें** इस इल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती **मदनी काम** में हर मुमकिन तआ़वुन फ़रमाएं और **मजलिस** की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ालआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ **"दा'वते इस्लामी"** की तमाम मजालिस ब शुमूल **"अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या"** को **दिन ग्यारहवीं** और **रात बारहवीं** तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर **दोनों जहां की भलाई** का सबब बनाए । हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और **जन्नतुल फ़िरदौस** में **जगह** नसीब फ़रमाए ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक 1425 हि.

www.dawateislami.net

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الۡمُرۡسَلِيۡنَ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيۡطٰنِ الرَّجِيۡمِ ط بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ ط

पेशे लफ़्ज़

इल्म की **फ़ज़ीलत** और इस की बरतरी किसी पर भी मख़्फ़ी नहीं, **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने अपने प्यारे ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से इरशाद फ़रमाया :

وَقُلۡ رَّبِّ زِدۡنِیۡ عِلۡمًا ﴿۱۱۴﴾ ***तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :*** *और अ़र्ज़ करो कि ऐ मेरे रब मुझे इल्म ज़ियादा दे ।*

(پ١٦،طه:١١٤)

अ़ल्लामा ह़ाफ़िज़ **इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْبَارِی फ़रमाते हैं : आयते करीमा से इ़ल्म की फ़ज़ीलत वाज़ेह़ तौर पर साबित हो रही है इस लिये कि **अल्लाह** तआ़ला ने अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इ़ल्म के सिवा किसी और शै के ज़ियादा त़लब करने का हुक्म नहीं फ़रमाया और इ़ल्म से मुराद शरीअ़त का इ़ल्म है ।

(فتح الباری شرح صحیح البخاری، کتاب العلم، ج٢،ص١٢٩)

नबिय्ये अकरम, रसूले मोह़तशम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है कि :

"اَفْضَلُ الْعِبَادَةِ طَلَبُ الْعِلْمِ" ***बेहतरीन इ़बादत इ़ल्म का ह़ासिल करना है ।***

(فردوس الاخبار للدیلمی، الحدیث:١٤٢٩، ج١،ص٢٠٧)

हुज्जतुल इस्लाम सय्यिदुना इमाम **मुह़म्मद बिन मुह़म्मद** ग़ज़ाली عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْوَالِی इह़याउल उ़लूम, जिल्द अव्वल, सफ़ह़ा 21 पर फ़रमाते हैं कि "**अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह़ी भेजी कि ऐ इब्राहीम (عَلَیْہِ السَّلَام) ! बिला शुबा मैं **इ़ल्म वाला** हूं और **इ़ल्म वाले** को पसन्द करता हूं ।" और सफ़ह़ा 23 पर रिवायत नक़्ल फ़रमाते हैं कि : "ह़ज़रते सुलैमान عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

www.dawateislami.net

माल, सल्तनत और **इल्म** के दरमियान इख़्तियार दिये गए तो उन्हों ने **इल्म** को पसन्द फ़रमाया, लिहाज़ा **इल्म** इख़्तियार करने के सबब से **सल्तनत** और माल भी अ़ता कर दिया गया।''

(تاریخ مدینہ دمشق لابن عساکر، ذکر من اسمہ سلیمان، ج۲۲، ص۲۷۵)

इल्म का हुसूल बाइ़से इ़ज़्ज़त व **अ़ज़मत** है और इस की **अहम्मिय्यत** बहुत ज़ियादा है इस सिलसिले में कसीर अहादीसे मुबारका वारिद हैं चुनान्चे, सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِیْضَۃٌ عَلٰی کُلِّ مُسْلِمٍ

(سنن ابن ماجہ، باب فضل العلماء، الحدیث: ۲۲٤، ج۱، ص۱٤٦)

इ़ल्म हासिल करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है। ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती **अह़मद यार ख़ान नई़मी** عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : ''इ़ल्म से ब क़दरे ज़रूरत **शरई़ मसाइल** मुराद हैं लिहाज़ा रोज़े, नमाज़ के **मसाइले ज़रूरिय्या** सीखना हर मुसलमान पर फ़र्ज़।'' (मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 202)

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्एु रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : **इल्मे दीन** सीखना इस क़दर कि मज़हबे ह़क़ से आगाह हो, वुज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़, रोज़े वग़ैरहा ज़रूरिय्यात के अह़काम से मुत्तलअ़ हो, ताजिर तिजारत, मुज़ारेअ़ ज़राअ़त, अजीर इजारे, ग़रज़ हर शख़्स जिस ह़ालत में है उस के मुतअ़ल्लिक़ अह़कामे शरीअ़त से वाक़िफ़ हो, **फ़र्ज़े ऐ़न** है । (फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 647)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने एक मक्तूब में लिखते हैं : ''अफ़सोस ! आज कल सिर्फ़ व सिर्फ़ दुन्यावी उ़लूम ही की त़रफ़ हमारी अकसरिय्यत का

www.dawateislami.net

रुजहान है । इल्मे दीन की त़रफ़ बहुत ही कम मैलान है । **ह़दीसे पाक** में है : طَلَبُ الْعِلْمِ فَرِيْضَةٌ عَلٰى كُلِّ مُسْلِمٍ या'नी इल्म का त़लब़ करना हर मुसलमान (मर्द व औ़रत) पर फ़र्ज़ है । (سنن ابن ماجه، ج ١، ص ١٤٦، حديث ٢٢٤)

इस ह़दीसे पाक के तह़्त मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह **इमाम अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ने जो कुछ फ़रमाया, इस का आसान लफ़्ज़ों में मुख़्तसरन ख़ुलासा अ़र्ज़ करने की कोशिश करता हूं। सब में अव्वलीन व अहम तरीन फ़र्ज़ येह है कि **बुन्यादी अ़क़ाइद** का इल्म ह़ासिल करे । जिस से आदमी सह़ीहुल अ़क़ीदा सुन्नी बनता है और जिन के इन्कार व मुख़ालफ़त से **काफ़िर** या **गुमराह** हो जाता है । इस के बा'द मसाइले नमाज़ या'नी इस के फ़राइज़ व शराइत़ व मुफ़्सिदात (या'नी नमाज़ तोड़ने वाली चीज़ें) सीखे ताकि नमाज़ सह़ीह़ त़ौर पर अदा कर सके । फिर जब **रमज़ानुल मुबारक** की तशरीफ़ आवरी हो तो रोज़ों के मसाइल, मालिके निसाबे नामी (या'नी ह़क़ीक़तन या ह़ुक्मन बढ़ने वाले माल के निसाब का मालिक) हो जाए तो ज़कात के मसाइल, साह़िबे इस्तित़ाअ़त हो तो मसाइले **ह़ज, निकाह़** करना चाहे तो इस के ज़रूरी मसाइल, ताजिर हो तो ख़रीदो फ़रोख़्त के मसाइल, मुज़ारेअ़ या'नी काश्तकार हो तो खे़तीबाड़ी के मसाइल, मुलाज़िम बनने और मुलाज़िम रखने वाले पर इजारे के मसाइल । وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी और इसी पर क़ियास करते हुवे) **हर मुसलमान आ़क़िल व बालिग़ मर्द व औ़रत पर उस की मौजूदा ह़ालत के मुत़ाबिक़ मस्अले सीखना फ़र्ज़े ऐ़न है ।** इसी त़रह़ हर एक के लिये मसाइले **ह़लाल व ह़राम** भी सीखना फ़र्ज़ है । नीज़ मसाइले इल्मे क़ल्ब या'नी फ़राइज़े क़ल्बिय्या (बात़िनी फ़राइज़) मसलन **आ़जिज़ी** व **इख़्लास** और **तवक्कुल** वग़ैरहा और इन को ह़ासिल करने का त़रीक़ा और बात़िनी गुनाह मसलन **तकब्बुर, रियाकारी, ह़सद** वग़ैरहा और **इन का इलाज** सीखना हर मुसलमान पर अहम फ़राइज़ से है ।" (माख़ूज़ अज़ फ़तावा रज़विय्या, जि. 23, स. 623-624)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरए बाला इ़बारात से इ़ल्मे दीन की फ़ज़ीलत, अहम्मिय्यत और ज़रूरत वाज़ेह़ है बिल ख़ुसूस ब क़दरे ज़रूरत इ़ल्मे दीन सीखने की फ़र्ज़िय्यत से मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْه और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की वज़ाह़त निहायत **क़ाबिले तवज्जोह** है लिहाज़ा हर एक को चाहिये कि इ़ल्मे दीन सीखने के लिये कोशां रहे बिल ख़ुसूस अपनी ज़रूरत के मसाइल के सीखने में ताख़ीर न करे। इ़ल्मे दीन सीखने के मुख़्तलिफ़ ज़राएअ़ हैं मसलन दर्से निज़ामी, दीनी कुतुब का मुत़ालआ़, किसी सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा आ़लिमे दीन की सोह़बत में रह कर दीनी मसाइल सीखना और तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **दा'वते इस्लामी** के मदनी माह़ोल से वाबस्तगी कि दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त, मुख़्तलिफ़ कोर्सिज़ (मसलन मदनी तरबिय्यती कोर्स, **मदनी क़ाफ़िला** कोर्स, इमामत कोर्स, आ़लिम कोर्स (दर्से निज़ामी) वग़ैरा) और बिल ख़ुसूस मदनी क़ाफ़िलों में ख़ूब ख़ूब **इ़ल्मे दीन** और **सुन्नतें** सीखने का न सिर्फ़ मौक़अ़ मिलता है बल्कि अ़मल का जज़्बा भी बेदार होता है। आइये, आप भी दा'वते इस्लामी के महके महके **मदनी माह़ोल** से वाबस्ता हो कर सुन्नतें सीखने सिखाने वाले **आ़शिक़ाने रसूल** में शामिल हो जाइये और हर दर्स और हर सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में अव्वल ता आख़िर ह़ाज़िरी की सआ़दत ह़ासिल कर के ख़ूब **इ़ल्मे दीन** व सुन्नतें सीखिये और सिखाइये, नीज़ नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने और बा किरदार मुसलमान बनने के लिये अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के अ़त़ा कर्दा **मदनी इन्आ़मात** पर अ़मल करते हुवे रोज़ाना फ़िक्रे मदीना का मा'मूल बना लीजिये ।

अ़क़ाइदे अहले सुन्नत और वुज़ू, ग़ुस्ल और नमाज़ वग़ैरा से मुतअ़ल्लिक़ मसाइल की इब्तिदाई मा'लूमात के लिये ज़ेरे नज़र किताब **"गुलदस्तए अ़क़ाइदो आ'माल"** निहायत मुआ़विन और मददगार

www.dawateislami.net

है, सुवाल जवाब की सूरत में येह मदनी गुलदस्ता फ़तावा रज़विय्या, बहारे शरीअ़त, हमारा इस्लाम, नमाज़ के अह़काम और मदनी पन्ज सूरह की रोशनी में मुरत्तब करने की कोशिश की गई है जिस में ज़रूरी और अहम मसाइल को इख़्तिसार के साथ और आसान अन्दाज़ में ज़िक्र किया गया है ताकि कम पढ़े लिखे भी **इस्तिफ़ादा** कर सकें और जो तफ़्सील जानना चाहें वोह इन कुतुब की त़रफ़ रुजूअ़ फ़रमाएं। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि **अच्छी अच्छी** निय्यतों के साथ इस किताब का मुत़ालआ़ करे और दूसरों को भी तरग़ीब दिला कर सवाबे आख़िरत का ह़क़्दार बने, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें **इख़्लास** अ़त़ा फ़रमाए, आमीन। इस किताब की कुछ ख़ुसूसिय्यात दर्जे ज़ैल है :

﴾1﴿ हर उ़नवान से मुतअ़ल्लिक़ सुवालात क़ाइम कर के उन के जवाबात तह़रीर किये गए हैं और साथ ही उन के ह़वालाजात भी लिख दिये गए हैं।

﴾2﴿ अह़ादीसे मुबारका की अस्ल माख़ज़ से ह़त्तल मक़्दूर तख़रीज कर दी गई है।

﴾3﴿ आयाते क़ुरआनिया का तर्जमा इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْمَنَّان के शोहरए आफ़ाक़ तर्जमए क़ुरआन "**कन्ज़ुल ईमान**" से दिया गया है और

﴾4﴿ आख़िर में माख़ज़ व मराजेअ़ की फ़ेहरिस्त मुसन्निफ़ीन व मुअल्लिफ़ीन के नामों, उन के सिने वफ़ात और मत़ाबेअ़ के साथ ज़िक्र कर दी गई है।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इस्तिद्आ़ है कि इस किताब को पेश करने में उ़लमाए किराम دامت فیوضهم ने जो मेह़नत व कोशिश की इसे क़बूल फ़रमा कर उन्हें बेहतरीन जज़ा दे और उन के इल्मो अ़मल में बरकतें अ़त़ा फ़रमाए और **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** और दीगर मजालिस को दिन पच्चीसवीं रात छब्बीसवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّم

शो'बए तख़रीज, मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

www.dawateislami.net

तौह़ीदे बारी तआ़ला

सुवाल : इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद कितने हैं ?

जवाब : इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ीदे तीन हैं : ﴾1﴿ तौह़ीद ﴾2﴿ रिसालत और ﴾3﴿ मआ़द या'नी क़ियामत, बाक़ी तमाम ए'तिक़ादी बातें इन्हीं के अन्दर आ जाती हैं ।

(हमारा इस्लाम, तौह़ीद, ह़िस्सा : 3, स. 93)

सुवाल : तौह़ीद के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : तौह़ीद का मा'ना दिल से तस्दीक़ करना (मानना) और ज़बान से इस अम्र का इक़रार करना कि हमें और तमाम आ़लम को पैदा करने वाली ज़ात एक है और वोह **अल्लाह** रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ है, उस का कोई शरीक नहीं, न ज़ात में न सिफ़ात में, न हुकूमत में न इबादत में ।

(हमारा इस्लाम, तौह़ीद, ह़िस्सा : 3, स. 93)

सुवाल : खुदाए बुज़ुर्गो बरतर عَزَّوَجَلَّ के मौजूद होने पर क्या दलील है ?

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मौजूद होना आफ़्ताब से ज़ियादा रोशन है, उस की ज़ात का यक़ीन हर शख़्स की फ़ित्रत में दाख़िल है । ख़ुसूसन मुसीबतों में, बीमारियों में, मौत के क़रीब अकसर येह फ़ित्रते अस्लिया ज़ाहिर हो जाती है और बड़े बड़े मुन्किरीन भी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ ही की त़रफ़ रुजूअ़ करने लगते हैं और उन की ज़बानों पर भी बे साख़्ता ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का नाम आ ही जाता है । थोड़ी सी अ़क़्ल वाला इन्सान भी दुन्या की तमाम चीज़ों पर नज़र कर के येह यक़ीन कर लेता है कि बेशक येह आस्मान व ज़मीन, सितारे और सय्यारे, इन्सान व ह़ैवान और तमाम मख़्लूक़ किसी न किसी के पैदा करने से पैदा हुवे हैं । आख़िर कोई तो है जिस ने इन को पैदा किया है और जिस त़रह़ चाहता है इन में तसर्रुफ़ करता है । क्यूंकि जब हम किसी तख़्त या कुरसी वग़ैरा बनी हुई चीज़ों को देखते हैं तो फ़ौरन समझ लेते हैं कि इन्हें किसी न किसी

www.dawateislami.net

कारीगर ने बनाया है। अगर्चे हम ने अपनी आंख से बनाते न देखा। अ़रब के एक बद्दू ने ख़ूब कहा कि ऊंट की मेंगनी देख कर ऊंट के गुज़रने का यक़ीन हो जाता है और नक़्शे क़दम देख कर चलने वाले का सुबूत मिलता है तो फिर इन बुर्जों वाले आस्मान और कुशादा रास्ते वाली ज़मीन को देख कर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सानेए़ आ़लम होने का यक़ीन क्यूं कर न होगा? फ़िल वाक़ेअ़ ज़मीन व आस्मान की पैदाइश, रात दिन का इख़्तिलाफ़, सितारों का ख़ास निज़ाम, इन की मख़्सूस गर्दिश इस बात की खुली हुई दलीलें हैं कि इन का कोई पैदा करने वाला ज़रूर है जो बड़ी ज़बर दस्त कुव्वत व कुदरत वाला और बड़ा ह़कीम और बा इख़्तियार है, जिस के क़ब्ज़ए कुदरत से येह चीज़ें निकल नहीं सकतीं। (हमारा इस्लाम, तौह़ीद, हिस्सा : 3, स. 93-94)

सुवाल : तौह़ीदे इलाही عَزَّوَجَلَّ के सुबूत में कुरआनी व अ़क़्ली कौन कौन सी दलीलें हैं?

जवाब : खुदा वन्दे तआ़ला की वह़दानियत के सुबूत, एक तो अ़क़्ली हैं या'नी इन्सानी अ़क़्ल (बशर्ते़ कि अ़क़्ल सह़ीह़ हो) खुदाए तआ़ला के एक होने का यक़ीन रखती है, इसी लिये दुन्या के बड़े बड़े हुकमा और फ़ल्सफ़ी एक खुदा عَزَّوَجَلَّ के क़ाइल हैं, दूसरे सुबूत वोह हैं जिन को कुरआने करीम ने बताया है। और वोह येह हैं :

﴿۱﴾ وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲، البقرة:۱٦۳)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और तुम्हारा मा'बूद एक है उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं मगर वोही बड़ी रह़मत वाला मेहरबान।

﴿۲﴾ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ وَ اُولُوا الْعِلْمِ قَآىٕمًۢا بِالْقِسْطِ ؕ (پ۳، ال عمران: ۱۸)

*तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई मा'बूद नहीं और फ़िरिश्तों ने और आ़लिमों ने इन्साफ़ से क़ाइम हो कर।*

www.dawateislami.net

﴿۳﴾ لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ لَفَسَدَتَا ۚ (پ۱۷، الانبیاء: ۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *अगर आस्मान व ज़मीन में* **अल्लाह** *के सिवा और ख़ुदा होते तो ज़रूर वोह तबाह होते।*

﴿۴﴾ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۭ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ﴿۹۱﴾ (پ۱۸، المؤمنون: ۹۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *यूं होता तो हर ख़ुदा अपनी मख़्लूक़ ले जाता और ज़रूर एक दूसरे पर अपनी तअ़ल्ली (बरतरी) चाहता। पाकी है* **अल्लाह** *को उन बातों से जो येह बनाते हैं।*

(हमारा इस्लाम, तौहीद, हिस्सा 3. स. 94-95)

सुवाल : तौहीद के कितने मर्तबे हैं ?

जवाब : तौहीद के चार मर्तबे हैं :

﴿1﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही को वाजिबुल वुजूद समझना। ﴿2﴾ तमाम रूहानी और माद्दी आ़लम का ख़ालिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही को जानना। ﴿3﴾ आस्मान और ज़मीन और इन के दरमियान की चीज़ों में तमाम तदबीर और तसर्रुफ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही की ज़ात के साथ मख़्सूस समझना। ﴿4﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ही को मुस्तहिक़े इबादत समझना।

(हमारा इस्लाम, तौहीद, हिस्सा 3. स. 95)

सुवाल : क़दीम किसे कहते हैं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ज़ात के सिवा कौन कौन सी चीज़ें क़दीम हैं ?

जवाब : "क़दीम" वोह जो हमेशा से हो और अज़ली के भी येही मा'ना हैं और जिस त़रह़ उस की ज़ात क़दीम, अज़ली व अबदी है, इसी त़रह़ उस की सिफ़ात भी क़दीम, अज़ली व अबदी हैं और ज़ात व सिफ़ात के सिवा सब चीज़ें ह़ादिस हैं। जो आ़लम में से किसी चीज़ को क़दीम माने या उस के ह़ादिस होने में शक करे वोह काफ़िर व मुशरिक है जैसे आर्या, कि रूह़ और माद्दा को क़दीम मानते हैं यक़ीनन वोह मुशरिक हैं। (ह़ादिस वोह शै होती है जो पहले न हो और फिर किसी के पैदा करने से हो। इसी को मुमकिन भी कहते हैं)।

(हमारा इस्लाम, तौहीद, हिस्सा : 3. स. 95-96)

www.dawateislami.net

सुवाल : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़ाती और सिफ़ाती नाम कितने हैं ?

जवाब : रब तआ़ला का ज़ाती नाम "**अल्लाह**" है, इस को इस्मे ज़ात भी कहते हैं, और लफ़्ज़े "**अल्लाह**" के सिवा दूसरे नाम जो उस की सिफ़ात को ज़ाहिर करें इन्हें सिफ़ाती नाम या अस्माए सिफ़ात कहते हैं, और वोह बे शुमार हैं। ह़दीस शरीफ़ में है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के निनान्वे नाम जिस किसी ने याद कर लिये वोह जन्नती हुवा।

(صحیح مسلم، کتاب الذکر والدعاء...الخ، باب فی اسماء اللّٰہ تعالٰی، الحدیث:۲۶۷۷، ص۱۴۳۹)

हां ! इन नामों के इ़लावा ऐसे नाम जो कुरआनो ह़दीस में न आए हों जाइज़ नहीं मसलन ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को सख़ी या रफ़ीक़ कहना, इसी त़रह़ दूसरी क़ौमों में उस के जो नाम मुक़र्रर हैं और ख़राब मा'ना रखते हैं, येह भी उस के लिये मुक़र्रर करना नाजाइज़ है, जैसे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ को **राम** या **परमात्मा** कहना। (हमारा इस्लाम, तौह़ीद, ह़िस्सा : 3, स. 96)

सुवाल : क्या ख़ुदाए जुल जलाल के नाम के साथ किसी और का नाम रख सकते हैं ?

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बा'ज़ नाम जो मख़्लूक़ पर बोले जाते हैं उन के साथ नाम रखना जाइज़ है जैसे लत़ीफ़, रशीद, कबीर। क्यूंकि बन्दों के नामों में वोह मा'ना मुराद नहीं होते जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये साबित हैं, (मगर इन नामों के साथ "अ़ब्द" का इज़ाफ़ा बेहतर है जैसे अ़ब्दुल लत़ीफ़, अ़ब्दुर्रशीद वग़ैरा) ऐसे नामों को बिगाड़ना सख़्त मन्अ़ है। जैसे लत़ीफ़ से त़ीफ़ा, रशीद से शीदा, करीम से करमू वग़ैरा।

(हमारा इस्लाम, तौह़ीद, ह़िस्सा : 3, स. 96)

सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

सुवाल : नबिय्ये रह़मत, आक़ाए उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यात, औसाफ़ और मो'जिज़ात के बारे में आप क्या जानते हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : प्यारे आक़ा व मौला, हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़ुसूसिय्यात, औसाफ़ और मो'जिज़ात बे शुमार हैं, चन्द का यहां बयान किया जाता है :

ख़ुसूसिय्यात

﴿1﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने सब से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नूर पैदा फ़रमाया फिर इसी नूर से तमाम काइनात पैदा फ़रमाई। अगर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم न होते तो कुछ न होता और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم न हों तो कुछ न हो, हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम जहान की जान हैं।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 57)

वोह जो न थे तो कुछ न था, वोह जो न हों तो कुछ न हो
जान हैं वोह जहान की, जान है तो जहान है

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 126)

﴿2﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम अम्बियाए किराम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की रूहों से अ़हद लिया कि अगर वोह हुज़ूरे पुरनूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ज़माने को पाएं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाएं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद भी करें।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 57)

मीसाक़ के दिन सब नबियों से, इक़रार लिया था उन के लिये
अब आते हैं वोह सरदारे रुसुल, अब उन की विलादत होती है

﴿3﴾ हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ात में ख़ुद भी सब से बेहतर हैं और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का मुबारक ख़ानदान भी सब ख़ानदानों से अफ़्ज़ल है।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 57)

www.dawateislami.net

तेरी नस्ले पाक में है बच्चा बच्चा नूर का
तू है ऐने नूर तेरा सब घराना नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 2, स. 181)

उन जैसा दूसरा न कोई हुवा न होगा

अल्लाह की सर ता ब क़दम शान हैं येह इन सा नहीं इन्सान वोह इन्सान हैं येह
क़ुरआन तो ईमान बताता है इन्हें ईमान येह कहता है मेरी जान हैं येह

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 172)

﴾4﴿ हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत शरीफ़ के वक़्त बुत औंधे गिर पड़े और ऐसा नूर फैला कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने मुल्के शाम के महल्लात देख लिये।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 2, स. 57)

तेरी आमद थी कि बैतुल्लाह मुजरे को झुका
तेरी हैबत थी कि हर बुत थर थरा कर गिर गया

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 41)

﴾5﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का साया न था, क्यूंकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم नूर ही नूर हैं, और नूर का साया नहीं होता।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 2, स. 57)

तू है साया नूर का हर उ़ज़्व टुकड़ा नूर का
साया का साया न होता है न साया नूर का

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 2, स. 179)

﴾6﴿ गर्मी के वक़्त अकसर बादल आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर साया करता था और दरख़्त का साया आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ आ जाता था। ह़ालांकि अभी लोगों को आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नबी होना मा'लूम न हुवा था।

www.dawateislami.net

﴾7﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जिस्मे अन्वर और पसीनए मुबारका में मुश्को ज़ा'फ़रान से बढ़ कर ख़ुश्बू आती थी। जिस रास्ते से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم गुज़रते वोह रास्ता महक जाता।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 58)

गुज़रे जिस राह से वोह सय्यिदे वाला हो कर
रह गई सारी ज़मीं अम्बरे सारा हो कर

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 53)

﴾8﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को ज़मीन व आस्मान के ख़ज़ानों की चाबियां अ़ता फ़रमा दीं, और इख़्तियार दिया कि जिसे जो चाहें दें और जिस से जो चाहें वापस ले लें। उन के हुक्म को कोई टालने वाला नहीं।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 58)

हुक्म नाफ़िज़ है तेरा, ख़ामा तेरा, सैफ़ तेरी — दम में जो चाहे करे, दौर है शाहा तेरा
कुन्जियां दिल की ख़ुदा ने तुझे दीं ऐसी कर — कि येह सीना हो महब्बत का ख़ज़ीना तेरा

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 29)

﴾9﴿ दुन्या व आख़िरत की हर छोटी बड़ी ने'मत आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के तुफ़ैल में मिलती है और मिलती रहेगी।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 58)

﴾10﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम के साथ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नाम भी बुलन्द किया जाता है। हुज़ूरे अक़्दस, नूरे मुक़द्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के महबूब हैं।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 2, स. 5)

www.dawateislami.net

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ का है साया तुझ पर बोल बाला है तेरा, ज़िक्र है ऊंचा तेरा
तू घटाए से किसी के न घटा है न घटे जब बढ़ाए तुझे अल्लाह तआ़ला तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 27)

ग़रज़ ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं। वोह عَزَّوَجَلَّ अल्लाह के ह़बीब हैं और मख़्लूक़ में सारी ख़ूबियां आप ही की ज़ाते बा बरकात पर ख़त्म हैं।

(हमारा इस्लाम, सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 2, स. 57-58)

बा'द अज़ ख़ुदा बुज़ुर्ग तूई क़िस्सा मुख़्तसर

औसाफ़

﴿1﴾ सब से पहले जिस को नबुव्वत मिली वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं : (हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم , ह़िस्सा : 3, स. 104)

ज़ात हुई इन्तिख़ाब, वस्फ़ हुवे ला जवाब
नाम हुवा मुस्त़फ़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 2, स. 192)

﴿2﴾ क़ियामत के रोज़ जो सब से पहले क़ब्र से उठेगा वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही होंगे।

﴿3﴾ शफ़ाअ़त का दरवाज़ा जो सब से पहले खोलेंगे वोह आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही होंगे।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 3, स. 104)

पेशे ह़क़ मुज़्दा शफ़ाअ़त का सुनाते जाएंगे
आप रोते जाएंगे हम को हंसाते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 112)

www.dawateislami.net

﴾4﴿ शफ़ाअ़त की इजाज़त सब से पहले आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही को दी जाएगी।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

लो वोह आए मुस्कुराते हम असीरों की त़रफ़
ख़िरमने इस्यां पर अब बिजली गिराते जाएंगे

(ह़दाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 113)

अब आई शफ़ाअ़त की साअ़त अब आई
ज़रा चैन ले मेरे घबराने वाले

(ह़दाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 115)

﴾5﴿ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को एक झन्डा मर्ह़मत होगा जिस को **"लिवाउल ह़म्द"** कहते हैं, तमाम मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام से ले कर आख़िर तक सब इसी के नीचे होंगे।

﴾6﴿ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के लिये सारी ज़मीन पाक करने वाली और मस्जिद ठहरी।

﴾7﴿ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही के लिये माले ग़नीमत ह़लाल किया गया।

﴾8﴿ हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ही पेश्वाए मुर्सलीन और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। علیھم الصلوٰۃ والتسلیم

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

सब से अव्वल सब से आख़िर इब्तिदा हो इन्तिहा हो
सब तुम्हारी ही ख़बर थे तुम मुअख़्ख़र मुब्तदा हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 248)

﴾9﴿ रोज़े मह़शर हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आगे होंगे और सारी मख़्लूक़ पीछे पीछे। (हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

बाग़े जन्नत में मुह़म्मद मुस्कुराते जाएंगे
फूल रह़मत के झड़ेंगे हम उठाते जाएंगे

www.dawateislami.net

﴾10﴿ पुल सिरात़ से सब से पहले हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी उम्मत को ले कर गुज़र फ़रमाएंगे।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

पुल से उतारो राह गुज़र को ख़बर न हो
जिब्रील पर बिछाएं तो पर को ख़बर न हो

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 96)

﴾11﴿ दीगर अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام किसी एक क़ौम की त़रफ़ भेजे गए जब कि हुज़ूर ताजदारे अ़रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तमाम मख़्लूक़ की त़रफ़ रसूल बना कर भेजे गए।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार ताजदारों का आक़ा हमारा नबी

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 102)

﴾12﴿ हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मक़ामे महमूद अ़त़ा फ़रमाएगा कि तमाम अव्वलीन व आख़िरीन इन की हम्द करेंगे। (हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

सबा वोह चले कि बाग़ फले, वोह फूल खिले कि दिन हों भले
लिवा के तले सना में खुले, रज़ा की ज़बां तुम्हारे लिये

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 256)

﴾13﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जिस्म के साथ मे'राज हुई।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

वोह सरवरे किश्वरे रिसालत, जो अ़र्श पर जल्वा गर हुवे थे
नए निराले त़रब के सामां, अ़रब के मेहमान के लिये थे

(हदाइक़े बख़्शिश, हिस्सा : 1, स. 162)

www.dawateislami.net

﴾14﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम नबियों علیہم الصلوٰۃ والتسلیم से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान लाने और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मदद करने का वा'दा लिया।

﴾15﴿ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को "ह़बीबुल्लाह" का ख़िता़ब मिला। तमाम जहान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा चाहता है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रिज़ा का त़ालिब है।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 3, स. 105)

ख़ुदा की रिज़ा चाहते हैं दो आ़लम ख़ुदा चाहता है रिज़ाए ***मुह़म्मद***

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 49)

मो'जिज़ात

डूबे हुवे सूरज को पलटाना, इशारे से चांद के दो टुकड़े कर देना, उंगलियों से पानी के चश्मे जारी करना, थोड़े से त़आ़म का कसीर जमाअ़त के लिये काफ़ी हो जाना, दूध की मा'मूली मिक़्दार से कसीर अफ़राद का सैराब होना, कंकरियों का तस्बीह़ पढ़ना, लकड़ी के सुतून में ऐसी सिफ़त पैदा हो जाना जो ख़ास इन्सानी सिफ़त है या'नी न सिर्फ़ थर थराना बल्कि फ़िराक़े महबूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का एह़सास पैदा होना और इस पर रोना, दरख़्तों और पथ्थरों का आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को सलाम करना, दरख़्तों को बुलाना और उन का आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हुक्म पर चल कर आना, दरिन्दों और मूज़ी जानवरों का आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का नामे नामी इस्मे गिरामी सुन कर राम हो जाना और हज़ारों पेश गोइयों का आफ़्ताब की त़रह़ सादिक़ होना वग़ैरा वग़ैरा, हज़ारों मो'जिज़ात हैं जो न सिर्फ़ आयात व सह़ीह़ अह़ादीस से साबित हैं बल्कि बहुत से ग़ैर मुस्लिम भी इस का इक़रार करते हैं और उन की किताबों में भी इन का ज़िक्र पाया जाता है।

(हमारा इस्लाम, सरवरे काइनात صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 4, स. 181)

www.dawateislami.net

सुवाल : ख़ातमुन्नबिय्यीन के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : ख़ातमुन्नबिय्यीन या ख़त्मुल मुर्सलीन के मा'ना येह हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर सिलसिलए नबुव्वत ख़त्म फ़रमा दिया, हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या बा'द में कोई नया नबी नहीं हो सकता। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ाते पाक पर नबुव्वत का ख़ातिमा हो गया।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 104)

सुवाल : हमारे नबी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की नबुव्वत आ़म है या ख़ास ? और क्या अम्बिया व मुर्सलीन علیهم الصلوٰة والتسلیم भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत हैं ?

जवाब : नबिय्ये रह़मत, आक़ाए उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَلَيْهِ السَّلَام की नबुव्वत व रिसालत सय्यिदुना आदम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने से रोज़े क़ियामत तक की तमाम मख़्लूक़ात को आ़म है। उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत तमाम जिन्नो इन्स और फ़िरिश्तों को शामिल है, बल्कि तमाम ह़ैवानात, जमादात, नबातात आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत के दाइरे में दाख़िल हैं, तो जिस त़रह़ इन्सान के ज़िम्मे हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की इत़ाअ़त फ़र्ज़ है, यूं ही हर मख़्लूक़ पर हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी करना ज़रूरी है और येह सब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत हैं, तो जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बादशाहे ज़मीन व आस्मान हैं और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की सारी मख़्लूक़ के लिये नबी व रसूल बना कर भेजे गए हैं, तो तमाम नबियों और रसूलों علیهم الصلوٰة والتسلیم के भी आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم रसूल हुवे, और जब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इन के रसूल हुवे तो येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या भी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के उम्मती ठहरे।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم , हिस्सा : 3, स. 104)

www.dawateislami.net

सुवाल : हुज़ूर मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم किस ख़ानदान और किस क़बीले से हैं ?

जवाब : हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ानदाने कुरैश से हैं, येह ख़ानदान अ़रब में हमेशा से मुमताज़ व मुअ़ज़्ज़ज़ चला आता था । अ़रब के तमाम क़बीले और ख़ानदान इस ख़ानदान को अपना सरदार मानते थे । इसी ख़ानदाने कुरैश की एक शाख़ बनी हाशिम थी, जो कुरैश की दूसरी तमाम शाख़ों से ज़ियादा इ़ज़्ज़त रखती थी । हुज़ूर सुल्ताने मदीना, राहते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद में से किनाना को बरगुज़ीदा बनाया और किनाना में से कुरैश को और कुरैश में से बनी हाशिम को और बनी हाशिम में से मुझे बरगुज़ीदा बनाया ।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب ماجاء فی فضل النبی صلی اللہ علیہ وسلم، الحدیث:٣٦٢٦، ج٥،ص ٣٥٠)

हज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام फ़रमाते हैं कि मैं दुन्या के मशरिक़ व मग़रिब में फिरा मगर बनी हाशिम से अफ़्ज़ल कोई ख़ानदान नहीं देखा । (المعجم الاوسط، باب من اسمه محمد، الحدیث:٦٢٨٥،ج٤، ص٣٧٢)

हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को हाशिमी इसी लिये कहा जाता है कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم बनी हाशिम से हैं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के परदादा का नाम हाशिम है और येह अ़ब्दे मनाफ़ के बेटे हैं हाशिम का अस्ली नाम अ़म्र था । येह निहायत ही मेहमान नवाज़ थे । इन का दस्तर ख़्वान हर वक़्त बिछा रहता था । एक मरतबा क़ह़त के ज़माने में येह मुल्के शाम से ख़ुश्क रोटियां ख़रीद कर मक्का में लाए और रोटियों का चूरा कर के ऊंट के शोरबे में डाल कर लोगों को पेट भर कर खिलाया उस दिन से इन को हाशिम (रोटियों का चूरा करने वाला) कहा जाने लगा । हाशिम की पेशानी में नूरे मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم चमकता था । इसी लिये लोग इन की बड़ी इ़ज़्ज़त किया करते थे ।

(हमारा इस्लाम, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, हिस्सा : 3, स. 106)

www.dawateislami.net

सुवाल : हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म शरीफ़ के मुतअ़ल्लिक़ अहले सुन्नत का क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब : तमाम अहले सुन्नत व जमाअ़त का इस बात पर इज्माअ़ है कि जिस त़रह़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपने तमाम कमालात में जुम्ला अम्बियाओ मुर्सलीन علیهم الصلوٰة والتسلیم से अफ़्ज़ल व आ'ला हैं, इसी त़रह़ आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कमालाते इ़ल्मी में भी सब से फ़ाइक़ हैं। क़ुरआने करीम की बहुत सी आयात और अह़ादीसे कसीरा से येह बात साबित है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ह़बीब, ह़बीबे लबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को तमाम काइनात के उ़लूम अ़त़ा फ़रमाए और इ़ल्मे ग़ैब के दरवाज़े आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर खोल दिये। हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर हर चीज़ रोशन फ़रमा दी और आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब कुछ पहचान लिया, जो कुछ आस्मानों और ज़मीन में है सब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में आ गया। ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर क़ियामे क़ियामत तक तमाम मख़्लूक़, सय्यिदे आ़लम, शहनशाहे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर पेश की गई और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने गुज़श्ता व आयिन्दा की सारी मख़्लूक़ को पहचान लिया। नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हर शख़्स को इस से भी ज़ियादा पहचानते हैं जितना हम में से कोई अपने अ़ज़ीज़ को पहचाने और उम्मत का हर ह़ाल, इन की हर निय्यत, इन के हर इरादे और इन के दिलों के ख़यालात सब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर रोशन हैं। आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मेरे सामने दुन्या उठा ली है, तो मैं उसे और उस में जो कुछ क़ियामत तक होने वाला है सब को ऐसे देख रहा हूं जैसे अपनी हथेली को देखता हूं (حلیة الاولیاء،۳۳۸۔حد یر بن کریب، الحدیث:۷۹۷۹، ج٦، ص١٠٧) और येह जो कुछ है हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का पूरा इ़ल्म नहीं बल्कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्मे मुबारक से एक छोटा सा ह़िस्सा है। हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के उ़लूम की ह़क़ीक़त ख़ुद वोह जानें या उन का अ़त़ा करने वाला उन का मालिको मौला عَزَّوَجَلَّ

(हमारा इस्लाम, सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 4, स. 184)

وَاِنَّ مِنْ جُوْدِكَ الدُّنْيَا وَضَرَّتَهَا
وَمِنْ عُلُوْمِكَ عِلْمَ اللَّوْحِ وَالْقَلَمِ

(क़सीदा बुर्दा (मुतर्जम) स. 82)

यहां येह बात हमेशा के लिये ज़ेह्न नशीन कर लेनी चाहिये कि "इल्मे ग़ैबे ज़ाती" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के साथ ख़ास है और अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलिया رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ को ग़ैब का इ़ल्म **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ता'लीम से अ़त़ा होता है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बताए बिग़ैर किसी को किसी चीज़ का इ़ल्म नहीं और येह कहना कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बताए से भी कोई नहीं जानता, महज़ बात़िल और सेंकड़ों आयात व अह़ादीस के ख़िलाफ़ है। अपने पसन्दीदा रसूलों عَلَيْهِمُ السَّلَام को इ़ल्मे ग़ैब दिये जाने की ख़बर ख़ुद रब्बे अक्बर عَزَّوَجَلَّ ने सूरए जिन्न में दी हुई है और बारिश का वक़्त और ह़म्ल में क्या है? और कल कौन क्या करेगा? और कहां मरेगा? इन तमाम उमूर की ख़बरें भी ब कसरत अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व औलियाए उ़ज़्ज़ाम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ ने दी हैं और कसीर आयतें और ह़दीसें इस पर दलालत करती हैं। (हमारा इस्लाम, सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़िस्सा : 4, स. 183)

ईमान व कुफ़्र का बयान

सुवाल : ईमान किसे कहते हैं, इस्लाम और ईमान में क्या फ़र्क़ है?

जवाब : सच्चे दिल से उन तमाम बातों की तस्दीक़ करना जो ज़रूरिय्याते दीन से हैं, इसे ईमान कहते हैं। या यूं समझें कि जो कुछ हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म, हमारे प्यारे आक़ा, ह़ज़रत **मुह़म्मद** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने रब ख़ुदाए बुज़ुर्गो बरतर عَزَّوَجَلَّ के पास से लाए, ख़्वाह वोह ह़ुक्म हो या ख़बर, इन सब को ह़क़ जानना और सच्चे दिल से मानना ईमान कहलाता है और जो शख़्स

www.dawateislami.net

ईमान लाए उसे मोमिन व मुसलमान कहते हैं। इस्लाम के लुग़वी मा'ना इताअ़त व फ़रमां बरदारी के हैं और शरई मा'ना में इस्लाम और ईमान एक ही हैं इन में कोई फ़र्क़ नहीं। जो मोमिन है वोह मुसलमान है और जो मुसलमान है वोह मोमिन है, अलबत्ता सिर्फ़ ज़बानी इक़रार करना कि जिस के साथ क़ल्बी तस्दीक़ न हो मो'तबर नहीं, इस से आदमी मोमिन नहीं होता। (हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, हिस्सा : 4, स. 193)

सुवाल : मोमिन कितनी क़िस्म के हैं नीज़ "फ़ासिक़ फ़िल अ़क़ीदा" किसे कहते हैं ?

जवाब : मोमिन दो क़िस्म के हैं :

﴾1﴿ मोमिने सालेह़ ﴾2﴿ मोमिने फ़ासिक़

मोमिने सालेह़ या मोमिने मुत़ीअ़ वोह मुसलमान है जो दिल की तस्दीक़ और ज़बान के इक़रार के साथ साथ शरीअ़त के अह़काम का पाबन्द भी हो, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इताअ़त करता हो, शरीअ़त के ख़िलाफ़ न करता हो और **मोमिने फ़ासिक़** वोह है जो अह़कामे शरीअ़त की तस्दीक़ और इक़रार तो करता हो मगर उस का अ़मल इन अह़काम के बर ख़िलाफ़ हो जैसे वोह मुसलमान जो नमाज़, रोज़ा को फ़र्ज़ तो जानते हैं मगर अदा नहीं करते। इसी त़रह़ "फ़ासिक़ फ़िल अ़क़ीदा" वोह शख़्स है जो दा'वए इस्लाम के साथ साथ मज़हबे अहले सुन्नत व जमाअ़त के ख़िलाफ़ अ़क़ीदा रखता है इसी को बद दीन, गुमराह, बद मज़हब और दाल्ल (भटका हुवा) भी कहते हैं। (हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, हिस्सा : 4, स. 192)

सुवाल : आ'माले बदन, ईमान में दाख़िल हैं या नहीं ?

जवाब : अस्ल ईमान सिर्फ़ तस्दीक़े क़ल्बी का नाम है। आ'माले बदन अस्लन ईमान का जुज़्व नहीं, हां ! बा'ज़ आ'माल जो क़त़्अ़न ईमान के ख़िलाफ़ हों उन के मुर्तकिब को काफ़िर कहा जाएगा, जैसे बुत या चांद, सूरज वग़ैरा को सजदा करना या किसी नबी या क़ुरआने करीम की या

www.dawateislami.net

का'बए मुअ़ज़्ज़मा की तौहीन करना या किसी सुन्नत को हल्का बताना, येह बातें यक़ीनन कुफ़्र हैं। यूं ही बा'ज़ आ'माल कुफ़्र की अ़लामत हैं जैसे ज़ुन्नार (वोह धागा या डोरी जो हिन्दू गले से बग़ल के नीचे तक डालते हैं और ईसाई, मजूसी और यहूदी कमर में बांधते हैं।) (उर्दू लुग़त, तारीख़ी उसूल पर, जि. 11, स. 162) बांधना, सर पर चुटिया (वोह चन्द बाल जो बच्चे के सर पर मन्नत मान कर हिन्दू रखते हैं) (فرهنگ آصفیه،ج۱،ص۱۰٤) रखना, क़श्क़ा (पेशानी पर संदल या ज़ा'फ़रान के दो निशानात, टीका, तिलक जो हिन्दू माथे पर लगाते हैं।) (उर्दू लुग़त, तारीख़ी उसूल पर, जि. 14, स. 254) लगाना। (येह हिन्दूओं के शआ़इर या'नी मज़हबी तरीक़े हैं) जिस शख़्स से येह अफ़्आ़ल सादिर हों उसे अज़ सरे नौ इस्लाम लाने और इस के बा'द अपनी औ़रत से दोबारा निकाह़ करने का हुक्म दिया जाएगा। (हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, ह़िस्सा : 4, स. 193)

सुवाल : ईमान घटता और बढ़ता भी है या नहीं ?

जवाब : ईमान कोई ऐसी शै नहीं जो बढ़े या घटे, इस लिये कि कमी बेशी उस में होती है जो मिक़्दार या'नी लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई या गिनती वग़ैरा रखता हो, जब कि ईमान तस्दीक़ है और तस्दीक़ नाम है दिल की एक कैफ़िय्यत का, जिसे यक़ीन कहा जाता है। अलबत्ता ईमान में शिद्दत व ज़ो'फ़ की गुन्जाइश है, या'नी कमाले ईमान में कमी बेशी हो सकती है, चुनान्चे, ह़दीस शरीफ़ में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तन्हा ईमान इस उम्मत के तमाम अफ़राद के मजमूई ईमानों पर ग़ालिब है। (हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, ह़िस्सा : 4, स. 193)

(شعب الایمان للبیهقی،باب القول فی زیادة الایمان ونقصانه...الخ،الحدیث:٣٦،ج١،ص٦٩)

सुवाल : मुसलमान होने के लिये क्या शर्त़ है ?

जवाब : इक़रारे लिसानी या'नी ज़बान से अपने मुसलमान होने का इक़रार करना ताकि दूसरे लोग इसे मुसलमान समझें और मुसलमान इस के साथ अहले इस्लाम का सा सुलूक करें नीज़ येह भी शर्त़ है कि ज़बान से

www.dawateislami.net

किसी ऐसी चीज़ का इन्कार न करे जो ज़रूरिय्याते दीन से हो। अगर्चे बाक़ी बातों का इक़रार करता हो, अगर्चे वोह येह कहे कि सिर्फ़ ज़बान से इन्कार है दिल में इन्कार नहीं, कि बिग़ैर शरई मजबूरी के कलिमए कुफ़्र वोही शख़्स अपनी ज़बान पर लाएगा जिस के दिल में ईमान की इतनी ही वक़्अ़त है कि जब चाहा इक़रार कर लिया और जब चाहा इन्कार कर दिया और ईमान तो ऐसी तस्दीक़ है जिस के ख़िलाफ़ की अस्लन गुन्जाइश नहीं। (हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, हिस्सा : 4, स. 193-194)

सुवाल : कुफ़्रो शिर्क किसे कहते हैं ?

जवाब : हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जो कुछ अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास से लाए, इन में से किसी एक बात को भी न मानना कुफ़्र है और शिर्क के मा'ना हैं ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को वाजिबुल वुजूद या मुस्तह़िक़े इ़बादत जानना। या'नी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की ख़ुदाई में दूसरे को शरीक करना और येह कुफ़्र की सब से बद तरीन क़िस्म है। इस के सिवा कोई बात अगर्चे कैसी ही शदीद कुफ़्र हो ह़क़ीक़तन शिर्क नहीं और कभी शिर्क बोल कर मुत़्लक़ कुफ़्र मुराद लिया जाता है और येह जो क़ुरआने अ़ज़ीम ने फ़रमाया कि **शिर्क न बख़्शा जाएगा** (پ٥، النسآء:٤٨) वोह इस मा'ना पर है या'नी अस्लन किसी कुफ़्र की मग़्फ़िरत न होगी। कुफ़्र करने वाले को काफ़िर और शिर्क करने वाले को मुशरिक कहा जाता है। (हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, हिस्सा : 4, स. 194)

सुवाल : काफ़िर कितनी क़िस्म के होते हैं ?

जवाब : काफ़िर दो क़िस्म के होते हैं : ﴾1﴿ अस्ली ﴾2﴿ मुर्तद।

काफ़िरे अस्ली वोह कि जो शुरूअ़ से काफ़िर है और कलिमए इस्लाम का इन्कार करता है। ख़्वाह अ़लल ए'लान कलिमा का मुन्किर हो या ब ज़ाहिर कलिमा पढ़ता हो लेकिन दिल में इन्कार करता हो और मुर्तद वोह कि जो इस्लाम का कलिमा पढ़ लेने के बा'द (या'नी मुसलमान

www.dawateislami.net

हो जाने के बा'द) कुफ़्र करे, ख़्वाह यूं कि पहले मुसलमान था फिर ए'लानिया इस्लाम से फिर गया, कलिमए इस्लाम का मुन्किर हो गया, या यूं कि कलिमए इस्लाम अब भी पढ़ता है, अपने आप को मुसलमान ही कहता है और फिर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की तौहीन करता है या ज़रूरिय्याते दीन में से किसी बात से इन्कार करता है।

(हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, हिस्सा : 4, स. 194-195)

सुवाल : जो काफ़िर ए'लानिया कुफ़्र करते हैं उन की कितनी क़िस्में हैं?

जवाब : अ़लल ए'लान कलिमए इस्लाम के मुन्किर चार क़िस्म के हैं :

अव्वल : "**दहरिया**" कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के वुजूद ही का मुन्किर है। ज़माने को क़दीम ख़याल करता है, मख़्लूक़ को ख़ुद ब ख़ुद पैदा होने वाला कहता है और क़ियामत का क़ाइल नहीं। इन ही में ज़िन्दीक़ और मुल्हिद हैं कि दीन का मज़ाक़ उड़ाते और ज़रूरिय्याते दीन बल्कि ता'लीमाते इस्लाम को मुज़्हका ख़ैज़ समझते हैं, अगर्चे वुजूदे बारी तआ़ला عَزَّوَجَلَّ के मुन्किर न भी हों।

दुवुम : "**मुशरिक**" कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा किसी और को भी मा'बूद या वाजिबुल वुजूद मानता है। जैसे **हिन्दू बुत परस्त**, कि बुतों को अपना मा'बूद जानते हैं और **आर्या**, कि येह रूह़ और माद्दा को वाजिबुल वुजूद या'नी क़दीम व ग़ैर मख़्लूक़ जानते हैं। येह दोनों मुशरिक हैं और आर्यों को मुवह्हिद समझना सख़्त बातिल है।

सिवुम : "**मजूसी**" आतश परस्त कि आग की पूजा करते हैं।

चहारुम : "**किताबी**" (अहले किताब) यहूदी और नसरानी, जो दूसरी आस्मानी किताबों के नुज़ूल का इक़रार और कुरआने करीम का इन्कार करते हैं और इस पर ईमान नहीं रखते।

(हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, हिस्सा : 4, स. 195)

सुवाल : मुनाफ़िक़ कौन होता है?

जवाब : मुनाफ़िक़ वोह काफ़िर है कि ज़बान से तो दा'वए इस्लाम

www.dawateislami.net

करता है मगर दिल में इस्लाम का मुन्किर है। ऐसे लोगों के लिये जहन्नम का सब से नीचे का त़ब्क़ा है। हुज़ूर सुल्त़ाने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में कुछ लोग इस नाम के साथ मश्हूर हुवे, इस लिये कि उन के कुफ़्रे बात़िनी को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने वाज़ेह़ फ़रमाया और फ़रमा दिया कि येह मुनाफ़िक़ हैं। अब इस ज़माने में किसी ख़ास शख़्स की निस्बत यक़ीन के साथ मुनाफ़िक़ नहीं कहा जा सकता, अलबत्ता निफ़ाक़ की एक शाख़ इस ज़माने में भी पाई जाती है कि बहुत से बद मज़हब अपने आप को मुसलमान कहते हैं, और देखा जाता है कि दा'वए इस्लाम के साथ ज़रूरिय्याते दीन का इन्कार भी है। काफ़िरों में सब से बदतर मुनाफ़िक़ येही हैं और इन की सोह़बत हज़ारों काफ़िरों की सोह़बत से ज़ियादा मुज़िर है कि येह मुसलमान बन कर कुफ़्र सिखाते हैं।

(हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, ह़िस्सा : 4, स. 195-196)

सुवाल : काफ़िर की बख़्शिश और नजात के लिये दुआ़ करना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : जो किसी काफ़िर के लिये उस के मरने के बा'द मग़्फ़िरत की दुआ़ करे या किसी मुर्दा मुर्तद को मर्ह़ूम या मग़्फ़ूर या किसी मुर्दा हिन्दू को बेकुन्ठ बाशी (जन्नती) कहे, वोह ख़ुद काफ़िर है।

(हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, ह़िस्सा : 4, स. 196)

सुवाल : काफ़िर को काफ़िर कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : मुसलमान को मुसलमान और काफ़िर को काफ़िर जानना ज़रूरिय्याते दीन से है, अगर्चे किसी ख़ास शख़्स की निस्बत उस वक़्त तक येह यक़ीन से नहीं कहा जा सकता कि इस का ख़ातिमा ईमान पर या مَعَاذَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ कुफ़्र पर हुवा, जब तक कि इस ख़ातिमे का ह़ाल दलीले शरई से साबित न हो। मगर इस के हरगिज़ येह मा'ना नहीं कि जिस

www.dawateislami.net

शख़्स ने क़त्अ़न कुफ़्र किया हो उस के कुफ़्र में भी शक किया जाए, कि क़त्ई काफ़िर के कुफ़्र में शक भी आदमी को काफ़िर बना देता है, तो जब कोई काफ़िर अपने कुफ़्र से तौबा किये बिग़ैर मर गया तो हमें ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ और रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का हुक्म येही है कि उसे काफ़िर ही जानें, उस की ज़िन्दगी और मौत के बा'द उस के साथ वोही तमाम मुआ़मलात करें जो काफ़िरों के लिये हैं और ख़ातिमे का ह़ाल इल्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर छोड़ दें। इसी त़रह़ जो ज़ाहिरन मुसलमान हो और उस से कोई क़ौल व फ़े'ल ईमान के ख़िलाफ़ साबित न हो तो फ़र्ज़ है कि हम उसे मुसलमान ही मानें, अगर्चे हमें इस के भी ख़ातिमे का ह़ाल मा'लूम नहीं। तो पता चला कि शरीअ़त का मदार ज़ाहिर पर है, जब कि रोज़े क़ियामत सवाब या अ़ज़ाब की बुन्याद ख़ातिमे पर है।

(हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, ह़िस्सा : 4, स. 196)

सुवाल : इस उम्मत में गुमराह फ़िर्क़े कितने हैं ?

जवाब : ह़दीसे मुबारका में है कि येह उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़े हो जाएगी, एक फ़िर्क़ा जन्नती होगा बाक़ी सब जहन्नमी। सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने अ़र्ज़ की : वोह जन्नती फ़िर्क़ा कौन सा है ? फ़रमाया : "वोह जिस पर मैं और मेरे सह़ाबा हैं।"

(المستدرك على الصحيحين، كتاب العلم، باب منع معاوية قاصاً كان يقص...الخ، الحديث: ٤٥٥، ج١، ص ٣٣٧)

या'नी सुन्नत के पैरू। इसी त़रह़ एक दूसरी रिवायत में है कि हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़मत निशान है कि वोह जमाअ़त है या'नी मुसलमानों का बड़ा गुरौह जिसे "**सवादे आ'ज़म**" फ़रमाया और फ़रमाया जो इस से अलग हुवा जहन्नम में अलग हुवा। इसी वज्ह से इस जन्नती फ़िर्क़े का नाम अहले सुन्नत व जमाअ़त हुवा।

www.dawateislami.net

(مشکاۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، الحدیث:۱۷۲، ۱۷٤، ج۱، ص٥٤، ٥٥ ومرقاۃ المفاتیح، کتاب الایمان، باب الاعتصام بالکتاب والسنۃ، تحت الحدیث:۱۷٤، ج۱، ص٤۲۱ ملتقطاً وھمارا اسلام، ایمان وکفر، حصہ٤، ص۱۹٦، ۱۹۷)

सुवाल : ज़रूरिय्याते दीन का क्या मत़लब है ?

जवाब : ज़रूरिय्याते दीन वोह दीनी मसाइल हैं जिन के बारे में हर ख़ास व आ़म जानता हो कि इन्हें हुज़ूर सुल्त़ाने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم अपने रब عَزَّوَجَلَّ के पास से लाए जैसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह़दानियत, अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ السَّلَام की नबुव्वत, जन्नत व नार, ह़श्रो नश्र वग़ैरा, मसलन येह अ़क़ीदा रखना कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं। आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द कोई नया नबी नहीं हो सकता या येह अ़क़ीदा रखना कि सब आस्मानी किताबें और सह़ीफ़े ह़क़ हैं और सब कलामुल्लाह عَزَّوَجَلَّ हैं, या येह कि क़ुरआने करीम में किसी ह़र्फ़ या नुक़्ते की कमी या बेशी मुह़ाल है, अगर्चे तमाम दुन्या इस के बदलने पर जम्अ़ हो जाए।

(हमारा इस्लाम, ईमान व कुफ़्र, ह़िस्सा : 4, स. 197)

ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के रसूल व नबी عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام

सुवाल : रसूल कौन होते हैं और नबी व रसूल में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने जिन बरगुज़ीदा बन्दों को अपनी मख़्लूक़ की हिदायत और रहनुमाई के लिये अपना पैग़ाम दे कर भेजा उन्हें रसूल कहते हैं। येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के बन्दों के दरमियान वासित़ा होते हैं और लोगों को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ बुलाते हैं। नबी व रसूल के मा'ना में भी कोई फ़र्क़ नहीं येह दोनों लफ़्ज़ एक ही मा'ना के लिये बोले और समझे जाते हैं, अलबत्ता नबी सिर्फ़ उस बशर को कहते हैं जिसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हिदायत के लिये वह़ी भेजी हो। जब

www.dawateislami.net

कि रसूल फ़िरिश्तों में भी होते हैं और इन्सानों में भी । और बा'ज़ उ़लमा येह फ़रमाते हैं कि जो नबी नई शरीअ़त लाए उसे रसूल कहते हैं । हां ! नबियों की कोई ता'दाद मुक़र्रर कर लेना जाइज़ नहीं । हमें येह ए'तिक़ाद रखना चाहिये कि ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के हर नबी पर हमारा ईमान है ।

(हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 53-55, मुल्तक़त़न)

सुवाल : पैग़म्बरों और दूसरे इन्सानों में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : पैग़म्बरों और दूसरे इन्सानों में ज़मीन व आस्मान का फ़र्क़ है । नबी और रसूल, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के ख़ास और मा'सूम बन्दे होते हैं, इन की निगरानी और तरबिय्यत ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है । सग़ीरा कबीरा गुनाहों से बिल्कुल पाक होते हैं । आ़ली नसब, आ़ली ह़सब और इन्सानियत के आ'ला मर्तबे पर पहुंचे हुवे, ख़ूब सूरत, नेक सीरत, इ़बादत गुज़ार, परहेज़गार, तमाम अख़्लाक़े ह़सना (नेक आ़दात) से आरास्ता और हर क़िस्म की बुराई से दूर रहने वाले, इन्हें अ़क़्ले कामिल अ़त़ा की जाती है जो औरों की अ़क़्ल से ब दरजहा ज़ाइद है, किसी ह़कीम और किसी फ़ल्सफ़ी की अ़क़्ल, किसी साइन्स दान की फ़हम व फ़िरासत इस के लाखवें ह़िस्से तक भी नहीं पहुंच सकती और क्यूं न हो कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे बन्दे और उस के मह़बूब होते हैं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इन्हें हर ऐसी बात से दूर रखता है जो बाइ़से नफ़रत हो । इसी लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों का बरस (सफ़ेद दाग़), जुज़ाम (कोढ़) वग़ैरा हर ऐसी बीमारी से पाक होना ज़रूरी है जिस से लोग घिन करें ।

(हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 53)

सुवाल : क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को भी इ़ल्मे ग़ैब होता है ?

www.dawateislami.net

जवाब : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ग़ैब की ख़बरें देने के लिये ही आते हैं। हिसाब किताब, जन्नत व दोज़ख़, सवाब अ़ज़ाब, हश्रो नश्र, फ़िरिश्ते वग़ैरा ग़ैब नहीं तो और क्या हैं ? येह वोही बातें बताते हैं जिन तक अ़क़्ल नहीं पहुंचती मगर येह इल्मे ग़ैब जो कि इन को हासिल है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दिये से है, लिहाज़ा इन का इल्म अ़ताई (ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का अ़ता कर्दा) हुवा।

(हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 54)

सुवाल : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ के दरबार में नबी का क्या मर्तबा है ? और जो किसी नबी की इ़ज़्ज़त न करे वोह कौन है ?

जवाब : तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में बड़ी इ़ज़्ज़त व वजाहत हासिल है। अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام तमाम मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल व आ'ला, बुलन्दो बाला होते हैं, फ़िरिश्तों में भी इन के मर्तबे का कोई नहीं और बड़े से बड़ा वली भी इन के बराबर नहीं हो सकता। तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ता'ज़ीम करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, बल्कि दूसरे तमाम फ़राइज़ से बढ़ कर है, जो शख़्स किसी नबी की शान में कोई ऐसी वैसी बात निकाले जिस से इन की तौहीन होती हो, (ख़्वाह किसी भी पहलू से हो) तो ऐसा करने वाला काफ़िर है। (हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 54)

सुवाल : क्या इबादत के ज़रीए कोई शख़्स नबुव्वत का दरजा पा सकता है ? नीज़ क्या जिन्न व फ़िरिश्ते में नबी होते हैं ?

जवाब : हरगिज़ नहीं ! नबुव्वत बहुत बड़ा मर्तबा है, कोई भी शख़्स इबादत के ज़रीए इसे हासिल कर ही नहीं सकता, चाहे उ़म्र भर रोज़ादार रहे, सारी ज़िन्दगी नमाज़ में गुज़ार दे, सारा माल व दौलत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की राह में क़ुरबान कर दे मगर नबुव्वत नहीं पा सकता। क्यूंकि नबुव्वत ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का अ़तिय्या है, वोह जिसे चाहता है अपने फ़ज़्ल से देता है। हां ! देता उसी को है जिसे इस के क़ाबिल

www.dawateislami.net

बनाता है। न कोई जिन्न व फ़िरिश्ता नबी हुवा न कोई औ़रत नबी हुई।

(हमारा इस्लाम, खुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 54-55)

सुवाल : क्या नबियों और फ़िरिश्तों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिवा कोई और भी मा'सूम होता है मसलन सहाबए किराम व औलियाए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم वग़ैरा।

जवाब : नबियों और फ़िरिश्तों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के सिवा कोई भी मा'सूम नहीं, इन की त़रह़ किसी और को मा'सूम समझना गुमराही है। बेशक औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْهِم और नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَيْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की औलाद और अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم वग़ैरा में जो इमाम हैं वोह भी मा'सूम नहीं। हां ! येह और बात है कि इन्हें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने करम से गुनाहों से बचाता है। इन से गुनाह नहीं होते, मगर हो तो ना मुमकिन भी नहीं।

(हमारा इस्लाम, खुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 55)

सुवाल : क्या नबी किसी हुक्मे खुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ को छुपा भी लेते हैं ?

जवाब : नहीं ! **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर बन्दों के लिये जितने भी अह़काम नाज़िल फ़रमाए उन्हों ने वोह सब पहुंचा दिये। अब जो कहे कि किसी हुक्म को किसी नबी ने छुपाए रखा या'नी ख़ौफ़ की वज्ह से या किसी और वज्ह से न पहुंचाया, तो ऐसा कहने वाला काफ़िर है।

(हमारा इस्लाम, खुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 55)

सुवाल : जो नबी विसाल फ़रमा चुके हैं उन्हें मुर्दा कह सकते हैं या नहीं ?

जवाब : तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपने अपने मज़ारात में वैसे ही ज़िन्दा हैं जैसे इस दुन्या में थे, खाते-पीते हैं और जहां चाहें आते-जाते हैं। एक आन के लिये इन पर (इन से फ़ैज़ लेने के लिये) मौत आई फिर ब दस्तूर ज़िन्दा हो गए।

(हमारा इस्लाम, खुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, हिस्सा : 2, स. 55)

www.dawateislami.net

अम्बिया को भी अजल आनी है मगर ऐसी कि फ़क़त आनी है
फिर उसी आन के बा'द उन की ह़यात मिस्ले साबिक़ वोही जिस्मानी है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 2, स. 267)

सुवाल : दुन्या में आने वाले सब से पहले और सब से आख़िरी नबी कौन हैं ?

जवाब : दुन्या में आने वाले सब से पहले नबी ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं। इन से पहले इन्सान मौजूद न था, सब इन्सान इन्हीं की औलाद हैं इसी लिये "आदमी" कहलाते हैं, या'नी औलादे आदम और ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام को "अबुल बशर" कहते हैं, या'नी सब इन्सानों के बाप और सब से आख़िरी नबी जो तमाम जहान की हिदायत व रहनुमाई के लिये तशरीफ़ लाए, वोह हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म, हमारे प्यारे नबी, ह़ज़रत **मुह़म्मद** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने नबुव्वत का सिलसिला हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर ख़त्म फ़रमा दिया या'नी हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़माने में या बा'द कोई नया नबी नहीं आ सकता। (हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, ह़िस्सा : 2, स. 56)

सुवाल : सब से पहले रसूल कौन हैं ?

जवाब : सब से पहले रसूल जो काफ़िरों की हिदायत के लिये भेजे गए, ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام हैं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने साढ़े नौ सो बरस तक तब्लीग़ फ़रमाई, मगर चूंकि आप عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने के काफ़िर बहुत सख़्त दिल और गुस्ताख़ थे, अपनी ह़रकतों से बाज़ न आए। आख़िरे कार आप عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ़ फ़रमाई, तूफ़ान आया और सारी ज़मीन डूब गई। सिर्फ़ गिनती के वोह मुसलमान और हर जानवर का एक एक जोड़ा जो आप عَلَيْهِ السَّلَام के साथ किश्ती में था बच गए बाक़ी सब हलाक हो गए।

(हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, ह़िस्सा : 2, स. 56)

www.dawateislami.net

सुवाल : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام मर्तबे में बराबर हैं या कमो बेश ?

जवाब : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के मुख़्तलिफ़ दरजे हैं। बा'ज़ों के रुत्बे बा'ज़ों से आ'ला हैं और सब में अफ़्ज़लो आ'ला, रुत्बे में सब से बुलन्दो बाला, हमारे आक़ा व मौला ह़ज़रते सय्यिदुना **मुह़म्मद** मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हैं, इसी लिये आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को सय्यिदुल अम्बिया कहा जाता है या'नी सारे नबियों के सरदार, सब के सर के ताज, साह़िबे मे'राज صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم। हुज़ूर वालिये हर दो आ़लम, शहनशाहे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द सब से बड़ा मर्तबा ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام का है, फिर सय्यिदुना ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फिर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَيْهِ السَّلَام का। येह ह़ज़रते वाला शान عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की सारी मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल हैं यहां तक कि फ़िरिश्तों से भी।

(हमारा इस्लाम, ख़ुदा के रसूल व नबी عَلَيْهِمُ السَّلَام, ह़िस्सा : 2, स. 56-57)

लोगों से सुवाल न करने की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से मरवी है कि हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम, शाफ़ेए उमम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जो शख़्स मुझे इस बात की ज़मानत दे कि लोगों से कोई चीज़ न मांगे, तो मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूं।" ह़ज़रते सय्यिदुना सौबान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ अ़र्ज़ गुज़ार हुवे कि मैं इस बात की ज़मानत देता हूं। चुनान्चे वोह किसी से कुछ नहीं मांगा करते थे।

(سنن ابی داوٗد، ج۲، ص۱۷۰ حدیث:۱۶۴۳)

www.dawateislami.net

क़ुरआने करीम

सुवाल : कुरआने मजीद क्या है और येह किस लिये आया और किस ज़बान में नाज़िल हुवा ?

जवाब : कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है जो उस ने अपने सब से अफ़्ज़ल रसूल, रसूले मक़्बूल, बीबी आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के गुलशन के महकते फूल ह़ज़रत **मुह़म्मद** मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर नाज़िल फ़रमाया, इस में जो कुछ भी लिखा है उस पर ईमान लाना ज़रूरी है । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने बन्दों की सह़ीह़ रहनुमाई के लिये इसे नाज़िल फ़रमाया, ताकि बन्दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जानें, ख़ुदा और रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के अह़काम को पहचानें और इन की मरज़ी के मुवाफ़िक़ काम करें और उन तमाम कामों से बचें जो ख़ुदा और रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم को पसन्द नहीं । कुरआने मजीद अ़रबी ज़बान में नाज़िल हुवा । (हमारा इस्लाम, कुरआने मजीद, ह़िस्सा : 1, स. 20-22 व हमारा इस्लाम, कुतुबे समावी, ह़िस्सा : 3, स. 99)

सुवाल : येह कैसे मा'लूम हो कि कुरआने मजीद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का कलाम है ? और क्या सह़ीह़ कुरआन शरीफ़ आज कल मिलता है ?

जवाब : कुरआने मजीद, किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ होने पर अपने आप दलील है, चुनान्चे ख़ुद ए'लान फ़रमा रहा है कि "और अगर तुम्हें कुछ शक हो इस में जो हम ने अपने ख़ास बन्दे पर उतारा, तो इस जैसी एक सूरत तो ले आओ ।" (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान پ۱، البقرۃ:۲۳) काफ़िरों ने इस के मुक़ाबले में जी तोड़ कोशिशें कीं मगर इस की मिस्ल सूरत तो क्या एक आयत तक न बना सके और न बना सकेंगे । اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुरआन शरीफ़ हर जगह सह़ीह़ ह़ालत में मिलता है, इस में एक ह़र्फ़ का भी फ़र्क़ नहीं हो सकता इस लिये कि इस का निगहबान ख़ुद **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है । (हमारा इस्लाम, कुरआने मजीद, ह़िस्सा : 1, स. 20-22)

www.dawateislami.net

सुवाल : कुरआने अ़ज़ीम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने क्या ख़ास बात रखी है और इस को पढ़ने में कितना सवाब है ?

जवाब : वोह ख़ास बात येह है कि अगली किताबें सिर्फ़ अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ही को याद होतीं, लेकिन येह कुरआने अ़ज़ीम का मो'जिज़ा है कि मुसलमानों का बच्चा बच्चा इसे याद कर लेता है। नीज़ हमारे हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, आक़ाए उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जो शख़्स किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ का एक ह़र्फ़ पढ़ेगा उसे एक नेकी मिलेगी, जो दस नेकियों के बराबर होगी, मैं येह नहीं कहता कि الٓمٓ एक ह़र्फ़ है, बल्कि ا एक ह़र्फ़ है, ل दूसरा ह़र्फ़ और م तीसरा ह़र्फ़ है।

(سنن الترمذی، کتاب فضائل القرآن،باب ما جاء فی من قرء حرفا من القران...الخ، الحدیث:۲۹۱۹،ج٤،ص٤١٧ وهمارا اسلام ، قرآن مجید،حصه١، ص٢١ملتقطاً)

सुवाल : जिस तरतीब पर आज कुरआन मौजूद है, क्या ऐसा ही नाज़िल हुवा था ? अगर नहीं तो फिर इस की मौजूदा तरतीब किस त़रह़ अ़मल में आई ?

जवाब : नुज़ूले वह़ी के वक़्त येह तरतीब न थी जो आज है। कुरआने मजीद तेईस बरस की मुद्दत में थोड़ा थोड़ा ह़स्बे ह़ाजत नाज़िल हुवा। जिस हुक्म की ह़ाजत होती उसी के मुत़ाबिक़ सूरत या कोई आयत नाज़िल हो जाती, इस त़रह़ कुरआने अ़ज़ीम मुतफ़र्रिक़ आयतें हो कर उतरा। किसी सूरत की कुछ आयतें उतरतीं फिर दूसरी सूरत की आयतें आतीं, फिर पहली सूरत की कुछ आयतें नाज़िल होतीं, ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام उस का मक़ाम भी बता देते और हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم हर बार इरशाद फ़रमा देते कि येह आयात फ़ुलां सूरत की हैं, फ़ुलां आयत के बा'द या फ़ुलां आयत से पहले रखी जाएं। इस त़रह़ कुरआने अ़ज़ीम की सूरतें अपनी अपनी आयतों के साथ जम्अ़ हो जातीं और ख़ुद हुज़ूरे

www.dawateislami.net

अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इसी तरतीब से उसे नमाज़ों वग़ैरा में तिलावत फ़रमाते, फिर आं ह़ज़रत صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से सुन कर सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم याद कर लेते। ग़रज़ क़ुरआने अ़ज़ीम की तरतीब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام के बयान के मुत़ाबिक़ और लौह़े मह़फ़ूज़ की तरतीब के मुवाफ़िक़ ख़ुद आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़मानए अक़्दस में वाक़ेअ़ हुई थी।

(हमारा इस्लाम, कुतुबे समावी, ह़िस्सा : 3, स. 100-101)

सुवाल : मक्की और मदनी सूरतों का क्या मत़लब है और इन के मज़मून में क्या फ़र्क़ है ?

जवाब : जो सूरतें मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में और इस के अत़राफ़ में नाज़िल हुईं उन को मक्की कहते हैं और जो मदीनए मुनव्वरा और इस के क़ुर्बो जवार में नाज़िल हुईं उन को मदनी कहते हैं, मज़ामीन के ए'तिबार से मक्की और मदनी सूरतों में येह फ़र्क़ पाया जाता है कि मक्की सूरतों में उ़मूमन उसूली अ़क़ाइद या'नी तौह़ीद व रिसालत और ह़श्रो नश्र वग़ैरा का बयान है जब कि मदनी सूरतों में आ'माल का ज़िक्र है मसलन वोह अह़काम जिन से अख़्लाक़ दुरुस्त हों और मख़्लूक़ के साथ ज़िन्दगी बसर करने का त़रीक़ा मा'लूम हो वग़ैरा।

(हमारा इस्लाम, कुतुबे समावी, ह़िस्सा : 3, स. 101)

सुवाल : क़ुरआन पढ़ने के आदाब क्या हैं और जब क़ुरआन पढ़ने के क़ाबिल न रहे तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : क़ुरआने पाक की तिलावत पाक जगह की जाए और अगर मस्जिद में हो तो ज़ियादा बेहतर है। तिलावत करने वाले को चाहिये कि क़िब्ला रू बैठे और निहायत आ़जिज़ी और इन्किसारी से सर झुका कर इत़मीनान से ठहर ठहर कर पढ़े, पढ़ने से पहले मुंह को ख़ूब अच्छी त़रह़ साफ़ कर ले कि बदबू बाक़ी न रहे। क़ुरआन शरीफ़ को ऊंचे तक्ये या रेह़ल पर रखे, और तिलावत से पहले اَعُوْذُ بِاللّٰه और بِسْمِ اللّٰه पढ़ ले, बिला

www.dawateislami.net

वुज़ू कुरआन को हाथ न लगाना चाहिये क्यूंकि ऐसा करना गुनाह है, सुनने वाला ख़ामोशी से दिल लगा कर सुने। फिर जब कुरआने पाक पुराना बोसीदा हो जाए और इस के वरक़ इधर उधर हो जाने का ख़ौफ़ हो और तिलावत के क़ाबिल न रहे तो किसी पाक कपड़े में लपेट कर ऐसी जगह एह़तियात़ से दफ़्न कर दिया जाए जहां किसी का पैर न पड़े। दफ़्न करने में लह़द बनाई जाए ताकि इस पर मिट्टी न पड़े।

(हमारा इस्लाम, कुरआने मजीद, ह़िस्सा : 1, स. 21-22)

सुवाल : कुरआन के इ़लावा और कौन कौन सी आस्मानी किताबें हैं? वोह किन ज़बानों में नाज़िल हुईं, नीज़ क्या उन के अह़कामात पर अब अ़मल कर सकते हैं या नहीं?

जवाब : आस्मानी किताबों को कुतुबे समावी कहते हैं, या'नी वोह सह़ीफ़े और किताबें जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मख़्लूक़ की रहनुमाई के लिये अपने नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام पर नाज़िल फ़रमाईं। येह सब कलामुल्लाह عَزَّوَجَلَّ हैं और ह़क़ हैं, इन में जो कुछ इरशाद हुवा, सब पर ईमान रखना ज़रूरी है, तौरात और ज़बूर इ़बरानी ज़बान में जब कि इन्जील सुरयानी ज़बान में नाज़िल हुईं। चूंकि यहूदो नसारा ने इन में अपनी ख़्वाहिश से घटा बढ़ा दिया है, इस लिये येह किताबें जैसी नाज़िल हुईं थीं वैसी मिलती ही नहीं, लिहाज़ा अब इन किताबों के अह़कामात पर अ़मल नहीं किया जाएगा, फिर दूसरी बात येह कि कुरआने करीम ने इन किताबों के बहुत से अह़कामात मन्सूख़ कर दिये हैं, लिहाज़ा अगर येह फ़र्ज़ कर भी लिया जाए कि सह़ीह़ तौरात व इन्जील इस वक़्त भी मौजूद हैं तब भी इन किताबों की ज़रूरत बाक़ी नहीं रहती क्यूंकि कुरआन में वोह सब कुछ है जिस की ह़ाजत बनी आदम को होती है।

(हमारा इस्लाम, कुतुबे समावी, ह़िस्सा : 3, स. 99-100 मुल्तक़त़न)

सुवाल : तो क्या कुरआने मजीद में कमी बेशी नहीं हो सकती? और जिस का येह अ़क़ीदा हो कि कुरआने पाक में कमी बेशी जाइज़ है वोह कौन है?

www.dawateislami.net

जवाब : कुरआने मजीद में कमी बेशी ना मुमकिन है, चूंकि येह दीन हमेशा बाक़ी रहने वाला है, लिहाज़ा कुरआन शरीफ़ की हिफ़ाज़त **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपने ज़िम्मे रखी है, इसी लिये इस में किसी हर्फ़ या नुक़्ते की भी कमी बेशी नहीं हो सकती और न कोई अपनी ख़्वाहिश से इस में घटा बढ़ा सकता है अगर्चे तमाम दुन्या इस के बदलने पर जम्अ़ हो जाए। और जो येह कहे कि कुरआन शरीफ़ का एक भी हर्फ़ किसी ने कम कर दिया या बढ़ा दिया या बदल दिया वोह क़त्अ़न काफ़िर और दाइरए इस्लाम से ख़ारिज है।

(हमारा इस्लाम, आस्मानी किताबें, हिस्सा : 2, स. 51)

सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم اَجۡمَعِیۡن

सुवाल : सह़ाबी किसे कहते हैं नीज़ मुहाजिर और अन्सार से कौन लोग मुराद हैं ?

जवाब : जिस ने ईमान की ह़ालत में नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम, साहिबे वज्हे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को देखा हो और ईमान पर उस की वफ़ात हुई हो, उसे सह़ाबी कहते हैं। इन ही में मुहाजिर व अन्सार हैं। या'नी जो सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत में अपना घर बार छोड़ कर मदीनए त़य्यिबा हिजरत कर गए थे उन्हें मुहाजिरीन सह़ाबा कहा जाता है, जब कि मदीनए मुनव्वरा के वोह सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم जिन्हों ने रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और मुहाजिरीने किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم की मदद व नुस्रत की, वोह अन्सार कहलाते हैं।

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم, हिस्सा : 3, स. 109)

सुवाल : सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم के मुतअ़ल्लिक़ हमारा क्या अ़क़ीदा होना चाहिये ?

जवाब : तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم, आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, ताजदारे अ़रबो अ़जम

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जां निसार और सच्चे गुलाम हैं। इन का जब भी ज़िक्र किया जाए तो ख़ैर ही के साथ करना फ़र्ज़ है। तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जन्नती हैं, वोह जहन्नम की भनक न सुनेंगे। और हमेशा हमेशा अपनी मन मानती मुरादों में रहेंगे क़ियामत की सब से बड़ी घबराहट उन्हें ग़मगीन न करेगी फ़िरिश्ते उन का इस्तिक़्बाल करेंगे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हर सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की येह शान क़ुरआने अ़ज़ीम इरशाद फ़रमाता है। लिहाज़ा सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में से किसी की किसी बात पर गिरिफ़्त करना **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم के ख़िलाफ़ है और कोई वली कितने ही बड़े मर्तबे का हो किसी सह़ाबी के रुत्बे को नहीं पहुंच सकता। इन में से किसी की शान में गुस्ताख़ी करना या किसी के साथ बद अ़क़ीदगी रखना, गुमराही है और ऐसा शख़्स जहन्नम का मुस्तह़िक़ है।

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, ह़िस्सा : 3, स. 109)

सुवाल : तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم में अफ़्ज़ल कौन से सह़ाबा हैं ?

जवाब : अम्बियाओ मुर्सलीन علیہم الصلوٰۃ والتسلیم के बा'द ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की सारी मख़्लूक़ से अफ़्ज़ल ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर हैं, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم येह ह़ज़रात रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़लीफ़ा हुवे। इन ख़ुलफ़ाए अ़रबआ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़, ह़ज़रते सय्यिदुना सा'द बिन अबी वक़्क़ास, ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को फ़ज़ीलत ह़ासिल है। चुनान्चे, चार ख़ुलफ़ा और छे येह मुअ़ज़्ज़ज़ ह़स्तियां मिल कर दस हुवे, इन ही को "अ़श्रए मुबश्शरा" कहा जाता है, या'नी वोह दस अफ़राद जिन के जन्नती होने की बिशारत रह़मते आ़लमिय्यान, नबिय्ये ग़ैबदान,

www.dawateislami.net

सरवरे कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुन्या ही में दे दी थी, लिहाज़ा येह तमाम नुफ़ूसे कुदसिय्यह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم क़त्ई जन्नती हैं।

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم, हिस्सा : 3, स. 110-111 मुल्तक़त़न)

सुवाल : ख़लीफ़ा होने का क्या मत़लब है ?

जवाब : नबिय्ये रह़मत, आक़ाए उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का ऐसा क़ाइम मक़ाम, जो मुसलमानों के तमाम दीनी और दुन्यवी कामों को शरीअ़त मुत़ह्हरा के मुवाफ़िक़ अन्जाम दे और जाइज़ कामों में उस की फ़रमां बरदारी करना मुसलमानों पर फ़र्ज़ हो, उसे ख़लीफ़ए रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم कहते हैं । हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द तमाम मुसलमानों के इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़लीफ़ए बरह़क़ हुवे।

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم, हिस्सा : 3, स. 110)

सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया कौन हैं ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ भी सह़ाबी हैं और शाहाने इस्लाम में सब से पहले बादशाह, इसी की त़रफ़ तौराते मुक़द्दस में इशारा है कि वोह नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान (صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم) मक्के में पैदा होगा और मदीने को हिजरत फ़रमाएगा और उस की सल्त़नत शाम में होगी तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की बादशाही अगर्चे सल्त़नत है, मगर किस की ? मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की। ख़ुद सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने ख़िलाफ़त सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के सिपुर्द फ़रमा दी थी और उन के दस्ते मुबारक पर बैअ़त फ़रमा ली थी । लिहाज़ा उन की या उन के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुफ़्यान या वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना हिन्दा (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم) की शान में गुस्ताख़ी करना सख़्त बे अदबी और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को ईज़ा देना है, इस लिये कि येह सब सह़ाबा हैं।

(बहारे शरीअ़त, इमामत का बयान, हिस्सए अव्वल, स. 258 व हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم, हिस्सा : 3, स. 111)

www.dawateislami.net

सुवाल : ताबेईन किन लोगों को कहा जाता है ?

जवाब : हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मते मर्हूमा के वोह मुसलमान जो सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सोह़बत में रहे, उन्हें ताबेईन कहा जाता है और वोह मुसलमान जो इन ताबेईन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم की सोह़बत में रहे वोह तबए ताबेईन कहलाते हैं । सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم के बा'द तमाम उम्मत से ताबेईन अफ़्ज़ल व बेहतर हैं और इन के बा'द तबए ताबेईन का मर्तबा है । (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِیْن)

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم, ह़िस्सा : 3, स. 112)

ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِیْن

सुवाल : ख़ुलफ़ाए राशिदीन किन ह़ज़रात को कहा जाता है ?

जवाब : सुल्त़ाने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बा'द तमाम मुसलमानों के इत्तिफ़ाक़ से ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़लीफ़ए बरह़क़ हुवे । इसी लिये आप ख़लीफ़ए अव्वल कहलाते हैं । आप के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ दूसरे ख़लीफ़ा हुवे । और आप की शहादत के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ तीसरे ख़लीफ़ा हुवे । फिर आप के बा'द ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए काइनात मौला अ़ली मुश्किल कुशा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ चौथे ख़लीफ़ा हुवे । फिर छे महीने के लिये ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ख़लीफ़ा हुवे । इन तमाम ह़ज़रात को **ख़ुलफ़ाए राशिदीन** और इन की ख़िलाफ़त को **ख़िलाफ़ते राशिदा** कहते हैं, क्यूंकि इन्हों ने हुज़ूर आक़ाए दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, ताजदारे अ़रबो अ़जम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सच्ची नियाबत (नाइब होने) का पूरा ह़क़ अदा फ़रमा दिया । (رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِیْن)

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم ह़िस्सा : 3, स. 110)

www.dawateislami.net

सुवाल : ख़िलाफ़ते राशिदा कब तक रही ?

जवाब : ख़िलाफ़ते राशिदा तीस बरस तक रही, जैसा कि ख़ुद हुज़ूर पुर नूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुबारक है । येह ख़िलाफ़ते राशिदा ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के छे महीने पर ख़त्म हो गई । फिर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त, ख़िलाफ़ते राशिदा हुई और आख़िर ज़माने में ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़लीफ़ा होंगे, आप की ख़िलाफ़त भी ख़िलाफ़ते राशिदा कहलाएगी ।

(हमारा इस्लाम, सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, ह़िस्सा : 3, स. 112)

सुवाल : जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को पहले तीन ख़ुलफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से अफ़्ज़ल कहे वोह कौन है ?

जवाब : जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ या ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से अफ़्ज़ल बताए वोह गुमराह, बद मज़हब और जमाअ़ते अहले सुन्नत से ख़ारिज है ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली फ़रमाते हैं कि जो मुझे अबू बक्र व उ़मर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) से अफ़्ज़ल बताए, वोह मेरे और तमाम अस्ह़ाबे रसूल (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم) का मुन्किर होगा और जो मुझे अबू बक्र व उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अफ़्ज़ल कहेगा मैं उसे दर्दनाक कोड़े लगाऊंगा बेशक रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बा'द सब आदमियों से अफ़्ज़ल अबू बक्र हैं फिर उ़मर फिर उ़स्मान । (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم)

جمع الجوامع للسیوطی،مسند علی بن ابی طالب رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ،الحدیث: ۷۸۰۰،ج۱۳،ص۳۸٦ والصواعق المحرقۃ،الباب الثالث فی بیان افضلیۃ ابی بکر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ...الخ،الفصل الثانی فی ذکر فضائل ابی بکر رضی اللّٰہ تعالٰی عنہ...الخ،ص٦۸ وھمارا اسلام، خلفائے راشدین رضی اللّٰہ تعالٰی عنھم ،حصہ٤،ص۱۸٦)

सुवाल : जो शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर, ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म, ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को ख़लीफ़ा न माने वोह कौन है ?

www.dawateislami.net

जवाब : इन ख़ुलफ़ाए सलासा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की ख़िलाफ़तों पर तमाम सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم का इत्तिफ़ाक़ व इजमाअ़ है । नबिय्ये रह़मत, आक़ाए उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सारी उम्मते मुस्लिमा, इन ह़ज़रात को प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का ख़लीफ़ा तस्लीम करती चली आ रही है, ख़ुद ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन व इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم ने इन की ख़िलाफ़तें तस्लीम कीं, और इन के हाथ पर बैअ़त भी फ़रमाई और इन के फ़ज़ाइल भी बयान फ़रमाए। लिहाज़ा जो शख़्स इन की ख़िलाफ़तों को तस्लीम न करे या इन की ख़िलाफ़त को ख़िलाफ़ते ग़ासिबा (ज़बर दस्ती की छीनी हुई ख़िलाफ़त) कहे वोह गुमराह, बद दीन है, बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا की ख़िलाफ़त तो दलाइले क़त़इ़य्या से साबित है । लिहाज़ा इन की ख़िलाफ़त का इन्कार और इन्हें ख़लीफ़ए रसूल तस्लीम न करना कुफ़्र है।

(हमारा इस्लाम, ख़ुलफ़ाए राशिदीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, ह़िस्सा : 4, स. 187)

अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن

सुवाल : अहले बैत किन अफ़राद को कहा जाता है ? और इन के क्या क्या फ़ज़ाइल हैं ?

जवाब : हुज़ूर ताजदारे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नसब और क़राबत के लोगों को अहले बैत कहा जाता है । अहले बैत में प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की अज़्वाजे मुत़ह्हरात और ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़ातूने जन्नत बीबी फ़ातिमा ज़हरा, ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन व ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم सब दाख़िल हैं । अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने रिज्स व नापाकी को दूर फ़रमाया, इन्हें ख़ूब पाक किया और जो चीज़ इन के मर्तबे के लाइक़ नहीं, उस से इन के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ ने इन्हें महफ़ूज़ रखा । अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم पर दोज़ख़

www.dawateislami.net

की आग ह़राम की। सदक़ा इन पर ह़राम किया गया क्यूंकि सदक़ा, देने वालों का मैल होता है। अव्वल गुरौह जिस की हुज़ूर शफ़ीए महशर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं। अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की महब्बत फ़राइज़े दीन से है, और जो शख़्स इन से बुग़्ज़ रखे वोह मुनाफ़िक़ है। अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की मिसाल ह़ज़रते सय्यिदुना नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की किश्ती की त़रह़ है कि जो इस में सुवार हुवा उस ने नजात पाई और जो इस से कतराया, हलाक व बरबाद हुवा। अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की वोह मज़्बूत रस्सी हैं जिसे मज़्बूती से थामने का हमें हुक्म मिला है। चुनान्चे, एक ह़दीस शरीफ़ है कि आक़ाए मुअ़ज़्ज़म, ताजदारे अ़रबो अ़जम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है कि "मैं तुम में दो चीज़ें छोड़ता हूं जब तक तुम इन्हें न छोड़ोगे हरगिज़ गुमराह न होगे, एक किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और एक मेरी आल। (سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب اهل بیت النبی، الحدیث: ۳۸۱۱، ج۵، ص۴۳۳)

इसी त़रह़ एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया कि अपनी औलाद को तीन ख़स्लतें सिखाओ :

﴿1﴾ अपने नबी صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की महब्बत ﴿2﴾ अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की महब्बत और ﴿3﴾ क़ुरआने पाक की क़िराअत। (الجامع الصغیر، حرف الهمزه، الحدیث ۳۱۱، ج۱، ص۲۵)

ग़रज़ येह कि अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के फ़ज़ाइल बे शुमार हैं। अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि रसूलुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इरशाद फ़रमाया : जो मेरी इतरत (अहले बैत) व अन्सार और अ़रब का ह़क़ न पहचाने वोह तीन ह़ाल से ख़ाली नहीं या तो मुनाफ़िक़ है या ह़रामी या हैज़ी बच्चा।

(شعب الایمان، باب فی تعظیم النبی...الخ، فصل فی الصلاة علی النبی، الحدیث: ۱۶۱۴، ج۲، ص۲۳۲ व हमारा इस्लाम, अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, ह़िस्सा : 3, स. 113)

www.dawateislami.net

सुवाल : अज़्वाजे मुत़ह्हरात رضی الله تعالیٰ عنهن का क्या मर्तबा है ?

जवाब : कुरआने मजीद से साबित है कि नबिय्ये करीम, साहिबे कौसरो तस्नीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم की मुक़द्दस बीबियां رضی الله تعالیٰ عنهن मर्तबे में सब से ज़ियादा हैं और इन का अज्र सब से बढ़ कर है। दुन्या जहान की औ़रतों में कोई इन की हमसर और हम मर्तबा नहीं। अगर किसी को एक नेकी पर दस गुना सवाब मिले तो इन्हें बीस गुना, क्यूंकि इन के अ़मल में दो जिहतें हैं, एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बन्दगी और इत़ाअ़त और दूसरे नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाजूई व इत़ाअ़त, लिहाज़ा इन्हें औरों से दुगना सवाब मिलेगा।

(हमारा इस्लाम, अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, हिस्सा : 3, स. 113)

उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا पर एक बार ख़ौफ़ व ख़शिय्यत का ग़लबा था, आप गिर्या व ज़ारी फ़रमा रही थीं, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا ने अ़र्ज़ किया : या उम्मल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ! क्या आप येह गुमान रखती हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जहन्नम की एक चिंगारी को मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का जोड़ा बनाया, उम्मुल मोमिनीन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने फ़रमाया : فرجت عنی فرج اللّٰه عنك तुम ने मेरा ग़म दूर किया **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारा ग़म दूर करे।

(الآثار لابی یوسف، باب الغزو والجیش،فوالله لرسول الله اکرم علی الله من ان یزوجه جمرة، الحدیث:۹۲۵، ج۲، ص۴۵۹، المکتبة الشاملة)

सुवाल : पन्जतन पाक किन ह़ज़रात को कहा जाता है ?

जवाब : पन्जतन पाक से मुराद ह़ुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم, ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए काइनात मौला अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ात़िमा ज़हरा, ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन और ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़ुसैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم हैं।

(हमारा इस्लाम, अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, हिस्सा : 3, स. 113)

www.dawateislami.net

सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا के फ़ज़ाइल क्या हैं ?

जवाब : हुज़ूर सुल्त़ाने मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का इरशादे बा क़रीना है कि मैं ने अपनी बेटी का नाम **फ़ातिमा** इस लिये रखा कि **अल्लाह** तआ़ला ने इस को और इस के साथ मह़ब्बत रखने वालों को दोज़ख़ से ख़लासी अ़त़ा फ़रमाई ।

(فردوس الاخبار للدیلمی،باب الالف،الحدیث:۱۳۹۵،ج۱،ص۲۰۳)

एक ह़दीस में है कि ह़ज़रते फ़ातिमा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا पाक दामन हैं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन पर और इन की औलाद पर दोज़ख़ को ह़राम फ़रमाया है ।

(المعجم الکبیر للطبرانی،ومن مناقب فاطمة رضی الله عنها الحدیث: ۱۰۱۸،ج۲۲،ص۴۰۷)

एक और ह़दीस शरीफ़ में है कि : फ़ातिमा मेरा जुज़्व है, जो इन्हें ना गवार, वोह मुझे ना गवार, और जो इन्हें पसन्द वोह मुझे पसन्द । (المستدرك علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة، باب دعاء دفع الفقراء واداء الدین،الحدیث:۴۸۰۱،ج۴،ص۱۴۴)

इसी त़रह़ एक और ह़दीसे पाक में है कि रह़मत वाले आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ऐ फ़ातिमा ! तुम्हारे ग़ज़ब से ग़ज़बे इलाही عَزَّ وَجَلَّ होता है और तुम्हारी रिज़ा से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ राज़ी ।

(المستدرك علی الصحیحین، کتاب معرفة الصحابة،نداء یوم المحشر غضوا ابصارکم...الخ،الحدیث:۴۷۸۳،ج۴،ص۱۳۷)

और फ़रमाया : मुझे अपने अहले बैत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم में सब से ज़ियादा प्यारी फ़ातिमा है ।

(المستدرك علی الصحیحین، کتاب التفسیر،تفسیر سورة احزاب،باب احب اهلی الی فاطمة،الحدیث:۳۶۱۵،ج۳،ص۱۹۲)

www.dawateislami.net

एक मक़ाम पर फ़रमाया "ऐ फ़ातिमा ! क्या तुम इस पर राज़ी नहीं हो कि तुम ईमान वाली औ़रतों की सरदार हो।"

(المصنف لابن ابی شیبة، کتاب الفضائل،باب ما ذکر فی فضل فاطمة...الخ،الحدیث:۲، ج۷،ص۵۲۶ وهمارا اسلام،اهل بیت کرام رضی الله تعالیٰ عنهم،حصه۳،ص۱۱٤)

सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे ह़सन व ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا के क्या फ़ज़ाइल हैं ?

जवाब : हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रामीने अ़ज़मत निशान हैं कि

﴾1﴿ ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا दुन्या में मेरे दो फूल हैं।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی...الخ،الحدیث:۳۷۹۵،ج۵،ص٤۲۷)

﴾2﴿ जिस ने इन दोनों (ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا) से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने इन से अ़दावत की उस ने मुझ से अ़दावत की।

(المستدرك علی الصحیحین ، کتاب معرفة الصحابة ، باب ذکر شان الاذان ، الحدیث: ٤۸۵۲، ج٤، ص۱۶۳)

﴾3﴿ ह़सन व हुसैन رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا जन्नती जवानों के सरदार हैं।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب،باب مناقب ابی محمد الحسن بن علی...الخ،الحدیث:۳۷۹۳،ج۵،ص٤۲۶)

﴾4﴿ जिस शख़्स ने मुझ से मह़ब्बत की और इन दोनों के वालिद और वालिदा ह़ज़रते सय्यिदुना मौलाए काइनात मौला अ़ली, ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ातिमा ज़हरा رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُمَا से मह़ब्बत रखी वोह मेरे साथ जन्नत में होगा।

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب علی بن ابی طالب،الحدیث:۳۷۵٤،ج۵،ص ٤۱۰ व हमारा इस्लाम, अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہ تعَالٰی عَنۡھُم, हि़स्सा : 3, स. 115)

बे अदब गुस्ताख़ फ़िर्क़े को सुना दे ऐ ह़सन
यूं कहा करते हैं सुन्नी दास्ताने अहले बैत

(ज़ौक़े ना'त, स. 74)

www.dawateislami.net

अल ग़रज़ अहले बैते किराम عَلَيهِمُ الرِّضْوَان हम अहले सुन्नत व जमाअ़त के पेश्वा हैं। जो इन से मह़ब्बत न रखेगा वोह बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ से मर्दूद व मलऊ़न है। ह़ज़राते ह़सनैने करीमैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا यक़ीनन आ'ला दरजे के शहीदों में से हैं, इन में से किसी की शहादत का इन्कार करने वाला गुमराह बद दीन है।

(हमारा इस्लाम, अहले बैते किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم, हि़स्सा : 3, स. 115)

मो'जिज़े और करामतें

सुवाल : मो'जिज़ा किसे कहते हैं ?

जवाब : वोह अ़जीबो ग़रीब काम जो आ़दतन ना मुमकिन हैं, अगर नबुव्वत का दा'वा करने वाले से इस की ताईद में ज़ाहिर हों तो उन को मो'जिज़ा कहते हैं जैसे ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के अ़सा का सांप हो जाना, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मुर्दों को जिला देना (ज़िन्दा करना) वग़ैरा, और शहनशाहे अबरार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मो'जिज़े तो बे शुमार हैं। इन में से मे'राज शरीफ़ बहुत मशहूर मो'जिज़ा है।

(हमारा इस्लाम, मो'जिज़े और करामतें, हि़स्सा : 3, स. 119)

सुवाल : कोई नबुव्वत का झूटा दा'वा कर के मो'जिज़ा दिखा सकता है या नहीं ?

जवाब : मो'जिज़ा दर अस्ल नबी के दा'वए नबुव्वत में सच्चे होने की एक दलील है, जिस के ज़रीए़ मुन्किरों की गरदनें झुक जाती हैं और वोह सब आ़जिज़ रहते हैं। मो'जिज़ात देख कर आदमी का दिल नबी की सच्चाई का यक़ीन कर लेता है और अ़क़्ल वाले ईमान ले आते हैं।

(हमारा इस्लाम, मो'जिज़े और करामतें, हि़स्सा : 3, स. 120)

www.dawateislami.net

सुवाल : करामत किसे कहते हैं और औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم से किस क़िस्म की करामतें ज़ाहिर होती हैं ?

जवाब : औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم से जो बात ख़िलाफ़े आ़दत सादिर हो उसे करामत कहते हैं, मसलन आन की आन में मशरिक़ से मग़रिब में पहुंच जाना, पानी पर चलना, हवा में उड़ना, मुर्दा ज़िन्दा करना, मादर ज़ाद अन्धे और कोढ़ी को अच्छा कर देना वग़ैरा। लेकिन क़ुरआने मजीद की मिस्ल कोई सूरत ले आना, किसी वली से हरगिज़ मुमकिन नहीं। औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم की करामतें दर ह़क़ीक़त उन अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के मो'जिज़े हैं जिन के वोह उम्मती हैं। (हमारा इस्लाम, मो'जिज़े और करामतें, हिस्सा : 3, स. 120)

सुवाल : जिस वली से करामत ज़ाहिर न हो वोह वली है या नहीं ?

जवाब : औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم से करामात अकसर ज़ाहिर होती हैं। येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्यह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم तो अपनी विलायत और करामत को छुपाते हैं। हां ! जब हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पाते हैं तो करामत ज़ाहिर करते हैं और अगर करामत ज़ाहिर न हो तो इस का येह मत़लब नहीं कि वोह शख़्स वली या बुज़ुर्ग नहीं। औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم की येह करामतें इन की वफ़ात के बा'द भी ज़ाहिर होती हैं जिसे हर आंख वाला देखता और मानता है।

(हमारा इस्लाम, मो'जिज़े और करामतें, हिस्सा : 3, स. 120)

औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ اَجۡمَعِیۡن

सुवाल : वली किसे कहते हैं और विलायत किसे ह़ासिल होती है ?

जवाब : **अल्लाह** तआ़ला के वोह ख़ास ईमान वाले मुसलमान बन्दे जो **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की मह़ब्बत में अपनी ख़्वाहिशात को फ़ना कर देते हैं और हमेशा ख़ुदा और रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم की इत़ाअ़त व फ़रमां बरदारी में मसरूफ़

www.dawateislami.net

रहते हैं, औलियाउल्लाह कहलाते हैं । विलायत या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मुक़र्रब और मक़्बूल बन्दा होना, महज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का अ़ति़य्या है जो कि मौला करीम अपने बरगुज़ीदा बन्दों को अपने फ़ज़्लो करम से अ़ता फ़रमाता है । हां ! इबादत व रियाज़त भी कभी कभी इस का ज़रीआ़ बन जाती है । बा'ज़ों को इब्तिदाअन भी विलायत मिल जाती है ।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم, हि़स्सा : 3, स. 117)

सुवाल : क्या बे इ़ल्म आदमी भी वली बन सकता है ?

जवाब : नहीं, विलायत बे इ़ल्म को नहीं मिलती । वली के लिये इ़ल्म ज़रूरी है, ख़्वाह ज़ाहिरन ह़ासिल करे या इस मर्तबे पर पहुंचने से पहले ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का सीना खोल दे और वोह आ़लिम हो जाए । इ़ल्म के बिग़ैर आदमी वली नहीं हो सकता ।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم हि़स्सा : 3, स. 117)

सुवाल : अगर कोई शख़्स शरीअ़त पर अ़मल न करे तो क्या वोह वली बन सकता है ?

जवाब : जब तक अ़क़्ल सलामत है कोई वली कैसे ही बड़े मर्तबे का हो, अह़कामे शरीअ़त की पाबन्दी से हरगिज़ आज़ाद नहीं हो सकता और जो अपने आप को शरीअ़त से आज़ाद समझे वोह हरगिज़ वली नहीं हो सकता । जो इस के ख़िलाफ़ अ़क़ीदा रखे (शरीअ़त से आज़ाद को वली समझे) वोह गुमराह है । हां ! अगर आदमी मजज़ूब हो जाए और उस की अ़क़्ल ज़ाइल हो जाए तो उस से शरीअ़त का क़लम उठ जाता है, मगर येह भी ख़ूब समझ लीजिये कि जो ऐसा होगा वोह शरीअ़त का मुक़ाबला कभी न करेगा ।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم, हि़स्सा : 3, स. 118)

सुवाल : औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم की ख़ुसूसिय्यात क्या हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह्मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के सच्चे जा नशीन होते हैं। **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने इन्हें बड़ी ताक़तें अ़ता फ़रमाई हैं। इन से अ़जीबो ग़रीब करामतें ज़ाहिर होती हैं। इन की बरकत से **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ मख़्लूक़ की ह़ाजतें पूरी फ़रमाता है। इन की दुआ़ओं से ख़ल्के़ ख़ुदा फ़ाइदा उठाती है। इन की मह़ब्बत दीनो दुन्या की सआ़दत और ख़ुदाए अह़कमुल ह़ाकिमीन की रिज़ा का सबब है। इन के मज़ारात पर ह़ाज़िरी मुसलमान के लिये सआ़दत और बाइ़से बरकत है। इन के उ़र्स में शिर्कत करने से बरकतें ह़ासिल होती हैं।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم, ह़िस्सा : 3, स. 118)

सुवाल : औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم से मदद मांगना जाइज़ है या नाजाइज़ ?

जवाब : औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم से मदद मांगना बिला शुबा जाइज़ है। इसे इस्तिम्दाद और इस्तिआ़नत कहते हैं। येह मदद मांगने वाले की मदद फ़रमाते हैं, चाहे वोह किसी भी जाइज़ लफ़्ज़ के साथ मदद मांगे। इन को दूरो नज़्दीक से पुकारना सलफ़ सालिह़ीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم का त़रीक़ा है। (हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم, ह़िस्सा : 3, स. 118)

सुवाल : औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم की नज़्रो नियाज़ जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم को जो ईसाले सवाब किया जाता है उसे बराहे अदब नज़्रो नियाज़ कहते हैं जैसे कि बादशाहों को नज़्रें दी जाती हैं और ईसाले सवाब करना या'नी ख़ैरात, तिलावते कु़रआन शरीफ़ या ज़िक्रे इलाही, या दुरूद शरीफ़ वग़ैरा का सवाब दूसरों को बख़्श देना यक़ीनन जाइज़ बल्कि मुस्तह़ब है। सह़ीह़ अह़ादीस से येह उमूर साबित हैं। इसी लिये गुज़श्ता ज़माने से येह फ़ातिह़ा ख़्वानी

www.dawateislami.net

और ईसाले सवाब करना मुसलमानों में राइज हैं और इन में ख़ुसूसन ग्यारहवीं शरीफ़ की फ़ातिहा तो निहायत अ़ज़ीम और बा बरकत है। ग्यारहवीं शरीफ़ शहनशाहे बग़दाद, ग़ौसे समदानी, महबूबे सुब्हानी, शहबाज़े ला मकानी, क़ुत्बे रब्बानी, क़िन्दीले नूरानी, पीरे ला सानी, पीरे पीरां, मीरे मीरां, हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे पाक शैख़ अबू मुहम्मद **अ़ब्दुल क़ादिर** जीलानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नियाज़ को कहते हैं।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ, हिस्सा : 3, स. 118)

सुवाल : जो लोग औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ की नज़्रो नियाज़ से रोकते हैं वोह कैसे हैं ?

जवाब : नज़्रो नियाज़ का त़रीक़ा अह़ादीस से साबित है, तो जो इस से मन्अ़ करे वोह अह़ादीसे मुबारका का मुक़ाबला करता है और ऐसा शख़्स ज़रूर गुमराह है।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ, हिस्सा : 3, स. 119)

सुवाल : औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ के मज़ारात पर चादर चढ़ाना कैसा है ?

जवाब : बुज़ुर्गाने दीन, औलिया व सालिह़ीन رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ के मज़ारात त़य्यिबा पर ग़िलाफ़ या'नी चादर डालना जाइज़ है, और इस से मक़्सूद येह हो कि साहिबे मज़ार की वक़्अ़त अ़वाम की नज़रों में पैदा हो, और वोह भी इन का अदब करें और इन से बरकतें ह़ासिल करें।

(हमारा इस्लाम, औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ, हिस्सा : 3, स. 119)

तक़्दीरे इलाही का बयान

सुवाल : तक़्दीर से क्या मुराद है ?

जवाब : आ़लम में जो कुछ बुरा या भला होता है और बन्दे जो कुछ नेकी या बदी के काम करते हैं, वोह सब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इल्मे अज़ली के मुत़ाबिक़ होता है हर भलाई बुराई उस ने अपने इल्मे अज़ली के मुवाफ़िक़ मुक़द्दर फ़रमा दी है, सब कुछ उस के इल्म में है और उस के पास लिखा हुवा महफ़ूज़ है। इसी का नाम **तक़्दीर** है।

(हमारा इस्लाम, तक़्दीरे इलाही का बयान, हिस्सा : 5, स. 265)

www.dawateislami.net

सुवाल : क्या तक़्दीर के मुवाफ़िक़ काम करने पर आदमी मजबूर है ?

जवाब : **अल्लाह** तआ़ला आ़लिमुल ग़ैब वश्शहादह है या'नी हर ज़ाहिर और पोशीदा को जानने वाला है, उस का इ़ल्म हर शै को मुह़ीत़ है, जैसा होने वाला था और जो जैसा करने वाला था उस ने अपने इ़ल्म से जाना और वोही लिख लिया तो येह नहीं कि जैसा उस ने लिख दिया वैसा हम को करना पड़ता है बल्कि जैसा हम करने वाले थे वैसा उस ने लिख दिया। ज़ैद के ज़िम्मे बुराई लिखी इस लिये कि ज़ैद बुराई करने वाला था अगर ज़ैद भलाई करने वाला होता वोह इस के लिये भलाई लिखता तो उस के इ़ल्म या उस के लिख देने ने किसी को मजबूर नहीं कर दिया। इतना समझ लो कि **अल्लाह** तआ़ला ने आदमी को मिस्ले पथ्थर और दीगर जमादात के बे ह़िसो ह़रकत नहीं पैदा किया बल्कि उस को एक नौअ़ इख़्तियार दिया है कि एक काम चाहे करे चाहे न करे और उस के साथ ही अ़क़्ल भी दी है कि भले बुरे, नफ़्अ़ नुक़्सान को पहचान सके और हर क़िस्म के सामान और अस्बाब मुहय्या कर दिये हैं कि जब कोई काम करना चाहता है उसी क़िस्म के सामान मुहय्या हो जाते हैं, और इसी बिना पर उस से मुआख़ज़ा है। अपने आप को बिल्कुल मजबूर समझना या बिल्कुल मुख़्तार समझना दोनों ही गुमराही हैं।

(बहारे शरीअ़त, ह़िस्सा : 1, जि. 1, स. 11-19)

सुवाल : किसी अम्र की तदबीर करना तक़्दीर के ख़िलाफ़ तो नहीं ?

जवाब : जी नहीं, किसी अम्र की तदबीर करना तक़्दीर के ख़िलाफ़ नहीं है क्यूंकि दुन्या आ़लमे अस्बाब है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने अपनी ह़िक्मत से एक चीज़ को दूसरी चीज़ के लिये सबब बना दिया है, फिर इन ही अस्बाब को काम में लाना और इन्हें कस्बे फ़े'ल का ज़रीआ़ बनाना तदबीर है, और येह तदबीर करना तक़्दीर के ख़िलाफ़ नहीं बल्कि मुवाफ़िक़ है। ज़रा सोचिये ! कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से ज़ियादा तक़्दीरे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर किस का ईमान होगा, फिर भी वोह हमेशा तदबीर फ़रमाते रहे, जिस पर कुरआन भी गवाह है, मसलन

www.dawateislami.net

हज़रते सय्यिदुना दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िरहें बनाना, हज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का दस बरस तक उजरत पर हज़रते सय्यिदुना शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام की बकरियां चराना वग़ैरा वाक़िआत कुरआने करीम में मज़कूर हैं लिहाज़ा तदबीर करने को फ़ुज़ूल समझना गुमराही है और तक़्दीर को भूल कर तदबीर पर फूलना और इसी पर ए'तिमाद कर बैठना कुफ़्फ़ार की ख़स्लत है। (हमारा इस्लाम, तक़्दीरे इलाही का बयान, हिस्सा : 5, स. 266)

सुवाल : तक़्दीर का लिखा बदल सकता है या नहीं ?

जवाब : क़ज़ा (तक़्दीर) की तीन क़िस्में हैं :

﴾1﴿ **मुबरमे हक़ीक़ी :** जो इल्मे इलाही में किसी शै पर मुअ़ल्लक़ नहीं। इस की तब्दीली ना मुमकिन है अकाबिर महबूबाने ख़ुदा अगर इत्तिफ़ाक़न इस बारे में कुछ अ़र्ज़ करते हैं तो उन्हें इस ख़याल से वापस फ़रमा दिया जाता है। मलाइका क़ौमे लूत़ पर अ़ज़ाब ले कर आए। सय्यिदुना इब्राहीम ख़लीलुल्लाह على نبينا الكريم وعليه افضل الصلاة والتسليم इस में झगड़े तो उन्हें इरशाद हुवा : "ऐ इब्राहीम इस ख़याल में न पड़ो ... बेशक इन पर वोह अ़ज़ाब आने वाला है जो फिरने का नहीं।"(پ١٢، ھود:٧٦)

﴾2﴿ **मुअ़ल्लक़े महज़ :** वोह है कि सहफ़े मलाइका में किसी शै पर उस का मुअ़ल्लक़ होना ज़ाहिर फ़रमा दिया गया है। उस तक अकसर औलिया की रसाई होती है कि उन की दुआ़ से टल जाती है और

﴾3﴿ **मुअ़ल्लक़ शबीह ब मुबरम :** वोह है कि सहफ़े मलाइका में उस की ता'लीक़ मज़कूर नहीं और इल्मे इलाही में ता'लीक़ है। उस तक ख़वास अकाबिर की रसाई होती है हुज़ूर सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इसी को फ़रमाते हैं कि मैं क़ज़ाए मुबरम को रद कर देता हूं और इसी की निस्बत ह़दीस में इरशाद हुवा कि बेशक दुआ़ क़ज़ाए मुबरम को टाल देती है।

(الجامع الصغیر،الحدیث ۱۳۹۰،ص۸۶ و بہارشریعت ،عقائد متعلقہ ذات و صفات الٰہی، عقیدہ ۲۴،حصہ ۱،ج۱،ص ۱۲ـ۱۶ ملتقطاً)

www.dawateislami.net

सुवाल : कोई गुनाह करने के बा'द येह कहना कि येह मेरी तक़्दीर में लिखा था, कैसा है ?

जवाब : बुरा काम कर के तक़्दीर की निस्बत करना और मशिय्यते इलाही عَزَّوَجَلَّ का ह़वाला देना बहुत बुरी बात है, बल्कि हुक्म तो येह है कि जो अच्छा काम करे उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की जानिब से कहे और जो बुराई सरज़द हो उसे अपनी शामते नफ़्स तसव्वुर करे ।

(हमारा इस्लाम, तक़्दीरे इलाही का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 268)

सुवाल : तक़्दीरी उमूर में बह़स करना कैसा है ?

जवाब : तक़्दीर एक गहरे समन्दर की मानिन्द है जिस की गहराई तक किसी की रसाई नहीं । येह एक तारीक रास्ता है जिस से गुज़रने की कोई राह नहीं । येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का एक राज़ है जिस पर इन्सानी अ़क़्ल को दस्तरस नहीं, लिहाज़ा तक़्दीरी उमूर में हरगिज़ बह़स नहीं करनी चाहिये । (हमारा इस्लाम, तक़्दीरे इलाही, ह़िस्सा : 5, स. 268)

जन्नत में भी उ़लमा की ह़ाजत होगी

मदीने के सुल्त़ान रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है : जन्नती जन्नत में उ़लमाए किराम के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को **अल्लाह** तआ़ला के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे । **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाएगा : تَمَنَّوْا عَلَيَّ مَا شِئْتُم या'नी "मुझ से मांगो, जो चाहो ।" वोह जन्नती उ़लमा की त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से क्या मांगे ? वोह फ़रमाएंगे : येह मांगो, वोह मांगो, जैसे वोह लोग दुन्या में उ़लमाए किराम के मोह़ताज थे जन्नत में भी उन के मोह़ताज होंगे ।

(الفردوس بماثور الخطاب، ج١، ص٢٣٠، حديث: ٨٨٠
والجامع الصغير للسيوطي، ص١٣٥، حديث٢٢٣٥)

www.dawateislami.net

आ़लमे बरज़ख़

सुवाल : आ़लमे बरज़ख़ किसे कहते हैं ?

जवाब :

وَمِنۡ وَّرَآئِہِمۡ بَرۡزَخٌ اِلٰی یَوۡمِ یُبۡعَثُوۡنَ ﴿۱۰۰﴾ (پ۱۸،المؤمنون:۱۰۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और इन के आगे एक आड़ है उस दिन तक जिस में उठाए जाएंगे ।*

दुन्या व आख़िरत के दरमियान एक और आ़लम है जिसे बरज़ख़ कहते हैं । मरने के बा'द और क़ियामत से पहले तमाम इन्सान व जिन्नात को अपने अपने मर्तबे के मुत़ाबिक़ इस में रहना है । येह आ़लम इस दुन्या से बहुत बड़ा है । दुन्या के साथ बरज़ख़ को वोही निस्बत है जो मां के पेट के साथ दुन्या को है । बरज़ख़ में किसी को आराम है तो किसी को तक्लीफ़ ।

(हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, ह़िस्सा : 5, स. 275)

सुवाल : मरने के बा'द जिस्म व रूह़ में तअ़ल्लुक़ रहता है या नहीं ?

जवाब : रूह़ का तअ़ल्लुक़ मरने के बा'द भी बदने इन्सानी के साथ बाक़ी रहता है अगर्चे रूह़ बदन से जुदा हो गई मगर बदन पर जो गुज़रेगी, रूह़ ज़रूर इस से आगाह व मुतअस्सिर होगी । जिस त़रह़ इस दुन्या की ज़िन्दगी में होती है बल्कि इस से भी ज़ाइद । दुन्या में ठन्डा पानी, सर्द हवा, नर्म फ़र्श, लज़ीज़ खाना येह सब बातें जिस्म पर वारिद होती हैं मगर राह़त व लज़्ज़त रूह़ को पहुंचती है । ऐसे ही रन्ज व मुसीबत भी जिस्म ही पर वारिद होते हैं मगर इस की कुल्फ़त व अज़िय्यत रूह़ पाती है, रूह़ के लिये अपनी राह़त व अलम के अलग ख़ास अस्बाब हैं जिन से सुरूर या ग़म पैदा होता है, यूं ही येह सब ह़ालतें बरज़ख़ में हैं । (हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, ह़िस्सा : 5, स. 275)

www.dawateislami.net

सुवाल : बरज़ख़ में मय्यित पर क्या गुज़रती है ?

जवाब : बरज़ख़ में मय्यित के साथ चन्द मुआ़मलात पेश आते हैं जो येह हैं :

﴾1﴿ जब मुर्दे को क़ब्र में दफ़्न करते हैं तो उस वक़्त क़ब्र उस को दबाती है । अगर वोह मुसलमान है तो इस का दबाना ऐसा होता है जैसे मां प्यार में अपने बच्चे को दबाती है और अगर काफ़िर है तो उस को इस ज़ोर से दबाती है कि दोनों जानिब की पस्लियां एक दूसरे में पैवस्त हो जाती हैं ।

﴾2﴿ जब दफ़्न करने वाले दफ़्न कर के वापस जाते हैं तो मुर्दा उन के जूतों की आवाज़ सुनता है, उस वक़्त उस के पास हैबतनाक सूरतों वाले दो फ़िरिश्ते मुन्कर व नकीर अपने दांतों से ज़मीन चीरते हुवे आते हैं, और निहायत सख़्ती के साथ करख़्त आवाज़ में उस से सुवाल करते हैं कि तेरा रब कौन है ? तेरा दीन क्या है ? और इन के या'नी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के बारे में तू क्या कहता था ?

﴾3﴿ मुर्दा अगर मुनाफ़िक़ है तो सब सुवालों के जवाब में कहेगा, (हाए) अफ़्सोस ! मुझे तो कुछ मा'लूम नहीं, मैं लोगों को जो कहते सुनता था वोही ख़ुद भी कहता था ।

﴾4﴿ मुर्दा मुसलमान है तो जवाब देगा कि मेरा रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ है, मेरा दीन इस्लाम है और वोह तो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हैं ।

﴾5﴿ मुसलमान मय्यित की क़ब्र कुशादा कर दी जाएगी और इस के लिये जन्नत की त़रफ़ एक दरवाज़ा खोल दिया जाएगा जिस से जन्नत की ख़ुश्बू आती रहेगी, जब कि काफ़िर व मुनाफ़िक़ के लिये आग का बिछोना बिछा कर आग का लिबास पहना दिया जाएगा और उस की क़ब्र में जहन्नम की खिड़की खोल दी जाएगी और उस पर अ़ज़ाब देने के लिये फ़िरिश्ते मुक़र्रर कर दिये जाएंगे नीज़ सांप और बिच्छू उसे

www.dawateislami.net

अ़ज़ाब पहुंचाते रहेंगे। जब कि बा'ज़ मुसलमानों को उन के गुनाहों के मुताबिक़ अ़ज़ाब भी होगा, बा'ज़ के नज़्दीक ऐसे गुनाहगार मुसलमानों से जुमुआ़ की रात आते ही अ़ज़ाबे क़ब्र उठा दिया जाता है।

﴾6﴿ मुसलमान के आ'माले ह़सना अच्छी सूरतों में आ कर क़ब्र में उन का दिल लगाएंगे और काफ़िर व मुनाफ़िक़ के बुरे आ'माल कुत्ते, भेड़िये या किसी और बुरी शक्ल में आ कर उसे अ़ज़ाब पहुंचाएंगे।

﴾7﴿ मुसलमानों की रूहें ख़्वाह क़ब्र पर हों या चाहे ज़म ज़म शरीफ़ में हों या ज़मीनो आस्मान के दरमियान या आस्मानों पर या आस्मान से बुलन्द या ज़ेरे अ़र्श क़िन्दीलों में या आ'ला इल्लिय्यीन में हों, उन के लिये राहें कुशादा कर दी जाती हैं, या'नी जहां चाहती हैं आती जाती हैं आपस में मिलती हैं और एक दूसरे से अपने अ़ज़ीज़ों का ह़ाल पूछती हैं। जो कोई क़ब्र पर आए उसे देखती हैं पेहचानती हैं और उस की बात सुनती हैं।

﴾8﴿ काफ़िरों की ख़बीस रूहें मरघट वग़ैरा में क़ैद रहती हैं, उन्हें कहीं आने जाने का इख़्तियार नहीं होता मगर वोह भी ख़्वाह कहीं हो क़ब्र या मरघट पर गुज़रने वालों को देखती, पेहचानती और उन की बातें सुनती हैं।

﴾9﴿ मुर्दा सलाम का जवाब देता और कलाम भी करता है, इस के कलाम को आ़म इन्सान व जिन्नात के सिवा तमाम ह़ैवानात वग़ैरा सुनते भी हैं। (हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, ह़िस्सा : 5, स. 276)

सुवाल : अ़ज़ाब व सवाब सिर्फ़ जिस्म पर होता है या रूह़ पर भी ?

जवाब : (अ़ज़ाब व सवाब रूह़ और जिस्म दोनों पर होता है) ह़दीस में रूह़ व जिस्म दोनों के मुअ़ज़्ज़ब होने की येह मिसाल इरशाद फ़रमाई कि एक बाग़ है उस के फल खाने की मुमानअ़त है, एक लुन्जा है कि

www.dawateislami.net

पाउं नहीं रखता और आंखे है, वोह इस बाग़ के बाहर पड़ा हुवा है फलों को देखता है मगर उन तक जा नहीं सकता इतने में एक अन्धा आया इस लुन्जे ने उस से कहा : तू मुझे अपनी गर्दन पर बिठा कर ले चल, मैं तुझे रास्ता बताऊंगा इस बाग़ का मेवा हम तुम दोनों खाएंगे यूं वोह अन्धा इस लुन्जे को ले गया और मेवे खाए। दोनों में कौन सज़ा का मुस्तह़िक़ है ? दोनों ही मुस्तह़िक़ है, अन्धा उसे न ले जाता तो वोह न जा सकता और लुन्जा उसे न बताता तो वोह न देख सकता। वोह लुन्जा रूह़ है कि इदराक रखती है और अफ़्आ़ले जवारेह़ नहीं कर सकती और वोह अन्धा बदन है कि अफ़्आ़ल कर सकता है इदराक नहीं रखता, दोनों के इजतिमाअ़ से मा'सिय्यत हुई दोनों ही मुस्तह़िक़े सज़ा हैं। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

(فتاوی رضویہ، فاتحہ وایصالِ ثواب، اتیان الارواح لدیارھم بعد الرواح، ج۹، ص۶۵۸)

सुवाल : जो जिस्म क़ब्र में गल सड़ जाता है उसे कैसे अ़ज़ाब होगा ?

जवाब : रीढ़ की हड्डी में कुछ ऐसे अजज़ा होते हैं कि न किसी ख़ुर्दबीन से नज़र आ सकते हैं, न उन्हें आग जलाती है और न ही वोह गलते हैं, वोही तुख़्मे जिस्म और मौरिदे अ़ज़ाब व सवाब हैं। इन अजज़ा को "अ़ज्बुज़्ज़नब" कहते हैं। जिस्म अगर्चे सड़, गल जाए। अ़ज़ाबे क़ब्र का इन्कार करने वाला गुमराह है।

(हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, ह़िस्सा : 5, स. 278)

सुवाल : अगर मुर्दे को दफ़्न न किया जाए तो फिर उस से सुवालात कहां होंगे ?

जवाब : अगर मुर्दे को दफ़्न न किया जाए तो जहां पड़ा रह गया या फेंक दिया गया उस से वहीं सुवालात होंगे और वहीं अ़ज़ाब या सवाब होगा, ह़त्ता कि जिसे शेर खा गया तो शेर के पेट में सुवाल जवाब, अ़ज़ाब व सवाब सब वहीं होगा।

(हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, ह़िस्सा : 5, स. 278)

www.dawateislami.net

सुवाल : वोह कौन लोग हैं जिन के जिस्म क़ब्र में सलामत रहेंगे ?

जवाब : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ , उ़लमाए दीन व शुहदा, बा अ़मल हुफ़्फ़ाज़े कुरआन और वोह जो मन्सबे महब्बत पर फ़ाइज़ हैं और वोह जिस ने कभी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ना फ़रमानी न की और वोह जो कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहे, उन के बदन को मिट्टी नहीं खा सकती।

(हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, हिस्सा : 5, स. 279)

सुवाल : ज़िन्दों का ख़ैरात करना मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचाता है या नहीं ?

जवाब : नमाज़, रोज़ा, ह़ज, ज़कात, तिलावते कुरआन, सदक़ा, ज़िक्र, ज़ियारते कुबूर, ख़ैरात ग़रज़ हर क़िस्म की इबादत और हर नेक अ़मल, ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल, सब का सवाब मुर्दों को पहुंचाया जा सकता है। उन सब को सवाब पहुंचता है और पहुंचाने वाले के सवाब में भी कोई कमी न होगी बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा पूरा मिलेगा, येह नहीं कि येह सवाब थोड़ा थोड़ा कर के सब में तक़्सीम किया जाएगा बल्कि येह उम्मीद है कि इस पहुंचाने वाले के लिये उन सब के मजमूए़ के बराबर मिले। मसलन कोई नेक काम किया, जिस के सवाब में कम अज़ कम दस नेकियां मिलीं, अब इस ने दस मुर्दों को ईसाल कर दिया तो हर एक को दस दस मिलेंगी और ईसाल करने वाले को एक सौ दस। وعلیٰ هذا القیاس

ह़दीस शरीफ़ में है कि "जो शख़्स ग्यारह बार قُلْ هُوَاللّٰهُ शरीफ़ (सूरए इख़्लास) पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाएगा तो मुर्दों की गिनती के बराबर इसे सवाब मिलेगा।"

(کشف الخفاء،حرف المیم ، الحدیث:۲۶۲۹،ج۲، ص۲۵۲)

www.dawateislami.net

अगर ना बालिग़ ने अपनी किसी नेकी का सवाब मुर्दे को पहुंचाया तो ज़रूर पहुंचेगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

(हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, हिस्सा : 5, स. 279)

सुवाल : ईसाले सवाब का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : ईसाले सवाब को ता'ज़ीमन नज़्रो नियाज़ फ़ातिह़ा भी कहते हैं, इस में सूरए फ़ातिह़ा पढ़ी जाती है। इस का त़रीक़ा येह है कि सूरए फ़ातिह़ा और आयतुल कुर्सी एक एक बार, फिर तीन या सात या ग्यारह बार सूरए इख़्लास और अव्वल आख़िर तीन तीन या ज़ाइद बार दुरूद शरीफ़ पढ़े। इस के बा'द हाथ उठा कर अ़र्ज़ करे कि या इलाही (عَزَّوَجَلَّ) ! मेरे इस पढ़ने पर (अगर खाना, कपड़ा वग़ैरा भी हो तो इन का नाम भी शामिल करे और कहे कि मेरे इस पढ़ने और इन चीज़ों के देने पर) जो सवाब मुझे अ़त़ा हो, उसे मेरी त़रफ़ से फ़ुलां वलिय्युल्लाह मसलन सरकारे बग़्दाद हुज़ूरे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बारगाह में नज़्र पहुंचा और उन के आबाओ अजदाद और मशाइख़े इ़ज़ाम व औलाद व मुरीदीन और मुह़िब्बीन और मेरे मां बाप और फ़ुलां फ़ुलां और सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام से रोज़े क़ियामत तक जितने मुसलमान गुज़रे या मौजूद हैं या क़ियामत तक होंगे, सब को इस का सवाब पहुंचा। (हमारा इस्लाम, आ़लमे बरज़ख़, हिस्सा : 5, स. 280)

अ़लामाते क़ियामत का बयान

सुवाल : अ़लामाते क़ियामत से क्या मुराद है और वोह क्या हैं ?

जवाब : क़ियामत से पहले चन्द निशानियां ज़ाहिर होंगी, उन्हें अ़लामाते क़ियामत या आसारे क़ियामत कहते हैं। अ़लामाते क़ियामत की दो क़िस्में हैं :

﴿1﴾ वोह निशानियां जो हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत मुबारका से ले कर अब तक वाक़ेअ़ हो चुकी हैं और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़ुहूर तक वुक़ूअ़ में आती रहेंगी। उन्हें अ़लामाते सुग़रा कहते हैं।

www.dawateislami.net

﴾2﴿ वोह निशानियां जो ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ज़ुहूर के बा'द सूर फूंकने तक वाक़ेअ़ होंगी। येह अ़लामात यके बा'द दीगरे, पै दर पै इस त़रह़ ज़ाहिर होंगी जैसे सिल्के मरवारीद से मोती गिरते हैं। इन के ख़त्म होते ही क़ियामत बरपा होगी। इन्हें अ़लामाते कुब्रा भी कहते हैं। (हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, हिस्सा : 5, स. 282)

सुवाल : अ़लामाते सुग़रा क्या क्या हैं ?

जवाब : अ़लामाते सुग़रा बहुत सी हैं। जिन में से चन्द येह हैं :

﴾1﴿ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का दुन्या से पर्दा फ़रमाना। ﴾2﴿ तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُم का दुन्या से पर्दा फ़रमाना। ﴾3﴿ तीन ख़सफ़ का वाक़ेअ़ होना या'नी आदमी ज़मीन में धंस जाएंगे। एक मशरिक़ में दूसरा मग़रिब में और तीसरा जज़ीरए अ़रब में। ﴾4﴿ इ़ल्म उठ जाएगा या'नी उ़लमा उठा लिये जाएंगे और लोग जाहिलों को अपना इमाम व पेशवा बनाएंगे, वोह ख़ुद भी गुमराह होंगे और दूसरों को भी गुमराह करेंगे। ﴾5﴿ ज़िना, शराब नोशी व बदकारी और बे ह़याई की ज़ियादती होगी। ﴾6﴿ मर्द कम होंगे और औ़रतें ज़ियादा होंगी, यहां तक कि एक मर्द की सर परस्ती में पचास औ़रतें होंगी। ﴾7﴿ बड़े दज्जाल के इ़लावा तीस दज्जाल और होंगे, वोह सब नबुव्वत का झूटा दा'वा करेंगे। ﴾8﴿ माल की कसरत होगी, ज़मीन अपने ख़ज़ाने उगल देगी। ﴾9﴿ दीन पर क़ाइम रहना ऐसा दुश्वार होगा जैसे मुट्ठी में अंगारा लेना। ﴾10﴿ वक़्त में बरकत न होगी या'नी जल्दी जल्दी गुज़रेगा। ﴾11﴿ ज़कात देने को लोग तावान समझेंगे। ﴾12﴿ इ़ल्मे दीन पढ़ेंगे मगर दीन की ख़ातिर नहीं बल्कि दुन्या कमाने के लिये। ﴾13﴿ औ़रतें मर्दानी वज़्अ़ इख़्तियार करेंगी और मर्द ज़नानी वज़्अ़। ﴾14﴿ गाने बाजे की कसरत होगी। ﴾15﴿ मुलाक़ात के वक़्त सलाम के बजाए लोग गाली गलोच से पेश आएंगे। ﴾16﴿ मस्जिद के अन्दर शोरो गुल और दुन्या की बातें होंगी। ﴾17﴿ लोग नमाज़ की शराइत़ व

www.dawateislami.net

अरकान का लिहाज़ किये बिग़ैर नमाज़ें पढ़ेंगे, यहां तक कि पचास में से एक नमाज़ भी क़बूल न होगी।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, हिस्सा : 5, स. 282)

सुवाल : क़ियामत की अ़लामाते कुब्रा क्या क्या हैं ?

जवाब : अ़लामाते कुब्रा येह हैं : ﴾1﴿ दज्जाल का ज़ाहिर होना। ﴾2﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का आस्मान से नुज़ूल फ़रमाना। ﴾3﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का ज़ाहिर होना। ﴾4﴿ याजूज व माजूज का निकलना। ﴾5﴿ धुवें का पैदा होना। ﴾6﴿ دَآبَّةُ الْاَرْض का निकलना। ﴾7﴿ सूरज का मग़रिब से निकलना। ﴾8﴿ ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का दुन्या से पर्दा फ़रमाना वग़ैरा।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, हिस्सा : 5, स. 283)

सुवाल : दज्जाल कौन है और येह कब और कैसे ज़ाहिर होगा ?

जवाब : दज्जाल क़ौमे यहूद का एक मर्द है, जो इस वक़्त ब हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ दरियाए त़ब्रिस्तान के जज़ाइर में क़ैद है। येह आज़ाद हो कर एक पहाड़ पर आएगा, वहां बैठ कर आवाज़ लगाएगा, दूसरी आवाज़ पर वोह लोग जम्अ़ हो जाएंगे जिन्हें बद बख़्त होना है, फिर येह एक बहुत बडे लश्कर के साथ मुल्के ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में फ़ुतूर पैदा करने के लिये शाम व इ़राक़ के दरमियान से निकलेगा। उस की एक आंख और एक अब्रू बिल्कुल न होगी, इसी वज्ह से इसे मसीह़ (काना) भी कहते हैं। उस के साथ यहूद की फ़ौजें होंगी, वोह एक बड़े गधे पर सुवार होगा और उस की पेशानी पर "ک اف ر" या'नी काफ़िर लिखा होगा, जिसे हर मुसलमान पढ़ेगा अलबत्ता काफ़िर को नज़र न आएगा। उस का फ़ित्ना बहुत शदीद होगा, चालीस दिन रहेगा जिन में से पहला दिन साल भर के बराबर होगा, दूसरा एक महीने भर के बराबर होगा, तीसरा एक हफ़्ते के बराबर और बक़िय्या आ़म दिनों जैसे होंगे। वोह

www.dawateislami.net

बहुत तेज़ी से एक जगह से दूसरी जगह पहुंचेगा जैसे बादल, जिसे हवा उड़ाती हो, वोह ख़ुदाई का दा'वा करेगा। उस के साथ एक बाग़ और एक आग होगी जिन का नाम जन्नत व दोज़ख़ रखेगा, मगर वोह जो देखने में जन्नत मा'लूम होगी हक़ीक़तन वोह आग होगी और जो जहन्नम दिखाई देगी वोह मक़ामे राह़त होगा। जो उस पर ईमान ले आएंगे उन के लिये बादल को हुक्म देगा तो वोह बरसने लगेगा और ज़मीन को हुक्म देगा तो खेती उग आएगी, जो उसे न मानेंगे उन के पास से चला जाएगा तो वोह क़ह़त में मुब्तला हो जाएंगे, और तही दस्त रह जाएंगे। वीराने में जाएगा तो वहां के दफ़ीने शहद की मख्खियों की त़रह़ उस के हमराह हो लेंगे।

अल ग़रज़ ! इस क़िस्म के बहुत से शो'बदे दिखाएगा। ह़क़ीक़त में येह सब जादू होगा, इस लिये उस के वहां से जाते ही लोगों के पास कुछ न रहेगा। ऐसे वक़्त में मुसलमान ज़िक्रे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ करेंगे जिस से उन की भूक व प्यास ख़त्म हो जाएगी। चालीस दिन में तमाम ज़मीन का गश्त करेगा मगर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा और मदीनए मुनव्वरा में जब भी दाख़िल होना चाहेगा फ़िरिश्ते उस का मुंह फेर देंगे। फिर जब वोह सारी दुन्या में घूम फिर कर मुल्के शाम पहुंचेगा तो उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 284)

सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कब और कहां नुज़ूल फ़रमाएंगे ?

जवाब : जब दज्जाल का फ़ितना अपनी इन्तिहा को पहुंच चुकेगा और येह मलऊ़न तमाम दुन्या में फिर कर मुल्के शाम में पहुंचेगा जहां तमाम अहले अ़रब सिमट कर जम्अ़ हो चुके होंगे, येह ख़बीस उन सब का मुह़ासरा कर लेगा। उन में बाईस हज़ार जंगजू मर्द और एक लाख औ़रतें होंगी। इसी ह़ालत में क़ल्आ़ बन्द मुसलमानों को अचानक ग़ैब से आवाज़ आएगी कि घबराओ नहीं फ़रयाद रस आ पहुंचा। उस वक़्त

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान से दो फ़िरिश्तों के परों पर हाथ रखे ज़र्द रंग का जोड़ा ज़ैबे तन किये हुवे निहायत नूरानी सूरत में दिमश्क़ की जामेअ़ मस्जिद के शर्क़ी मनारे पर दीने मुह़म्मदी صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़ाकिम और इमामे आ़दिल व मुजद्दिदे मिल्लत हो कर नुज़ूल फ़रमाएंगे। वोह सुब्ह़ का वक़्त होगा, नमाज़े फ़ज्र के लिये इक़ामत हो चुकी होगी, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ आप عَلَيْهِ السَّلَام से इमामत की दरख़्वास्त करेंगे। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ की पुश्त पर हाथ रख कर फ़रमाएंगे : आगे बढ़ो नमाज़ पढ़ाओ कि तक्बीर तुम्हारे ही लिये हुई है। हुज़ूर ताजदारे अ़रबो अ़जम, सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है : "तुम्हारा ह़ाल कैसा होगा जब तुम में इब्ने मरयम عَلَيْهِ السَّلَام नुज़ूल फ़रमाएंगे और तुम्हारा इमाम तुम ही में से होगा।"

(صحیح مسلم ،کتاب الایمان،باب نزول عیسیٰ ابن مریم حاکماً شریعة نبینا محمد صلی الله تعالی علیه وسلم،الحدیث:٢٤٥،٢٤٦،ص٩٢)

या'नी तुम्हारी उस वक़्त की ख़ुशी और फ़ख़्र बयान से बाहर है कि रूहुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام नबी व रसूल होने के बा वुजूद तुम पर उतरें, तुम में रहें, तुम्हारे मुईनो यावर बनें और तुम्हारे इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ें।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 285)

सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी कौन हैं ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ बारह इमामों رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم اَجْمَعِیْن में सब से आख़िरी इमाम और ख़लीफ़तुल्लाह हैं। आप का इस्मे गिरामी "मुह़म्मद" वालिद साह़िब का नाम "अ़ब्दुल्लाह" और वालिदा साह़िबा का नाम "आमिना" होगा। आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ निस्बतन सय्यिद ह़सनी, ह़ज़रते सय्यिदतुना बीबी फ़ाति़मा ज़हरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا की औलाद से होंगे, और मादरी रिश्तों में ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से भी आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का कुछ तअ़ल्लुक़

www.dawateislami.net

होगा। चालीस साल की उ़म्र में आप का ज़ुहूर होगा, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िलाफ़त सात या आठ या नव साल होगी। इस के बा'द आप का विसाल हो जाएगा। ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَیْہِ السَّلَام आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नमाज़े जनाज़ा पढ़ाएंगे। चुनान्चे रिवायात में है कि जब तमाम अ़लामाते सुग़रा वाक़ेअ़ हो चुकेंगी तो उस वक़्त नसारा (ईसाइयों) का ग़लबा होगा, रूम व शाम और तमाम मुमालिके इस्लाम, ह़रमैन शरीफ़ैन के इलावा सब मुसलमानों के हाथ से निकल जाएंगे। तमाम ज़मीन फ़ित्ना व फ़साद से भर जाएगी, उस वक़्त अब्दाल बल्कि तमाम औलियाउल्लाह رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ सब जगह से सिमट कर ह़रमैन शरीफ़ैन को हिजरत कर जाएंगे और सारी ज़मीन कुफ़्रिस्तान हो जाएगी। रमज़ान शरीफ़ का महीना होगा। अब्दाल त़वाफ़े का'बा में मसरूफ़ होंगे और ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम महदी भी जिन की उ़म्र मुबारक उस वक़्त चालीस साल होगी, वहां होंगे। औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ उन्हें पेहचान कर दरख़्वास्ते बैअ़त करेंगे, आप इन्कार फ़रमाएंगे। दफ़्अ़तन ग़ैब से एक आवाज़ आएगी "هٰذَا خَلِيْفَةُ اللّٰهِ الْمَهْدِيُّ فَاسْمَعُوْا لَهٗ وَاَطِيْعُوْهُ" येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ख़लीफ़ा महदी है, इस की बात सुनो और इस का हुक्म मानो। अब तमाम औलियाए किराम رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ और अहले इस्लाम आप के दस्ते मुबारक पर बैअ़त करेंगे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ वहां से सब को अपने हमराह ले कर मुल्के शाम तशरीफ़ ले जाएंगे।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 287)

सुवाल : याजूज व माजूज कौन हैं ?

जवाब : याजूज माजूज, याफ़िस बिन नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की औलाद में से फ़सादी गुरौह हैं, उन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है, वोह ज़मीन में फ़साद करते थे येह अय्यामे रबीअ़ में निकलते थे खेतियां और सब्ज़ियां सब कुछ खा जाते थे, आदमियों बल्कि दरिन्दों, वह़शी जानवरों बल्कि

www.dawateislami.net

सांपों, बिच्छूओं तक को खा जाते थे, ह़ज़रते सय्यिदुना सिकन्दर ज़ुल क़रनैन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जो मोमिने सालेह़ और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मक़्बूल बन्दे और तमाम दुन्या पर हुक्मरान थे, लोगों ने उन से याजूज व माजूज की शिकायत की, चुनान्चे, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उन की दरख़्वास्त पर बुन्याद खुदवाई। जब पानी तक पहुंच गई तो पिघलाए हुवे तांबे से पथ्थर जमाए गए और लोहे के तख़्ते ऊपर नीचे चुन कर उन के दरमियान लकड़ी और कोइला भरवा दिया और आग दे दी, इसी त़रह़ येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और ऊपर से पिघला हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया येह सब मिल कर एक इन्तिहाई सख़्त जिस्म हो गया। उस की चोड़ाई साठ गज़ है और लम्बाई डेढ़ सो फ़रसंग। शहनशाहे अबरार, शफ़ीए रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, बि इज़्नि परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला तबार है कि : याजूज व माजूज रोज़ाना इस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर मेह़नत करते हैं, जब उस के तोड़ने के क़रीब होते हैं तो उन में से कोई कहता है कि अब चलो ! बाक़ी कल तोड़ेंगे। दूसरे रोज़ जब आते हैं तो वोह दीवार ब हुक्मे इलाही عَزَّوَجَلَّ पहले से ज़ियादा मज़बूत हो चुकी होती है। फिर जब उन के ख़ुरूज का वक़्त आएगा तो उन में से एक कहने वाला कहेगा अब चलो ! बाक़ी दीवार कल तोड़ेंगे اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। चुनान्चे, (عَزَّوَجَلَّ)"اِنْ شَآءَاللّٰہ" कहने का फ़ाइदा येह होगा कि उस दिन की मेह़नत राएगां नहीं जाएगी और अगले रोज़ उन्हें दीवार उतनी ही टूटी हुई मिलेगी जितनी गुज़श्ता रोज़ तोड़ गए थे। अब वोह बाहर निकल आएंगे।

(سنن ابن ماجه، کتاب الفتن، باب فتنة الدجال، الحدیث: ٤٠٨٠، ج٤، ص٤٠٩ وهمارا اسلام، علامات قیامت، حصه٥، ص٢٨٩)

www.dawateislami.net

सुवाल : याजूज माजूज का ख़ुरूज कब होगा ?

जवाब : क़त्ले दज्जाल के बा'द जब लोग अम्नो अमान की ज़िन्दगी बसर कर रहे होंगे तो उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्मे इलाही होगा कि मुसलमानों को कोहे तूर पर ले जाएं, इस लिये कि अब कुछ ऐसे लोग ज़ाहिर किये जाएंगे जिन से लड़ने की किसी को ताक़त नहीं। चुनान्चे आप عَلَيْهِ السَّلَام लोगों को ले कर क़ल्अ़ए तूर पर तशरीफ़ ले जाएंगे, इस के बा'द याजूज माजूज ज़ाहिर होंगे, उन की ता'दाद इतनी ज़ियादा होगी कि उन की पहली जमाअ़त जब बह़ीरए त़बरिया पर से (जिस का तूल दस मील होगा) गुज़रेगी तो उस का सारा पानी पी कर इस त़रह़ सुखा देगी कि जब दूसरी जमाअ़त वहां आएगी तो कहेगी कि यहां कभी पानी था ही नहीं। ग़रज़ येह लोग हर त़रफ़ फैल कर फ़ितना व फ़साद और क़त्लो ग़ारत बरपा करेंगे। फिर जब दुन्या में क़त्लो ग़ारत कर चुकेंगे तो कहेंगे कि ज़मीन वालों को तो क़त्ल कर लिया, आओ ! अब आस्मान वालों को भी क़त्ल कर दें। येह कह कर अपने तीर आस्मान की त़रफ़ फेंकेंगे। ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की क़ुदरत से उन के तीर ऊपर से ख़ून आलूद गिरेंगे। येह समझेंगे कि आस्मान वाले भी हलाक हो गए।

इधर येह अपनी ह़रकतों में मश्ग़ूल होंगे और वहां पहाड़ पर ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने साथियों के साथ मह़सूर होंगे। मह़सूरीन में क़ह़त का आ़लम येह होगा कि उन के नज़दीक गाए के सर की वोह वक़्अ़त होगी जो आज सौ अश्रफ़ियों की नहीं। उस वक़्त सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने ह़वारियों के साथ इस मुसीबत से छुटकारे की दुआ फ़रमाएंगे, इस पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ याजूज माजूज की गर्दनों में एक क़िस्म के कीड़े पैदा कर देगा जिस के सबब एक ही रात में वोह सब हलाक हो जाएंगे।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 290)

www.dawateislami.net

सुवाल : याजूज माजूज के हलाक होने के बा'द क्या होगा ?

जवाब : उन के मरने के बा'द जब ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام और उन के अस्ह़ाब पहाड़ से उतरेंगे तो देखेंगे कि तमाम ज़मीन उन की लाशों और बदबू से भरी पड़ी है। ह़त्ता कि एक बालिश्त ज़मीन भी ख़ाली न होगी, आप عَلَيْهِ السَّلَام अपने हमराहियों के साथ फिर दुआ़ फ़रमाएंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ एक सख़्त आंधी और एक ख़ास क़िस्म के परन्दे भेजेगा। वोह उन की लाशों को जहां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ चाहेगा फेंक आएंगे और उन के तीरो तरकश को मुसलमान सात बरस तक जलाएंगे, फिर इस के बा'द बारिश होगी जिस से ज़मीन बिल्कुल हमवार हो जाएगी। और ज़मीन को हुक्म होगा कि अपनी बरकतें उगल दे तो येह ह़ालत होगी कि अनार इतने बड़े बड़े पैदा होंगे कि एक अनार से एक जमाअ़त का पेट भरेगा और उस के छिल्के के साए में दस आदमी बैठेंगे और दूध में बरकत येह होगी कि एक ऊंटनी का दूध जमाअ़त को काफ़ी होगा और एक गाए का दूध क़बीले भर को और एक बकरी का ख़ानदान भर को किफ़ायत करेगा।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 290)

सुवाल : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام कब तक दुन्या में क़ियाम फ़रमाएंगे ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام चालीस साल तक ज़मीन में इमामते दीन व हुकूमते अ़दल फ़रमाएंगे। इस में सात साल दज्जाल की हलाकत के बा'द के हैं। इन ही में आप عَلَيْهِ السَّلَام निकाह़ फ़रमाएंगे, आप عَلَيْهِ السَّلَام की औलाद भी होगी। हुज़ूर ताजदारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के मज़ारे अक़्दस पर ह़ाज़िर हो कर सलाम अ़र्ज़ करेंगे। क़ब्रे अन्वर से सलाम का जवाब आएगा। फिर रौह़ा के रास्ते से

www.dawateislami.net

ह़ज या उ़मरह अदा फ़रमाएंगे । इस के बा'द आप عَلَيْهِ السَّلَام विसाल फ़रमा जाएंगे, मुसलमान उन की तजहीज़ करेंगे, नहलाएंगे, ख़ुश्बू लगाएंगे, कफ़न देंगे, नमाज़ पढ़ेंगे और हमारे प्यारे आक़ा व मौला, हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के पहलूए मुबारक में, गुम्बदे ख़ज़रा के साए में आप عَلَيْهِ السَّلَام दफ़्न किये जाएंगे ।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 291)

सुवाल : धुवां कब ज़ाहिर होगा और उस का असर क्या होगा ?

जवाब : ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात के बा'द क़बीलए क़ह़त़ान में से एक शख़्स जहजाह नाम के आप عَلَيْهِ السَّلَام के ख़लीफ़ा होंगे, जो कि यमन के रहने वाले होंगे, उन के बा'द चन्द बादशाह और होंगे जिन के अ़हद में फिर से कुफ़्रो जहालत का दौर दौरा हो जाएगा । इसी असना में एक मकान मग़रिब में और एक मशरिक़ में जहां मुन्किरीने तक़्दीर रहते होंगे ज़मीन में धंस जाएगा । इस के बा'द आस्मान से धुवां नुमूदार होगा जिस से आस्मान से ज़मीन तक अंधेरा हो जाएगा, येह अंधेरा चालीस रोज़ तक रहेगा, इस से मुसलमान ज़ुकाम में मुब्तला हो जाएंगे जब कि काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों पर बे होशी त़ारी हो जाएगी, बा'ज़ एक दिन के बा'द, बा'ज़ दो दिन और बा'ज़ तीन दिन के बा'द होश में आएंगे, फिर मग़रिब से आफ़्ताब त़ुलूअ़ होगा । (हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, ह़िस्सा : 5, स. 292)

सुवाल : सूरज मग़रिब से कैसे त़ुलूअ़ होगा ?

जवाब : रोज़ाना आफ़्ताब बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सजदा कर के इज़्ने त़ुलूअ़ चाहता है, जब इजाज़त मिलती है तब त़ुलूअ़ होता है । क़ुर्बे क़ियामत में जब आफ़्ताब ह़स्बे मा'मूल त़ुलूअ़ की इजाज़त चाहेगा तो इजाज़त न मिलेगी और ह़ुक्म होगा कि वापस जा, वोह वापस हो जाएगा और इस के बा'द माहे ज़िल ह़िज्जा में यौमे नह़र के बा'द रात

www.dawateislami.net

इस क़दर लम्बी हो जाएगी कि बच्चे चिल्ला उठेंगे। मुसाफ़िर तंग दिल और मवेशी चरागाह के लिये बे क़रार हो जाएंगे। यहां तक कि लोग बे चैनी की वज्ह से नाला व ज़ारी करेंगे और तौबा तौबा पुकारेंगे, आख़िर तीन चार रात की मिक़्दार दराज़ होने के बा'द आफ़्ताब मग़रिब से इज़्तिराब की ह़ालत में चांद ग्रहन की मानिन्द थोड़ी रोशनी के साथ निकलेगा और निस्फ़ आस्मान तक आ कर लौट जाएगा। और जानिबे मग़रिब ग़ुरूब होगा इस के बा'द फिर मशरिक़ से तुलूअ़ हुवा करेगा। इस निशानी के ज़ाहिर होते ही तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जाएगा काफ़िर अपने कुफ़्र से या गुनाहगार अपने गुनाहों से तौबा करना भी चाहेगा तो तौबा क़बूल न होगी और उस वक़्त किसी का इस्लाम लाना क़ाबिले क़बूल न होगा। (हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, हिस्सा : 5, स. 292)

सुवाल : دَآبَّةُ الْاَرْض क्या है और येह कब निकलेगा ?

जवाब : دَآبَّةُ الْاَرْض अ़जीब शक्ल का एक जानवर होगा जो कोहे सफ़ा से बर आमद हो कर तमाम शहरों में बहुत जल्द फिरेगा और ऐसी तेज़ी से दौरा करेगा कि कोई भागने वाला इस से न बच सकेगा। फ़साह़त के साथ कलाम करेगा और ब ज़बाने फ़सीह़ कहेगा "هٰذَا مُؤْمِنٌ وَّهٰذَا كَافِرٌ" **येह मोमिन है और येह काफ़िर है**। उस के एक हाथ में ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अ़सा और दूसरे में ह़ज़रते सय्यिदुना सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगूठी होगी। अ़से से हर मुसलमान की पेशानी पर एक नूरानी ख़त़ बनाएगा, जिस से सियाह चेहरा नूरानी हो जाएगा और अंगूठी से हर काफ़िर की पेशानी पर सियाह मोहर लगाएगा, जिस से उस का चेहरा बे रोनक़ हो जाएगा। उस वक़्त तमाम मुसलमान व काफ़िर ए'लानिया ज़ाहिर होंगे। येह अ़लामत कभी भी न बदलेगी। जो काफ़िर है हरगिज़ ईमान न लाएगा और जो मुसलमान है हमेशा ईमान पर क़ाइम रहेगा। आफ़्ताब के मग़रिब से तुलूअ़ होने के दूसरे रोज़ लोग इसी वाक़िए़ का चर्चा करने में मश्ग़ूल होंगे कि अचानक कोहे सफ़ा

www.dawateislami.net

ज़लज़ले से फट जाएगा और येह जानवर निकलेगा। पहले यमन में फिर नज्द में ज़ाहिर हो कर ग़ाइब हो जाएगा और तीसरी बार मक्कए मुअ़ज़्ज़मा में ज़ाहिर होगा।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, हिस्सा : 5, स. 293)

सुवाल : इस के बा'द फिर क्या होगा ?

जवाब : जब क़ियामत क़ाइम होने में सिर्फ़ चालीस साल रह जाएंगे, एक ख़ुश्बूदार ठन्डी हवा चलेगी जो लोगों की बग़लों के नीचे से निकलेगी। जिस का असर येह होगा की मुसलमान की रूह़ क़ब्ज़ हो जाएगी यहां तक कि कोई अहले ईमान अहले ख़ैर न होगा और काफ़िर ही काफ़िर रह जाएंगे, कुफ़्फ़ारे ह़बशा का ग़लबा होगा और उन की सल्त़नत होगी। हुक्काम का ज़ुल्म और रिआ़या की एक दूसरे पर दस्त दराज़ी रफ़्ता रफ़्ता बढ़ जाएगी, बुत परस्ती आ़म होगी और क़ह़त और वबा का ज़ुहूर होगा। उस वक़्त मुल्के शाम में कुछ अम्न होगा, दीगर मुमालिक के लोग अहलो इ़याल समेत मुल्के शाम को रवाना होंगे। इसी असना में एक बड़ी आग जुनूब से नुमूदार होगी। वोह उन का तआ़क़ुब करेगी, यहां तक कि वोह शाम में पहुंच जाएंगे। फिर वोह आग ग़ाइब हो जाएगी। येह चालीस साल का ज़माना ऐसा गुज़रेगा कि इस में किसी के औलाद न होगी। या'नी चालीस साल से कम उ़म्र का कोई न होगा और दुन्या में काफ़िर ही काफ़िर होंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ कहने वाला कोई न होगा कि अचानक जुमुआ़ के रोज़ जो कि यौमे आ़शूरा (या'नी दस मुह़र्रमुल ह़राम) भी होगा और लोग अपने अपने कामों में मश्ग़ूल होंगे कि सुब्ह़ के वक़्त **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को सूर फूंकने का हुक्म देगा और काफ़िरों पर क़ियामत क़ाइम होगी।

(हमारा इस्लाम, अ़लामाते क़ियामत, हिस्सा : 5, स. 293)

www.dawateislami.net

ह़श्रो नश्र का बयान

सुवाल : ह़श्रो नश्र व मआ़द किसे कहते हैं ?

जवाब : ह़श्र, नश्र, मआ़द, यौमे बअ़स, यौमे नुशूर, साअ़त, सब **क़ियामत** के नाम हैं। जिस त़रह़ दुन्या में हर चीज़ इनफ़िरादी त़रीक़े से फ़ना होती और मिटती रहती है ऐसे ही दुन्या की भी एक उ़म्र है जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के इ़ल्म में मुक़र्रर है, इस के पूरा होने के बा'द एक दिन ऐसा आएगा कि तमाम काइनात फ़ना हो जाएगी इसी को क़ियामत कहते हैं। उस वक़्त उस एक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के सिवा दूसरा कोई न होगा और वोह तो हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

(हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 294)

सुवाल : इस अ़क़ीदे पर ईमान लाना किस ह़द तक ज़रूरी है ?

जवाब : ह़श्रो नश्र पर ईमान लाना इस्लाम के बुन्यादी अ़क़ाइद में से एक अहम अ़क़ीदा है। इस पर ईमान लाए बिग़ैर आदमी हरगिज़ मुसलमान नहीं हो सकता। येह अ़क़ीदा इस क़दर ज़रूरी है कि इस अ़क़ीदे के बिग़ैर इन्सान गुनाहों से पूरी त़रह़ न बच सकता है न इ़बादत में मशक़्क़त उठा सकता है न जानो माल क़ुरबान कर सकता है। दुन्यावी सज़ा का ख़ौफ़ या बदनामी का डर उसी वक़्त तक आदमी को जुर्म से बाज़ रख सकता है जब तक कि उस के ज़ाहिर हो जाने का ख़ौफ़ हो और जब किसी को येह यक़ीन हो जाता है कि मेरा येह जुर्म कोई नहीं जान सकता तो बिला तकल्लुफ़ बड़े से बड़े जुर्म का मुर्तकिब हो जाता है। सिर्फ़ येह अ़क़ीदा आदमी को इर्तिकाबे जुर्म से रोकता है कि हमारे तमाम नेको बद आ'माल की सज़ा व जज़ा का एक दिन मुक़र्रर है, इसी दिन का नाम क़ियामत है, और इस दिन का मालिक **अल्लाह** तआ़ला है, दुन्या के अकसर बड़े बड़े अ़क़्ल मन्द इख़्तिलाफ़े

www.dawateislami.net

मज़हब के बा वुजूद इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि इस ज़िन्दगी के बा'द कोई दूसरी ज़िन्दगी भी आने वाली है, इसी मौत तक मुआ़मला ख़त्म नहीं हो जाता। उस दूसरी ज़िन्दगी में हमारी सआ़दत व शक़ावत का मदार हमारी इस ज़िन्दगी के आ'माल व अफ़्आ़ल पर है। या'नी जैसी करनी वैसी भरनी। (हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 295)

सुवाल : ह़श्र सिर्फ़ रूह़ का होगा या रूह़ व जिस्म दोनों का ?

जवाब : ह़श्र सिर्फ़ रूह़ का नहीं बल्कि रूह़ व जिस्म दोनों का है, जो येह कहे कि सिर्फ़ रूहें उठेंगी, जिस्म ज़िन्दा न होंगे वोह क़ियामत का मुन्किर है और ऐसा कहने वाला काफ़िर है। जिस्म के अज्ज़ा अगर्चे मरने के बा'द बिखर गए हों या मुख़्तलिफ़ जानवर खा गए हों, **अल्लाह** तआ़ला इन सब अज्ज़ा को जम्अ़ फ़रमा कर पहली सूरत पर ला कर उन्हें उन अज्ज़ाए अस्लिय्या पर तरकीब देगा जो कि तुख़्मे जिस्म हैं जिन्हें "अ़जबुल ज़नब" कहते हैं वोह रीढ़ की हड्डी में कुछ ऐसे बारीक अज्ज़ा हैं जो न किसी ख़ुर्द बीन से नज़र आ सकते हैं न उन्हें आग जला सकती है और न ज़मीन गला सकती है वोह महफ़ूज़ हैं, और हर रूह़ को उसी जिस्मे साबिक़ में भेजेगा जिस के साथ वोह मुतअ़ल्लिक़ थी। (हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 295)

सुवाल : काइनात किस त़रह़ फ़ना की जाएगी ?

जवाब : जब क़ियामत की निशानियां पूरी हो लेंगी और मुसलमानों की बग़लों के नीचे से वोह ख़ुश्बूदार हवा गुज़र जाएगी जिस से तमाम मुसलमानों की वफ़ात हो जाएगी। तब दुन्या में काफ़िर ही काफ़िर होंगे और **अल्लाह** कहने वाला कोई न होगा, और लोग अपने अपने कामों में मश्ग़ूल होंगे कि अचानक ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को सूर फूंकने का ह़ुक्म होगा। चुनान्चे आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام सूर फूंकना शुरूअ़ करेंगे, शुरूअ़ शुरूअ़ में उस की आवाज़ बहुत बारीक होगी फिर

www.dawateislami.net

रफ़्ता रफ़्ता बुलन्द होती चली जाएगी, लोग कान लगा कर उसे सुनेंगे और बेहोश हो जाएंगे । इस बेहोशी का असर येह होगा कि मलाइका और ज़मीन वालों में से उस वक़्त जो लोग ज़िन्दा होंगे, या'नी जिन पर मौत न आई होगी वोह भी इस से मर जाएंगे और जिन पर मौत वारिद हो चुकी फिर **अल्लाह** तआ़ला ने उन्हें ह़यात अ़त़ा फ़रमाई और वोह अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं जैसा कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام व शुहदा उन ह़ज़रात पर इस नफ़्ख़े से बेहोशी की सी कैफ़िय्यत त़ारी होगी । ज़मीन व आस्मान में हलचल पड़ जाएगी, ज़मीन अपने तमाम बोझ और ख़ज़ाने बाहर निकाल देगी, पहाड़ हिल हिल कर रेज़ा रेज़ा हो जाएंगे और धुनी हुई रूई या ऊन के गाले की त़रह़ उड़ने लगेंगे । आस्मान के तमाम सितारे टूट टूट कर गिर पड़ेंगे और एक दूसरे से टकरा कर रेज़ा रेज़ा हो कर फ़ना हो जाएंगे, इसी त़रह़ हर चीज़ फ़ना हो जाएगी यहां तक कि सूर और ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام और तमाम मलाइका भी फ़ना हो जाएंगे, उस वक़्त उस वाह़िदे ह़क़ीक़ी عَزَّوَجَلَّ के सिवा कोई न होगा । वोह फ़रमाएगा, आज किस की बादशाहत है, कहां हैं जब्बारीन, कहां हैं मुतकब्बिरीन ! मगर है कौन जो जवाब दे । फिर ख़ुद ही फ़रमाएगा "لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ" सिर्फ़ **अल्लाह** वाह़िदे क़ह्हार की सल्त़नत है । (हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 294)

सुवाल : सब से पहले किसे दोबारा ज़िन्दा किया जाएगा ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ जब चाहेगा सब से पहले ह़ज़रते सय्यिदुना इस्राफ़ील عَلَيْهِ السَّلَام को ज़िन्दा फ़रमाएगा और सूर को पैदा कर के दोबारा फूंकने का हुक्म देगा । सूर फूंकते ही तमाम अव्वलीन व आख़िरीन, मलाइका, इन्सो जिन्न व ह़ैवानात मौजूद हो जाएंगे, अव्वल ह़ामिलाने अ़र्श फिर ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्राईल फिर ह़ज़रते सय्यिदुना मीकाईल और फिर ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَيْهِمُ السَّلَام उठेंगे । फिर अज़ सरे नौ

www.dawateislami.net

ज़मीन, आस्मान, चांद, सूरज मौजूद होंगे, फिर एक बारिश बरसेगी जिस से सब्ज़े के मिस्ल ज़मीन का हर ज़ी रूह़ जिस्म के साथ ज़िन्दा होगा । सब से पहले हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म, हमारे प्यारे नबी ह़ज़रत मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी क़ब्रे अन्वर से यूं तशरीफ़ लाएंगे कि आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के दाएं दस्ते अन्वर में ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का हाथ होगा और बाएं दस्ते अन्वर में सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का हाथ । फिर मक्कए मुअ़ज़्ज़मा व मदीनए त़य्यिबा के मक़ाबिर में जितने मुसलमान दफ़्न हैं सब को अपने हमराह ले कर मैदाने ह़श्र में तशरीफ़ ले जाएंगे । (हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 297)

सुवाल : मह़शर में लोगों की ह़ालत क्या होगी ?

जवाब : क़ियामत के रोज़ जब लोग अपनी अपनी क़ब्रों से नंगे बदन, नंगे पाउं ना ख़त्ना शुदा उठेंगे तो मह़शर के इस अ़जीब मन्ज़र को ह़ैरत ज़दा हो कर हर त़रफ़ निगाहें उठा उठा कर देखेंगे, मोमिनों की क़ब्रों पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से (कुछ) सुवारियां ह़ाज़िर की जाएंगी । उन में बा'ज़ तन्हा सुवार होंगे और किसी सुवारी पर दो, किसी पर तीन, किसी पर चार, किसी पर दस होंगे । जब कि काफ़िर मुंह के बल चलता हुवा मैदाने ह़श्र को जाएगा । येह मैदाने ह़श्र मुल्के शाम की ज़मीन पर क़ाइम होगा । ज़मीन ऐसी हमवार होगी कि इस किनारे पर राई का दाना गिर जाए तो दूसरे किनारे से दिखाई दे । येह ज़मीन दुन्या की मिट्टी वाली ज़मीन न होगी बल्कि तांबे की होगी । इसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़ियामत के दिन के लिये पैदा फ़रमाएगा । उस दिन आफ़्ताब एक मील के फ़ासिले पर होगा और उस का मुंह इस ज़मीन की त़रफ़ होगा, तपिश और गर्मी का क्या पूछना, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पनाह में रखे (आमीन), भेजे खोलते होंगे और इस कसरत से पसीना निकलेगा कि सत्तर गज़ ज़मीन में जज़्ब हो जाएगा फिर जो पसीना ज़मीन न पी सकेगी वोह

www.dawateislami.net

ऊपर चढ़ेगा, किसी के टख़्नों तक होगा किसी के घुटनों तक, किसी की कमर कमर, किसी के सीना, किसी के गले तक और काफ़िर के तो मुंह तक चढ़ कर लगाम की त़रह़ जकड़ लेगा जिस में वोह डुबकियां खाएगा, उस गर्मी की ह़ालत में प्यास के बाइ़स ज़बानें सूख कर कांटा हो जाएंगी। दिल उबल कर गले तक आ जाएंगे और हर मुब्तला अपने गुनाहों की मिक़्दार के बराबर तक्लीफ़ में मुब्तला किया जाएगा। और इन मुसीबतों के बा वुजूद कोई किसी का पुरसाने ह़ाल न होगा, फिर ह़िसाबो किताब शुरूअ़ होगा, सब के आ'माल नामे सामने रख दिये जाएंगे, अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام और दूसरे गवाह दरबार में ह़ाज़िर होंगे और हर शख़्स के आ'माल का निहायत इन्साफ़ से ठीक ठीक फ़ैसला सुनाया जाएगा। किसी पर किसी त़रह़ की ज़ियादती न होगी, इन तमाम मर्ह़लों के बा'द अब उसे हमेशगी के घर में जाना है। किसी को आराम का घर मिलेगा जिस की आसाइश की कोई इन्तिहा नहीं, इस को जन्नत कहते हैं, या तक्लीफ़ के घर जाना पड़ेगा जिस की तक्लीफ़ की कोई ह़द नहीं इसे जहन्नम कहते हैं।

(हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 297)

सुवाल : ह़श्रो नश्र, सवाबो अ़ज़ाब वग़ैरा के कुछ और भी मा'ना लिये जा सकते हैं?

जवाब : क़ियामत व बअ़स व ह़िसाबो ह़श्र व सवाबो अ़ज़ाब व जन्नत व दोज़ख़ सब के वोही मा'ना हैं जो मुसलमानों में मश्हूर हैं। जो शख़्स इन चीज़ों को तो ह़क़ कहे मगर इन के नए मा'ना घड़े मसलन कहे कि जन्नत सिर्फ़ एक आ'ला दरजे की राह़त का नाम है या येह कहे कि रूह़ानी अज़िय्यत के आ'ला दरजे पर मह़सूस होने का नाम दोज़ख़ है, या सवाब के मा'ना अपनी नेकियों को देख कर ख़ुश होना और अ़ज़ाब के मा'ना अपने बुरे आ'माल को देख कर ग़मगीन होना बताए या कहे कि ह़श्र फ़क़त रूह़ों का होगा। वोह ह़क़ीक़तन इन चीज़ों का मुन्किर है और ऐसा शख़्स क़त़्अन दाइरए इस्लाम से ख़ारिज है, यूंही

www.dawateislami.net

फ़िरिश्तों के वुजूद का इन्कार करना या येह कहना कि फ़िरिश्ता नेकी की कुव्वत को कहते हैं या जिन्नों के वुजूद का इन्कार करना या बदी की कुव्वत का नाम जिन्न या शैत़ान रखना कुफ़्र है। ग़रज़ ह़श्रो नश्र, सवाबो अ़ज़ाब, जन्नत व दोज़ख़ वग़ैरहा के मुतअ़ल्लिक़ जो अ़क़ीदे मुसलमानों में मश्हूर हैं और इन के जो मा'ना अहले इस्लाम में मुराद लिये जाते हैं येही मा'ना कुरआने पाक व अह़ादीसे शरीफ़ा में साफ़ रोशन अल्फ़ाज़ में बयान किये गए हैं और येह उमूर इसी त़ौर पर तवातुर के साथ मन्क़ूल होते हुवे हम को पहुंचे हैं, तो जो शख़्स इन लफ़्ज़ों का तो इक़रार करे लेकिन यूं कहे कि इन के ऐसे मा'ना मुराद हैं जो इन के ज़ाहिर अल्फ़ाज़ से समझ में नहीं आते ऐसा शख़्स यक़ीनन दाइरए इस्लाम से ख़ारिज, ज़रूरिय्याते दीन का मुन्किर और काफ़िर व मुर्तद है। (हमारा इस्लाम, ह़श्रो नश्र, ह़िस्सा : 5, स. 299)

दिल बाग़ बाग़ हो जाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ फ़रमाते हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब मैं आप को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ हो जाता है और आंखें ठन्डी होती हैं। (आक़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم) मुझे हर चीज़ की मा'लूमात अ़त़ा फ़रमा दीजिये ! इरशाद हुवा : "हर शै पानी से बनी है।" मैं ने अ़र्ज़ की : उस चीज़ पर मुत्त़लअ़ फ़रमा दीजिये, जिसे अपना कर मैं जन्नत को पा सकूं। फ़रमाया : "खाना खिलाओ और सलाम को फैलाओ और सिलए रेह्मी करो और रात में (नफ़्ली) नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों, तुम सलामती से दाख़िले जन्नत हो जाओगे।" (مسند امام احمد، ج۳، ص۱۷٤، حدیث۷۹۱۹)

www.dawateislami.net

आख़िरत के वाक़ेआ़त

सुवाल : आ'माल नामे से क्या मुराद है ?

जवाब : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन्सान के आ'माल की निगह दाश्त के लिये कुछ फ़िरिश्ते मुक़र्रर फ़रमाए हैं जिन को किरामन कातिबीन कहते हैं, वोह हर इन्सान की नेकियां और बदियां लिखते रहते हैं, हर आदमी के साथ दो फ़िरिश्ते होते हैं, एक दाएं एक बाएं । दाहिनी त़रफ़ का फ़िरिश्ता नेकियां लिखता है और बाईं त़रफ़ का बदियां । इसी सह़ीफ़े या नविश्ते को आ'माल नामा कहा जाता है । इसे यूं समझ लें कि हमारे अच्छे बुरे तमाम कामों के मुकम्मल रिकॉर्ड का नाम **आ'माल नामा** है । क़ियामत के दिन हर शख़्स का नामए आ'माल उसे दिया जाएगा, नेक लोगों के दाहिने हाथ में और बदों के बाएं हाथ में और काफ़िर का सीना तोड़ कर उस का बायां हाथ उस की पुश्त से निकाल कर पीठ के पीछे दिया जाएगा । इस में सारी ज़िन्दगी के आ'माल दर्ज होंगे । हर आदमी उस वक़्त यक़ीन करेगा कि उस का हर अच्छा और बुरा अ़मल इस में मौजूद है । उस में अपने गुनाहों की फ़ेहरिस्त पढ़ कर मुजरिम ख़ौफ़ खाएंगे कि देखिये आज कैसी सज़ा मिलती है और काफ़िर का तो ख़ौफ़ के मारे बुरा ह़ाल होगा । फिर मीज़ान पर लोगों के अच्छे और बुरे आ'माल तोले जाएंगे ।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, ह़िस्सा : 5, स. 300)

सुवाल : मीज़ान क्या है और इस पर आ'माल कैसे तोले जाएंगे ?

जवाब : मीज़ान तराज़ू को कहते हैं और आ'माल का वज़्न करने के लिये क़ियामत में जो मीज़ान नस्ब की जाएगी उस का कुछ इज्माली मफ़्हूम जो शरीअ़त ने बयान फ़रमाया है, वोह येह है कि वज़्न ऐसी मीज़ान से किया जाएगा जिस में किफ़्फ़तैन (या'नी दो पल्ले) और लिसान (या'नी कांटा) वग़ैरा मौजूद हैं और उस का हर पल्ला इतनी वुस्अ़त रखेगा जैसी मशरिक़ो मग़रिब के दरमियान वुस्अ़त है । और रह

www.dawateislami.net

गई येह बात कि वोह मीज़ान किस नोइय्यत की होगी और उस से वज़्न मा'लूम करने का क्या त़रीक़ा होगा येह हमारी अ़क़्लो इदराक से बाहर है, इसी लिये इन के जानने की हमें तक्लीफ़ नहीं दी गई बल्कि येह अ़क़ीदा ता'लीम फ़रमाया गया कि मीज़ान ह़क़ है। और क़ियामत के दिन सब लोगों के आ'माल का वज़्न देखा जाएगा। जिन के नेक आ'माल वज़्नी होंगे वोह काम्याब हैं और जिन के आ'माल का वज़्न हल्का होगा वोह ख़सारे में रहेंगे।

बा'ज़ उ़लमाए किराम येह भी फ़रमाते हैं हर शख़्स के अ़मल, वज़्न के मुवाफ़िक़ लिखे जाते हैं। एक ही काम है, अगर इख़्लास व मह़ब्बत से और हुक्मे शरई के मुवाफ़िक़ किया और बर मह़ल किया तो इस का वज़्न बढ़ गया, और अगर सिर्फ़ दिखावे की वज्ह से किया या मुवाफ़िक़े हुक्म और बर मह़ल न किया तो वज़्न घट गया। अगर्चे देखने में कितना ही बड़ा अ़मल हो मगर उस में ईमान व इख़्लास की रूह़ न हो तो वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के यहां कुछ वज़्न नहीं रखता। आख़िरत में वोही सह़ीफ़े या नविश्ते तोले जाएंगे जिन में आ'माल का इन्दिराज किया जाता है। येह भी मुमकिन है कि वहां आ'माले ह़सना किसी नूरानी शक्लो जिस्म में तब्दील कर दिये जाएं और बुरे आ'माल किसी बुरी शक्लो जिस्म में और फिर उन अज्साम का वज़्न किया जाएगा। وَاللّٰہ تَعَالٰی اَعلم

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, ह़िस्सा : 5, स. 300)

सुवाल : ह़िसाबो किताब की नोइय्यत क्या होगी ?

जवाब : आ'माल के ह़िसाब की नोइय्यतें मुख़्तलिफ़ होंगी, किसी से तो इस त़रह़ ह़िसाब लिया जाएगा कि ख़ुफ़्यतन उस से पूछा जाएगा कि तू ने येह किया और येह किया ? वोह अ़र्ज़ करेगा : हां ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ यहां तक कि तमाम गुनाहों का इक़रार कर लेगा और अपने दिल में समझेगा कि अब कम बख़्शी आई मगर वोह करीम परवर दगार करम

www.dawateislami.net

फ़रमाएगा कि हम ने दुन्या में भी तेरे ऐ़ब छुपाए और अब हम तुझे बख़्शते हैं और किसी से सख़्ती के साथ एक एक बात की बाज़पुर्स होगी, जिस से यूं सुवाल हुवा वोह हलाक हुवा और किसी को ने'मतें याद दिला दिला कर पूछा जाएगा कि तेरा क्या ख़याल था कि हम से मिलना है ? वोह अ़र्ज़ करेगा कि नहीं। फ़रमाएगा तो जैसे तू ने हमें याद न किया लिहाज़ा हम भी तुझे अ़ज़ाब में छोड़ते हैं। बा'ज़ काफ़िर ऐसे भी होंगे कि जब ने'मतें याद दिला कर फ़रमाएगा कि तू ने क्या किया ? तो वोह बोलेंगे कि हम मुसलमान थे और नमाज़, रोज़ा, सदक़ा व ख़ैरात और दूसरे नेक काम करते थे, इरशाद होगा ! तू ठहर जा ! तुझ पर गवाह पेश किये जाएंगे, फिर उस के मुंह पर मुहर कर दी जाएगी और आ'ज़ा को हुक्म होगा कि बोलो ! उस वक़्त उस के हाथ, पाउं, गोश्त पोस्त हड्डियां सब उस के ख़िलाफ़ गवाही देंगे कि येह तो ऐसा था ऐसा था वग़ैरा। चुनान्चे वोह जहन्नम में डाल दिया जाएगा। किसी मुसलमान पर उस के आ'माल पेश किये जाएंगे ताकि वोह अपने अच्छे और बुरे आ'माल को पहचान ले, फिर अच्छे कामों पर सवाब दिया जाएगा और बुरे कामों से दर गुज़र फ़रमाया जाएगा, या'नी न बात बात पर गिरिफ़्त होगी न येह कहा जाएगा कि ऐसा क्यूं किया ? न उ़ज़्र पूछा जाएगा और न इस पर हुज्जत क़ाइम की जाएगी।

इस उम्मत में वोह शख़्स भी होगा जिस के निनान्वे दफ़्तर गुनाहों के होंगे। उस से पूछा जाएगा कि तेरे पास कोई उ़ज़्र (इन्कार) है ? वोह अ़र्ज़ करेगा कि नहीं, फिर एक पर्चा जिस में اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ होगा निकाला जाएगा और हुक्म होगा कि जा इसे तुलवा, फिर एक पलड़े पर गुनाहों के सारे दफ़्तर रखे जाएंगे और एक में वोह पर्चा। चुनान्चे, वोह पर्चा उन तमाम दफ़्तरों से भारी हो जाएगा।

www.dawateislami.net

हमारे हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, आक़ाए उम्मत, मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत से बहुत से तो बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाए जाएंगे, तहज्जुद गुज़ार भी बिला ह़िसाब जन्नत में जाएंगे। बिल जुम्ला उस करीम परवर दगार की रह़मत की कोई इन्तिहा नहीं जिस पर रह़म फ़रमाए तो थोड़ी चीज़ भी बहुत कसीर है।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, ह़िस्सा : 5, स. 301)

رَحمتِ حق بہَا نہ می جوید رَحمتِ حق بہَانہ، می جوید

*या'नी **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत क़ीमत त़लब नहीं करती बल्कि*

***अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की रह़मत तो बहाना तलाश करती है।*

सुवाल : अहले मह़शर की कितनी क़िस्में होंगी ?

जवाब : क़ियामत के वुक़ूअ़ के बा'द कुल आदमियों की तीन क़िस्में कर दी जाएंगी :

﴾1﴿ दोज़ख़ी ﴾2﴿ आ़म जन्नती और ﴾3﴿ ख़व्वास मुक़र्रबीन, जो कि जन्नत के निहायत आ'ला दरजात पर फ़ाइज़ होंगे। दोज़ख़ी जिन्हें क़ुरआने करीम ने "अस्ह़ाबुश्शिमाल" फ़रमाया है, जो मीसाक़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बाएं पहलू से निकाले गए थे, वोह अ़र्श की बाईं जानिब खड़े किये जाएंगे, आ'माल नामा बाएं हाथ में दिया जाएगा, फ़िरिश्ते बाईं त़रफ़ से उन को पकड़ेंगे। उन की नुहूसत और बदबख़्ती का क्या ठिकाना, और आ़म जन्नती जिन्हें क़ुरआने मजीद में "अस्ह़ाबुल यमीन" फ़रमाया गया है और जिन को मीसाक़ के वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام के दाएं पहलू से निकाला गया था, वोह अ़र्शे अ़ज़ीम के दाईं त़रफ़ होंगे। उन का आ'माल नामा दाहिने हाथ में दिया जाएगा और फ़िरिश्ते भी उन को दाहिनी त़रफ़ से लेंगे। उस रोज़ उन की ख़ूबी व बरकत का क्या कहना, निहायत शानो शौकत के साथ एक दूसरे को देख कर मसरूर व दिलशाद होंगे।

www.dawateislami.net

शबे मे'राज हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक, सय्याहे अफ़्लाक صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन ही दोनो गुरौहों की निस्बत मुलाहज़ा फ़रमाया था कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَيْهِ السَّلَام अपनी दाहिनी त़रफ़ देख कर हंसते हैं और बाईं त़रफ़ देख कर रोते हैं और ख़व्वास मुक़र्रबीन जिन्हें कुरआने करीम में "साबिक़ून" फ़रमाया गया वोह ह़क़ तआ़ला की रह़मतों और मरातिबे कुर्बो वजाहत में सब से आगे हैं।

ह़दीस शरीफ़ में वारिद है कि अहले मह़शर की एक सो बीस सफ़ें होंगी जिन में चालीस पहली उम्मतों की और अस्सी इस उम्मते मर्हूमा की।

(سنن الترمذی ، کتاب صفة الجنة ، باب ماجاء فی کم صف اهل الجنة، الحدیث ۲۵۵۵،ج٤، ص ٢٤٤)

ह़िसाब किताब से फ़राग़त के बा'द सब को पुल सिरात़ से गुज़रने का हुक्म होगा।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, ह़िस्सा : 5, स. 303)

सुवाल : सिरात़ क्या है ?

जवाब : येह एक पुल है जो जहन्नम की पुश्त पर नस्ब किया जाएगा, बाल से ज़ियादा बारीक और तल्वार से ज़ियादा तेज़ होगा, हर नेक व बद, मोमिन व काफ़िर का इस पर से गुज़र होगा, क्यूंकि जन्नत में जाने का येही रास्ता है, नेक लोग सलामत रहेंगे और अपने अपने आ'माल के मुवाफ़िक़ वहां से सह़ीह़ सलामत गुज़र जाएंगे। जब उन का गुज़र दोज़ख़ पर होगा तो दोज़ख़ से सदा उठेगी कि ऐ मोमिन ! जल्दी गुज़र जा कि तेरे नूर ने मेरी लपट सर्द कर दी। पुल सिरात़ के दोनों जानिब बड़े बड़े आंकड़े लटकते होंगे, जिस शख़्स के बारे में हुक्म होगा उसे पकड़ लेंगे मगर बा'ज़ तो ज़ख़्मी हो कर नजात पा जाएंगे और बा'ज़ को येह आंकड़े जहन्नम में गिरा देंगे। सब से पहले हमारे नबिय्ये करीम

www.dawateislami.net

صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم उस पर से गुज़र फ़रमाएंगे, फिर दीगर अम्बियाओ मुर्सलीन عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام फिर येह उम्मत फिर और उम्मतें गुज़रेंगी।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, हि़स्सा : 5, स. 304)

सुवाल : पुल सिरात़ से मख़्लूक़ का गुज़र किस त़रह़ होगा ?

जवाब : मुख़्तलिफ़ आ'माल के मुत़ाबिक़ पुल सिरात़ पर लोग भी मुख़्तलिफ़ त़रह़ से गुज़रेंगे। बा'ज़ तो ऐसे तेज़ी के साथ गुज़रेंगे जैसे बिजली का कौंदा कि अभी चमका और अभी ग़ाइब हो गया और बा'ज़ तेज़ हवा की त़रह़, कोई ऐसे जैसे परन्दा उड़ता है और बा'ज़ जैसे घोड़ा दौड़ता है और बा'ज़ ऐसे जैसे आदमी दौड़ता है। यहां तक कि बा'ज़ सुरीन पर घिसटते हुवे और कोई च्यूंटी की चाल चलते हुवे, पार गुज़र जाएंगे।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, हि़स्सा : 5, स. 304)

सुवाल : ह़ौज़े कौसर क्या है ?

जवाब : ह़श्र के दिन इस परेशानी के आ़लम में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की एक बड़ी रह़मत ह़ौज़े कौसर है जो हमारे प्यारे नबी हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم को मर्ह़मत हुवा है, इस ह़ौज़ की मुसाफ़त एक महीने की राह है, इस में जन्नत से दो परनाले हर वक़्त गुज़रते हैं एक सोने का दूसरा चांदी का, इस के किनारों पर मोती के कुब्बे हैं, इस की मिट्टी निहायत ख़ुश्बूदार मुश्क की है, इस का पानी दूध से ज़ियादा सफ़ेद, शहद से ज़ियादा मीठा और मुश्क से ज़ियादा पाकीज़ा है। इस पर बरतन सितारों की ता'दाद से भी ज़ियादा हैं, जो इस का पानी पियेगा कभी प्यासा न होगा। हुज़ूर सुल्त़ाने मक्का व मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साहिबे मुअ़त्त़र पसीना, फ़ैज़ गन्जीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم इस से अपनी

www.dawateislami.net

उम्मत को सैराब फ़रमाएंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी नसीब फ़रमाए,

آمین بجاہ سیّدالمرسلین صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ و سلم

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, हिस्सा : 5, स. 305 व बहारे शरीअ़त, मआ़द व ह़श्र का बयान, ह़ौज़े कौसर, हिस्सए अव्वल, जि. 5 स. 145)

सुवाल : इन तमाम मर्ह़लों के बा'द आदमी कहां जाएंगे ?

जवाब : मुसलमान जन्नत में और काफ़िर दोज़ख़ में जाएंगे। अहले ईमान के सवाब और इन्आ़मात के लिये **अल्लाह** तआ़ला ने एक जगह बनाई है जिस में तमाम क़िस्म की जिस्मानी व रूह़ानी लज़्ज़तों के वोह सामान मुहय्या फ़रमाए हैं जो बड़े बड़े बादशाहों के ख़याल में भी नहीं आ सकते, इसी का नाम **जन्नत** है और गुनाहगारों के अ़ज़ाब व सज़ा के लिये भी एक दर्दनाक जगह बनाई है जिस का नाम **जहन्नम** या **दोज़ख़** है। इस में तमाम क़िस्म के तक्लीफ़ देने वाले अ़ज़ाबात मुहय्या किये गए हैं, जिन के तसव्वुर ही से रोंगटे खड़े होते हैं और ह़वास गुम हो जाते हैं अलबत्ता वोह सब गुनाहगार जिन का ख़ातिमा ईमान पर हुवा था अपने अपने अ़मल के मुताबिक़ नीज़ अम्बियाओ मलाइका عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और सालिह़ीन رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِمۡ की शफ़ाअ़त से जहन्नम से निकाले जाएंगे, सिर्फ़ काफ़िर बाक़ी रह जाएंगे, उस वक़्त जहन्नम का मुंह बन्द कर दिया जाएगा, जन्नतियों के चेहरे सफ़ेद व तरो ताज़ा होंगे, जब कि दोज़ख़ियों के सियाह व बे रोनक़। जन्नत व दोज़ख़ को बने हुवे हजारहा साल हुवे और वोह अब भी मौजूद हैं।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, हिस्सा : 5, स. 305)

सुवाल : आ'राफ़ किसे कहते हैं ?

जवाब : जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान में एक पर्दे की दीवार है। येह दीवार जन्नत की ने'मतों को दोज़ख़ तक और दोज़ख़ की तक्लीफ़ों को जन्नत तक पहुंचने से रोकने वाली होगी। इसी दरमियानी दीवार की बुलन्दी पर जो मक़ाम है उस को आ'राफ़ कहते हैं।

www.dawateislami.net

और अकसर पहले और पीछे आने वालों رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم से येह बात मन्क़ूल है कि अहले आ'राफ़ वोह लोग होंगे जिन की नेकियां और बदियां बराबर होंगी। जब येह लोग अहले जन्नत की त़रफ़ देखेंगे तो उन्हें सलाम करेंगे, येह सलाम करना अस्ल में बत़ौरे मुबारक बाद होगा और चूंकि अभी ख़ुद जन्नत में दाख़िल न हो सके लिहाज़ा इस की त़म्अ़ व आरज़ू करेंगे और आख़िरे कार येह लोग भी जन्नत में चले जाएंगे। (हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, हिस्सा : 5, स. 306)

सुवाल : क़ियामत के रोज़ सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की उम्मत की शनाख़्त कैसे होगी ?

जवाब : जिस वक़्त मैदाने मह़शर से पुल सिरात़ पर जाएंगे, वहां अन्धेरा होगा तब उन के ईमान और आ'माले सालिह़ा की रोशनी उन का साथ देगी और ईमान व त़ाअ़त का नूर उसी क़दर ज़ियादा होगा जितना अ़मल ज़ियादा होगा और ईमान मज़बूत होगा। येही नूर जन्नत की त़रफ़ उन की रहनुमाई करेगा और इस उम्मत की रोशनी सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े से दूसरी उम्मतों की रोशनियों से ज़ियादा साफ़ और तेज़ होगी। प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि क़ियामत के दिन मेरी उम्मत इस ह़ाल में बुलाई जाएगी कि उन के मुंह और हाथ पाउं आसारे वुज़ू से चमकते होंगे, तो जिस से हो सके चमक ज़ियादा करे।

(صحیح البخاری، کتاب الوضو،باب فضل الوضوء...الخ،الحدیث:١٣٦،ج١،ص٧١
व हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, हिस्सा : 5, स. 306)

सुवाल : दुख़ूले जन्नत व दोज़ख़ के बा'द क्या होगा ?

जवाब : जब सब जन्नती जन्नत में दाख़िल हो लेंगे और जहन्नम में सिर्फ़ वोही रह जाएंगे जिन को हमेशा के लिये इस में रहना है तो उस वक़्त जन्नत व दोज़ख़ के दरमियान मौत को मेंढे की त़रह़ ला कर खड़ा करेंगे। फिर एक मुनादी (ए'लान करने वाला) जन्नत वालों को पुकारेगा,

www.dawateislami.net

वोह डरते हुवे झांकेंगे कि कहीं ऐसा न हो कि हमें यहां से निकलने का हुक्म हो। फिर जहन्नमियों को पुकारा जाएगा वोह ख़ुश होते हुवे झांकेंगे कि शायद इस मुसीबत से रिहाई हो जाए, फिर उन सब से पूछेगा कि इसे पहचानते हो ? सब कहेंगे कि हां ! येह मौत है, फिर वोह ज़ब्ह़ कर दी जाएगी और फ़रमाएगा : ऐ अहले जन्नत ! हमेशगी है अब मरना नहीं और ऐ अहले नार ! हमेशगी है अब मौत नहीं। उस वक़्त अहले जन्नत के लिये ख़ुशी पर ख़ुशी है, और इसी त़रह़ दोज़ख़ियों के लिये ग़म बालाए ग़म।

نَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي الدِّيْنِ وَالدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ (तर्जमा : हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से दीनो दुन्या और आख़िरत में अ़फ़्वो आ़फ़िय्यत का सुवाल करते हैं। आमीन)

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, ह़िस्सा : 5, स. 306)

सुवाल : आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार कैसे होगा ?

जवाब : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का दीदार जो आख़िरत में हर सुन्नी मुसलमान को होगा वोह बिला कैफ़ होगा, या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ को देखेंगे लेकिन येह नहीं कह सकते कि कैसे देखेंगे। क्यूंकि जिस चीज़ को देखते हैं उस से कुछ फ़ासिला मसाफ़त का ज़रूर होता है, नज़दीक या दूर, नीज़ वोह शै देखने वाले से किसी सम्त में होती है या'नी ऊपर या नीचे, दाएं या बाएं, आगे या पीछे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार इन सब बातों से पाक होगा फिर रहा येह कि क्यूं कर होगा ? येही तो कहा जाता है कि "क्यूं कर" को यहां दख़्ल नहीं, اِنْ شَآءَ اللّٰه تَعَالٰی जब देखेंगे उस वक़्त बता देंगे और वक़्ते दीदार निगाह उस का इह़ात़ा कर ले जिसे इदराक भी कहते हैं, येह मुह़ाल है और ना मुमकिन अल वुक़ूअ़, इस लिये कि इह़ात़ा उसी चीज़ का हो सकता है जिस के ह़ुदूद और जिहात हों और **अल्लाह** तआ़ला के लिये ह़द व जिहत मुह़ाल है तो उस का इदराक व इह़ात़ा भी ना मुमकिन है और अहले सुन्नत का येही मज़हब है।

www.dawateislami.net

ग़रज़ आख़िरत में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का दीदार होना कुरआनो ह़दीस व इज्माए़ सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُم के दलाइले कसीरा से साबित है, क्यूंकि अगर दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ ना मुमकिन होता तो ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा عَلَیْہِ السَّلَام दीदार का सुवाल न करते। इस के इ़लावा अह़ादीसे करीमा से साबित है कि रब्बे ज़ीशान जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ में तजल्ली फ़रमाएगा। उन जन्नतियों के लिये नूर के, मोती के, याक़ूत के, ज़बरजद और सोने चांदी के मिम्बर बिछाए जाएंगे, ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ का दीदार ऐसा साफ़ होगा जैसे सूरज और चौदहवीं रात के चांद को हर एक अपनी अपनी जगह से देखता है कि एक का देखना दूसरे के देखने के लिये रुकावट नहीं होता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नज़दीक सब से ज़ियादा मुअ़ज़्ज़ज़ वोह है जो **अल्लाह** तआ़ला के वज्हे करीम का हर सुब्हो शाम दीदार पाएगा। सब से पहले हुज़ूरे अक़्दस صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ होगा। दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ ऐसी अ़ज़ीम ने'मत है कि इस के बराबर कोई ने'मत नहीं, जिसे एक बार दीदार मुयस्सर होगा वोह हमेशा हमेशा उस की लज़्ज़त में मुस्तग़रक़ रहेगा, कभी न भूलेगा।

(हमारा इस्लाम, आख़िरत के कुछ तफ़्सीली वाक़ेआ़त, ह़िस्सा : 5, स. 308-309)

शफ़ाअ़त का बयान

सुवाल : शफ़ाअ़त किसे कहते हैं और अहले सुन्नत का शफ़ाअ़त के बारे में क्या अ़क़ीदा है ?

जवाब : शफ़ाअ़त के मा'ना हैं कोई शख़्स अपने बड़े की बारगाह में अपने छोटे के लिये सिफ़ारिश करे। धमकी या दबाव से बात मनवाने को शफ़ाअ़त नहीं कहते और न ही शफ़ाअ़त डर कर या दब कर मानी जाती है। इतनी बात तो आ़म लोग भी जानते है कि दब कर बात मानना, क़बूले सिफ़ारिश नहीं बल्कि बुज़दिली व मजबूरी और नाचारी है।

www.dawateislami.net

अहले सुन्नत का अक़ीदा

ख़ास्साने ख़ुदा की शफ़ाअ़त ह़क़ है और इस पर इज्माअ़ है। ब कसरत आयाते क़ुरआन इस की गवाह हैं और इस बारे में बहुत ज़ियादा अह़ादीसे करीमा भी वारिद हैं। कुतुबे दीनिया इस से मालामाल हैं। इस अ़क़ीदे का ख़ुलासा येह है कि **अल्लाह** جَلَّ جَلَالُہٗ ख़ालिक़ो मालिक व शहनशाहे ह़क़ीक़ी है। उस को किसी से किसी क़िस्म का न तो लालच है और न ही डर, वोह तमाम आ़लम से ग़नी है और सब उस के मोह़ताज हैं। उसी ने अपनी क़ुदरते कामिला व ह़िक्मते बालिग़ा से अपने बन्दों में से अपने मह़बूबों को चुन लिया और अपने तमाम मह़बूबों का सरदार, मदनी ताजदार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, जनाबे अह़मदे मुख़्तार صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को किया। वोह ब कमाले बे नियाज़ी अपने करम से अपने मह़बूबाने किराम की नाज़ बरदारी फ़रमाता है। उस ने अपने मह़बूबों की अ़ज़्मत व जलालत और शाने मह़बूबिय्यत दीगर बन्दों पर ज़ाहिर फ़रमाने, इन की शानो शौकत व वजाहत दिखाने के लिये इन को अपने बन्दों का शफ़ीअ़ बनाया, उसी ने अपने मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की उम्मत के औलियाए किराम رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تعَالٰی عَلَیۡہِم को येह मर्तबा बख़्शा कि अगर वोह **अल्लाह** तबारक व तआ़ला पर किसी बात की क़सम खा लें तो रब्बे करीम جَلَّ جَلَالُہٗ इन की क़सम को सच्चा कर दे। उसी ने हमारे मालिक व आक़ा, ह़ज़रते सय्यिदुना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को अपना ख़लीफ़ए आ'ज़म और ह़बीबे मुकर्रम बनाया और इरशाद फ़रमाया कि :

وَلَسَوۡفَ یُعۡطِیۡکَ رَبُّکَ فَتَرۡضٰی ؕ﴿۵﴾

(پ۳۰،الضحیٰ:۵)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *"और बेशक क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हें इतना देगा कि तुम राज़ी हो जाओगे।"*

www.dawateislami.net

और इस इरशादे इलाही عَزَّوَجَلَّ पर महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने नाज़ उठाने वाले रब्बे बे नियाज़ عَزَّوَجَلَّ की बारगाहे करीम में अ़र्ज़ की, कि जब तो मैं हरगिज़ राज़ी न होऊंगा अगर मेरा एक उम्मती भी दोज़ख़ में रह गया।

(التفسیر الکبیر،پ ۳۰،سورۃ الضحی، تحت الایۃ:۵،ج ۱۱،ص ۱۹٤)

اَللّٰہُ اَکْبَر ! क्या शाने महबूबिय्यत है और कुरआने पाक ने किस एहतिमाम के साथ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का इस्बात फ़रमाया। रब्बे करीम ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से कैसे अ़ज़ीम वा'दे फ़रमाए हैं, और अपनी शाने करम से इन्हें राज़ी रखने का ज़िम्मा भी लिया है और हबीबे दावर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने किस शाने नाज़ से फ़रमाया कि जब येह करम है तो हम अपना एक उम्मती भी दोज़ख़ में न छोड़ेंगे।

(فَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى وَسَلَّمَ وَبَارَكَ عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَبَدًا اَبَدًا)

(हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, हिस्सा : 5, स. 269)

सुवाल : वोह कौन लोग हैं जिन की शफ़ाअ़त क़बूल होगी ?

जवाब : कुरआने करीम ने शफ़ाअ़त के सुबूत को दो उसूलों में मुन्हसिर रखा है। अव्वल क़ब्ल अज़ शफ़ाअ़त इज़्ने इलाही عَزَّوَجَلَّ, या'नी किसी की शफ़ाअ़त करने से पहले इजाज़ते इलाही हासिल होना। दुवुम शफ़ीअ़ का निहायत सादिक़ व रास्त बाज़ और पूरी, मा'क़ूल और ठीक बात कहने वाला होना। अहादीसे करीमा और कुतुबे अ़क़ाइद में मन्क़ूल है कि अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام व औलिया व उ़लमा व शुहदा व फ़ुक़रा رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِم की शफ़ाअ़त मौला करीम अपने करम से क़बूल फ़रमाएगा, बल्कि हुफ़्फ़ाज़, हुज्जाज और हर वोह शख़्स जिस को कोई मन्सबे दीनी इनायत हुवा, अपने अपने मुतअ़ल्लिक़ीन की शफ़ाअ़त करेंगे, बल्कि ना बालिग़ बच्चे जो मर गए हैं अपने मां बाप की

www.dawateislami.net

शफ़ाअ़त करेंगे । यहां तक कि उ़लमा के पास आ कर कुछ लोग अ़र्ज़ करेंगे कि हम ने आप को फुलां वक़्त वुज़ू के लिये पानी भर दिया था, कोई कहेगा कि मैं ने आप को इस्तिन्जा के लिये ढेला दिया था, इस पर वोह लोग उन की शफ़ाअ़त करेंगे, बल्कि ह़दीस शरीफ़ में तो यहां तक है कि मोमिन जब आतशे दोज़ख़ से ख़लासी पाएंगे तो अपने उन भाइयों की रिहाई के लिये जो नारे दोज़ख़ में होंगे, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में शफ़ाअ़त व सुवाल में मुबालग़ा करेंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से इजाज़त पा कर मुसलमानों की कसीर ता'दाद को पेहचान पेहचान कर दोज़ख़ से निकालेंगे ।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان ، ذکر الا خبا رعن وصف من یشفع فی القیامة....الخ، الحدیث:۷۳۳۳، ج۹، ص۲۳٤ व हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, हिस्सा : 5, स. 270 व बहारे शरीअ़त, मआ़द व ह़श्र का बयान, हिस्सा : 1, जि. 1, स. 139)

सुवाल : शफ़ाअ़त का त़ालिब कौन कौन होगा ?

जवाब : अह़ादीसे करीमा से साबित है कि हर मोमिन त़लबगारे शफ़ाअ़त होगा और तमाम मोमिनीने अव्वलीन व आख़िरीन के दिल में येह बात इल्हाम की जाएगी कि वोह शफ़ाअ़त त़लब करें । शारेह़ीने ह़दीस ने इस बात की वज़ाह़त फ़रमाई है कि त़ालिबे शफ़ाअ़त वोही लोग होंगे जो दुन्या में अपनी ह़ाजात के लिये अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام से तवस्सुल किया करते हैं, उन ही के दिल में येह बात कुदरतन पैदा होगी कि जब दुन्या में अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ह़ाजत बरआरी का वसीला थे तो यहां भी उन ही के ज़रीए़ से ह़ाजत रवाई होगी । (हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, हिस्सा : 5, स. 271)

सुवाल : बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में सब से पहले कौन शफ़ाअ़त करेगा ?

जवाब : हुज़ूर पुरनूर, शाफ़ेए़ यौमुन्नुशूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं : اَنَا اَوَّلُ شَافِعٍ وَّاَوَّلُ مُشَفَّعٍ

(سنن ابن ماجه، کتاب الزهد،باب ذکر الشفاعة، الحدیث:٤۳۰۸، ج٤،ص٥۲۲)

www.dawateislami.net

मैं ही सब से पहले शफ़ाअ़त करने वाला हूं और मेरी शफ़ाअ़त सब से पहले क़बूल होगी।

हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जब तक बाबे शफ़ाअ़त न खोलेंगे किसी को मजाले शफ़ाअ़त न होगी, बल्कि ह़क़ीक़तन जितने शफ़ाअ़त करने वाले हैं सब हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दरबारे गोहर बार में शफ़ाअ़त लाएंगे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में मख़्लूक़ात में सिर्फ़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शफ़ीअ़ हैं।

(हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, हिस्सा : 5, स. 272)

सुवाल : हुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त का आग़ाज़ कैसे होगा ?

जवाब : क़ियामत वाले दिन लोग क़ियामत की सख़्तियों में मुब्तला होंगे चुनान्चे, तमाम अहले मेह़शर के मश्वरे से येह बात तै़ पाएगी कि हम सब को ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में ह़ाज़िर होना चाहिये चुनान्चे, गिरते पड़ते उन की बारगाह में ह़ाज़िर हो कर शफ़ाअ़त की दरख़्वास्त करेंगे वोह उन्हें ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की ख़िदमत में भेजेंगे नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام फ़रमाएंगे तुम इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَیْہِ السَّلَام के पास जाओ, वोह ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के पास भेजेंगे, मूसा عَلَیْہِ السَّلَام, ईसा عَلَیْہِ السَّلَام के पास भेजेंगे वोह फ़रमाएंगे तुम उन के पास जाओ जिन के हाथ पर फ़त्ह़ (खोलना) रखी गई है, जो आज बे ख़ौफ़ और वोह तमाम औलादे आदम के सरदार हैं, वोह ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, वोह आज तुम्हारी शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, तुम मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जाओ। येह लोग फिरते फिराते, ठोकरें खाते, दुहाई देते बारगाहे बेकस पनाह, शाफ़ेए रोज़े जज़ा मह़बूबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم में ह़ाज़िर हो कर पहले आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

के बहुत से फ़ज़ाइल बयान करेंगे, फिर जब शफ़ाअ़त के लिये अ़र्ज़ करेंगे तो रह़मत वाले आक़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم जवाब में इरशाद फ़रमाएंगे : ''اَنَا لَهَا اَنَا لَهَا اَنَا صَاحِبُكُمْ''

(صحیح البخاری ، کتاب التوحید، باب کلام الرب...الخ،الحدیث: ۷۵۱۰،ج٤،ص٥٧٦
والمعجم الکبیر للطبرانی، ابو عثمان النهدی عن سلمان...الخ،الحدیث: ٦١١٧،ج٦،ص٢٤٧)

मैं इस काम के लिये हूं, मैं इस काम के लिये हूं, मैं ही वोह हूं जिसे तुम तमाम जगह ढूंड आए, येह फ़रमा कर बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त عَزَّوَجَلَّ में सजदा करेंगे, इरशाद होगा :

''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपना सर उठाओ और कहो, तुम्हारी बात सुनी जाएगी और मांगो, जो कुछ मांगोगे मिलेगा, और शफ़ाअ़त करो तुम्हारी शफ़ाअ़त मक़्बूल है।''

अल्लाह अल्लाह ! येह है करमे इलाही عَزَّوَجَلَّ की नाज़ बरदारी और हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने मह़बूबी कि ह़बीब का सर सजदए नियाज़ में है और अभी ह़र्फ़े शफ़ाअ़त ज़बाने अक़्दस पर नहीं आया कि रह़मते ह़क़ ने सब्क़त की और अपने ह़बीब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की दिलदारी व रिज़ाजूई फ़रमाई : ''ऐ मुह़म्मद صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ! अपना सर उठाओ और कहो, तुम्हारी बात सुनी जाएगी और मांगो, जो कुछ मांगोगे दिया जाएगा और शफ़ाअ़त करो तुम्हारी शफ़ाअ़त मक़्बूल है।'' फिर इस के बा'द शफ़ाअ़त का सिलसिला शुरूअ़ होगा ह़त्ता कि जिस के दिल में राई के दाने से भी कम ईमान होगा उस के लिये भी शफ़ाअ़त फ़रमा कर उसे जहन्नम से निकालेंगे। फिर तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام अपनी अपनी उम्मत की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे। (हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 272)

www.dawateislami.net

सुवाल : हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त कितनी त़रह़ की होगी ?

जवाब : हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त कई त़रह़ की होगी मसलन : ﴾1﴿ शफ़ाअ़ते कुब्रा । ﴾2﴿ बहुतों को बिला ह़िसाब जन्नत में दाख़िल फ़रमाएंगे, जिन में से चार अरब नव्वे करोड़ की ता'दाद मा'लूम है, इस से बहुत ज़ाइद और भी हैं जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के इ़ल्म में हैं । ﴾3﴿ बहुत से वोह होंगे जो मुस्तह़िक़े जहन्नम हो चुके होंगे उन को जहन्नम से बचाएंगे । ﴾4﴿ बा'ज़ों की शफ़ाअ़त फ़रमा कर जहन्नम से निकालेंगे । ﴾5﴿ बा'ज़ों के दरजात बुलन्द फ़रमाएंगे । ﴾6﴿ बा'ज़ का अ़ज़ाब कम करवाएंगे । ﴾7﴿ जिन की नेकियां और गुनाह बराबर होंगे उन्हें भी दाख़िले जन्नत फ़रमाएंगे ।

(बहारे शरीअ़त, अ़क़ाइद मुतअ़ल्लिक़ए नबुव्वत, ह़िस्सा : 1, जि. 1, स. 70 व हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 273)

सुवाल : शफ़ाअ़ते कुब्रा क्या है ?

जवाब : हुज़ूरे अक़्दस, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की वोह शफ़ाअ़त जो तमाम मख़्लूक़ मोमिन, काफ़िर, फ़रमां बरदार, ना फ़रमान, मुवाफ़िक़, मुख़ालिफ़, दोस्त और दुश्मन सब के लिये होगी, वोह ह़िसाब का इन्तिज़ार इन्तिहाई जां गुज़ा होगा जिस के लिये लोग तमन्नाएं करेंगे कि काश हम जहन्नम में फेंक दिये जाते और इस इन्तिज़ार से नजात पाते, उस बला से कुफ़्फ़ार को भी छुटकारा हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ब दौलत मिलेगा, जिस पर तमाम अव्वलीन व आख़िरीन मुवाफ़िक़ीन व मुख़ालिफ़ीन, मोमिनीन व काफ़िरीन सब हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़म्द करेंगे, इसी का नाम "मक़ामे मह़मूद" है और येह मर्तबए शफ़ाअ़ते कुब्रा सिर्फ़ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ही का ख़ास्सा है ।

(हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 274)

www.dawateislami.net

सुवाल : वोह शख़्स कैसा है जो शफ़ाअ़त का इन्कार करे ?

जवाब : चूंकि बे शुमार आयात व अहादीस और इज्माए़ उम्मत से शफ़ाअ़त साबित है, लिहाज़ा इस का इन्कार वोही करेगा जो गुमराह है। या येह कह देना कि कोई किसी का वकील व सिफ़ारिशी नहीं, कुरआनो ह़दीस की सरीह़ मुख़ालफ़त है, बल्कि ख़ुदा व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم पर बोहतान बांधना और नई शरीअ़त घड़ना है। (हमारा इस्लाम, शफ़ाअ़त का बयान, हिस्सा : 5, स. 274 मुलतक़त़न)

तक़्लीद का बयान

सुवाल : तक़्लीद किसे कहते हैं ?

जवाब : तक़्लीद के शरई मा'ना हैं किसी के क़ौल व फ़े'ल को अपने लिये हुज्जत बना कर दलीले शरई पर नज़र किये बिग़ैर मान लेना, येह समझ कर कि वोह अहले तह़क़ीक़ से है और उस की बात शरअ़न मुतह़क़्क़िक़ और क़ाबिले ए'तिमाद है। जैसा कि हम मसाइले शरइ़य्या में इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना नो'मान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का क़ौल व फ़े'ल अपने लिये दलील समझते हैं और दलाइले शरइ़य्या में ख़ुद नज़र नहीं करते, ख़्वाह वोह कुरआनो ह़दीस या इज्माए़ उम्मत को देख कर मस्अला बयान फ़रमाएं या अपने क़ियास से हुक्म दें। तक़्लीद करना वाजिब है और तक़्लीद करने वाले को मुक़ल्लिद कहते हैं जैसे हम ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मुक़ल्लिद हैं।

(हमारा इस्लाम, तक़्लीद का बयान, हिस्सा : 4, स. 203)

सुवाल : तक़्लीद किन मसाइल में की जाती है ?

जवाब : शरई मसाइल तीन त़रह़ के होते हैं :

﴿1﴾ अ़क़ाइद, जिन का समझ लेना और क़ल्ब में रासिख़ व मह़फ़ूज़

www.dawateislami.net

कर लेना ज़रूरी है और चूंकि येह उसूले दीन हैं इस लिये इन में कोई तरमीम व तन्सीख़, कमी व बेशी भी नहीं।

﴾2﴿ वोह अह़काम जो क़ुरआनो ह़दीस से सराह़तन साबित हैं, किसी मुज्तहिद के इजतिहाद या क़ियास को उन के सुबूत में कोई दख़्ल नहीं मसलन पन्ज वक़्ता नमाज़ और रोज़ए माहे रमज़ान, ह़ज, ज़कात वग़ैरा फ़राइज़ और ऐसे ही दीगर अह़काम।

﴾3﴿ वोह अह़काम जो क़ुरआनो ह़दीस में इजतिहाद से ह़ासिल किये जाएं, इन में से उसूले अ़क़ाइद में किसी की तक़्लीद जाइज़ नहीं, यूंही जो अह़काम क़ुरआनो ह़दीस से सराह़तन (वज़ाह़त से) साबित हैं इन में भी किसी की तक़्लीद जाइज़ नहीं या'नी हम जो इन मसाइल को मानते हैं और अ़मल करते हैं तो वोह इस लिये नहीं कि इमामे आ'ज़म ने फ़रमाया है बल्कि इस लिये मानते हैं कि क़ुरआनो ह़दीस में इन का सराह़तन ज़िक्र आया है और तीसरी क़िस्म के मसाइल जो क़ुरआनो ह़दीस व इज्माए़ उम्मत से इजतिहाद कर के निकाले जाएं उन में ग़ैर मुज्तहिद पर तक़्लीद वाजिब है और मुज्तहिद के लिये तक़्लीद मन्अ़।

(हमारा इस्लाम, तक़्लीद का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 203)

सुवाल : मुज्तहिद कौन होता है ?

जवाब : मुज्तहिद वोह बालिग़ और सह़ीहुल अ़क़्ल मुसलमान है जिस में इस क़दर इ़ल्मी लियाक़त और क़ाबिलिय्यत हो कि क़ुरआनी इशारात व किनायात को समझ सके और कलाम के मक़्सद को पेहचान सके। नासिख़ व मन्सूख़ का पूरा इ़ल्म रखता हो, इ़ल्मे सर्फ़ व नह़व व बलाग़त वग़ैरा में उस को पूरी महारत ह़ासिल हो, अह़काम की तमाम आयतों और अह़ादीस पर उस की नज़र हो, तमाम मसाइले जुज़्इय्या को क़ुरआनो ह़दीस से अख़ज़ कर के हर हर मस्अले का माख़ज़ और उस की दलील को अच्छी त़रह़ जानता हो कि येह मस्अला उस

www.dawateislami.net

आयत, या फ़ुलां ह़दीस से माख़ूज़ है। इस के इ़लावा ज़की और ख़ुश फ़हम भी हो। (हमारा इस्लाम, तक़्लीद का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 204)

सुवाल : फ़िक़्ह किसे कहते हैं और फ़क़ीह कौन है ?

जवाब : मसाइले जुज़्इय्या अ़मलिय्या और अह़कामे शरइय्या जो कुरआनो ह़दीस में जा ब जा फैले हुवे थे, अइम्मए मुज्तहिदीन رِضْوَانُ اللّٰهِ عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने लोगों की आसानी के लिये जिस मौक़अ़ से और जिस त़रह़ मफ़्हूम होते थे, इन को उसी उ़नवान से अख़ज़ किया। इसी त़रह़ जो मसाइल इज्माए़ उम्मत और क़ियास से साबित हुवे इन सब को ले कर हर क़िस्म के मसाइल को जुदा जुदा बाबों और फ़स्लों में जम्अ़ कर के उस मजमूए़ का नाम फ़िक़्ह रख दिया तो इन मसाइल पर अ़मल करना ऐ़न कुरआनो ह़दीस और इज्माए़ उम्मत पर अ़मल करना है और इस इ़ल्मे फ़िक़्ह में महारत रखने वाले उ़लमा को फ़क़ीह या फ़ुक़्हा कहा जाता है। (हमारा इस्लाम, तक़्लीद का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 204)

सुवाल : मज़्हब किसे कहते हैं ?

जवाब : दीन के फ़रोई मसाइल और अह़कामे जुज़्इय्या में किसी इमामे मुज्तहिद का वोह आईन या दस्तूरुल अ़मल जो उन्हों ने कुरआनो ह़दीस और इज्माए़ उम्मत से अख़ज़ किया, उसे मज़्हब कहते हैं। इस बात को यूं समझें कि दीन अस्ल है और मज़्हब इस की शाख़। ह़दीस शरीफ़ के मुत़ाबिक़ दुन्या व आख़िरत में नजात पाने वाला मुसलमानों का बड़ा गुरौह जिसे सवादे आ'ज़म फ़रमाया, वोह अहले सुन्नत व जमाअ़त का है और येह नाजी (नजात पाने वाला) गुरौह **अहले सुन्नत व जमाअ़त** आज चार मज़ाहिब ह़नफ़ी, मालिकी, शाफ़ेई, ह़म्बली में जम्अ़ हो गया है।

(हमारा इस्लाम, तक़्लीद का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 205 मुल्तक़त़न)

www.dawateislami.net

बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा

सुवाल : बिदअ़त किसे कहते हैं और इस की कितनी अक़्साम हैं ? हर एक की वज़ाहत करें।

जवाब : बिदअ़त उस नई चीज़ को कहते हैं जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दुन्या से पर्दा फ़रमाने के बा'द दीन में निकली हो, फिर इस की दो क़िस्में हैं, एक बिदअ़ते ज़लालत, जिस को बिदअ़ते सय्यिअह भी कहते हैं और दूसरी बिदअ़ते महमूदा, जिस को बिदअ़ते ह़सना भी कहते हैं।

बिदअ़ते सय्यिअह वोह नौ पैदा बात है जो किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और ह़दीसे नबवी और इज्माए़ उम्मत के मुख़ालिफ़ हो या यूं कहना चाहिये कि जो नौ पैदा बात किसी ऐसी चीज़ के तह़त दाख़िल हो जिस की बुराई शरअ़ से साबित है तो वोह बुरी और बिदअ़ते सय्यिअह है और येह कभी मकरूह और कभी ह़राम होती है। और वोह नौ पैदा बात या नई चीज़ जो किताबुल्लाह عَزَّوَجَلَّ और ह़दीसे रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और इज्माए़ उम्मत के मुख़ालिफ़ न हो वोह बिदअ़ते महमूदा या बिदअ़ते ह़सना कहलाती है। इस बात को यूं समझें कि जो नई बात किसी ऐसी चीज़ के तह़त दाख़िल हो जिस की ख़ूबी शरअ़ से साबित है तो वोह अच्छी बात और बिदअ़ते ह़सना है और येह बिदअ़त कभी मुस्तह़ब, बल्कि सुन्नत और कभी वाजिब तक होती है।

(हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे सग़ीरा व कबीरा, ह़िस्सा : 4, स. 197)

सुवाल : सह़ाबए किराम या ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के बा'द जो बात नई पैदा हो, क्या वोह भी बिदअ़ते सय्यिअह है ?

जवाब : किसी नौ पैदा बात का बिदअ़ते सय्यिअह या ह़सना होना किसी ज़माने पर मौक़ूफ़ नहीं है बल्कि क़ुरआनो सुन्नत और इज्माए़ उम्मत की मुवाफ़िक़त या मुख़ालफ़त पर है। लिहाज़ा जिस अम्र की अस्ल, शरीअ़त

www.dawateislami.net

से साबित हो या'नी किताब व सुन्नत और इज्माअ़ के मुख़ालिफ़ न हो वोह हरगिज़ बिदअ़ते सय्यिअह नहीं, ख़्वाह किसी भी ज़माने में हो, खुद सह़ाबए किराम, ताबेईन और तब्अ़ ताबेईन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के ज़माने में येह बात राइज थी कि अपने ज़माने की बा'ज़ नई पैदा होने वाली चीज़ों को मन्अ़ करते और बा'ज़ को जाइज़ रखते। चुनान्चे, अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तरावीह़ की जमाअ़त की निस्बत फ़रमाते हैं :

''نِعْمَتِ الْبِدْعَةُ هٰذِهٖ'' येह क्या ही अच्छी बिदअ़त है।

(المؤطا للامام مالك، كتاب الصلاة فى رمضان، باب ماجاء فى قيام رمضان، الحديث:٢٥٥، ج١، ص١٢٠)

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने साह़िब ज़ादे को नमाज़ में बिस्मिल्लाह ब आवाज़ पढ़ते सुन कर फ़रमाया ''اَیْ بُنَیَّ مُحْدَثٌ اِیَّاكَ وَالْحَدَثَ''

(سنن الترمذى، كتاب الصلاة، باب ماجاء فى ترك الجهر ...الخ، الحديث:٢٤٤، ج١، ص٢٧٧)

ऐ मेरे बेटे ! येह नौ पैद बात है, नई बातों से बच। तो मा'लूम हुवा कि उन के नज़दीक भी किसी काम का अपने ज़माने में होने या न होने पर मदार न था बल्कि नफ़्से फ़े'ल को देखते अगर उस में कोई शरई ख़राबी न होती तो इजाज़त देते वरना मन्अ़ फ़रमा देते और उन्हें बुरा कहते।

ख़ुद रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने नेक बात पैदा करने वाले को सुन्नत निकालने वाला फ़रमाया तो क़ियामत तक नई नई बातें पैदा करने की इजाज़त अ़त़ा फ़रमाई और येह कि जो नई (अच्छी) बात निकालेगा, सवाब पाएगा और क़ियामत तक जितने इस पर अ़मल करेंगे सब का सवाब उसे मिलेगा,

(المعجم الاوسط، من اسمه مقدام، الحديث:٨٩٤٦، ج٦، ص٣٣١)

चाहे वोह इबादत हो या कोई अदब की बात या कुछ और हो मगर इस से कोई येह न समझे कि किसी भी ज़माने के जाहिल जो बात चाहें अपनी त़रफ़ से निकाल लें और वोह बिदअ़ते ह़सना हो जाए।

www.dawateislami.net

येह मुआ़मला उ़लमाए दीन और पाबन्दे शरअ़ मुसलमानों के बारे में है कि येह जो अम्र ईजाद कर लें और उसे जाइज़ व मुस्तह़ब कहें वोह बेशक जाइज़ व मुस्तह़ब है, इस नेक बात का करने वाला सुन्नी ही कहलाएगा बिदअ़ती नहीं।

(हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा, हिस्सा : 4, स. 198)

सुवाल : गुनाह किसे कहते हैं और वोह कितनी क़िस्म के होते हैं? इन की वज़ाह़त करें।

जवाब : ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ व रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी या'नी अह़कामे शरीअ़त पर अ़मल न करना गुनाह और मा'सिय्यत है। गुनाह करने वाला गुनाहगार या आ़सी कहलाता है। गुनाह आदमी को ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से दूर करता है और उसे सवाब से मह़रूम और अ़ज़ाब का मुस्तह़िक़ बनाता है गुनाह की दो क़िस्में हैं : ﴿1﴾ सग़ीरा और ﴿2﴾ कबीरा। सग़ीरा वोह गुनाह है जिस के करने पर शरीअ़त में कोई वईद नहीं आई, या'नी इस की कोई ख़ास सज़ा बयान नहीं की गई है। आदमी कोई नेकी, इ़बादत, सदक़ा, इ़ताअ़ते वालिदैन वग़ैरा करता है तो इस की बरकत से सग़ीरा गुनाह मुआ़फ़ हो जाता है। जैसा कि ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जिस ने कामिल वुज़ू किया फिर नमाज़ के लिये खड़ा हुवा तो वोह गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे आज ही उस की मां ने उसे जना हो। (المعجم الاوسط للطبرانی،من اسمه موسیٰ، الحدیث:۷۹٤۷، ج٦، ص٤٦)

ग़रज़ येह गुनाह बिला तौबा भी मुआ़फ़ हो जाते हैं, मगर शर्त यह है कि इस पर इसरार न हो (या'नी जानबूझ के इसे करता न रहे) कि गुनाहे सग़ीरा इसरार से गुनाहे कबीरा बन जाते हैं, और फिर तौबा किये बिग़ैर इस की मुआ़फ़ी नहीं होती। और कबीरा वोह गुनाह हैं जिस पर वईद आई, या'नी वा'दए अ़ज़ाब दिया गया। कबीरा गुनाहों से आदमी ख़ालिस तौबा व इस्तिग़फ़ार किये बिग़ैर पाक नहीं होता।

(हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा, हिस्सा : 4, स. 199-200)

www.dawateislami.net

सुवाल : गुनाहे कबीरा कौन से हैं और क्या गुनाहे कबीरा करने वाला मुसलमान रहता है या नहीं ?

जवाब : कुरआनो ह़दीस में जिन कबीरा गुनाहों का ज़िक्र आया है उन में से कुछ येह हैं : ना ह़क़ क़त्ल करना, चोरी करना, यतीम का माले ना ह़क़ खाना, मां बाप को ईज़ा देना, सूद खाना, शराब पीना, झूटी गवाही देना, नमाज़ न पढ़ना, रमज़ान का रोज़ा न रखना, ज़कात न देना, झूटी क़सम खाना, नाप तोल में कमी बेशी करना, मुसलमानों से ना ह़क़ लड़ाई करना, रिश्वत लेना या देना, चुग़ली खाना, किसी मुसलमान की ग़ीबत करना, कुरआन शरीफ़ भूल जाना, उ़लमाए दीन की बे इ़ज़्ज़ती करना, खुदा عَزَّوَجَلَّ की मग़फ़िरत से ना उम्मीद होना, खुदा عَزَّوَجَلَّ के अ़ज़ाब से बे ख़ौफ़ होना, फ़ुज़ूल ख़र्ची करना, खेल तमाशे में अपना पैसा और वक़्त बरबाद करना, दाढ़ी मुंडाना या एक मुठ्ठी से कम रखना, खुदकुशी करना वग़ैरा।

गुनाहे कबीरा का मुर्तकिब मुसलमान है और जन्नत में जाएगा, ख़्वाह **अल्लाह** तआ़ला मह़ज़ अपने फ़ज़्ल से उस की मग़फ़िरत फ़रमा दे या हुज़ूरे अन्वर, शाफ़ेए महशर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की शफ़ाअ़त के बा'द उसे बख़्श दे या अपने किये की कुछ सज़ा पा कर बख़्शा जाए, बहर ह़ाल वोह जन्नत में जाएगा और इस के बा'द कभी जन्नत से न निकलेगा। (हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा, ह़िस्सा : 4, स. 200)

सुवाल : गुनाहे कबीरा की मुआ़फ़ी की सूरत क्या है ?

जवाब : गुनाह की दो सूरतें हैं, एक बन्दे का वोह गुनाह जो ख़ालिस उस के और उस के परवर दगार عَزَّوَجَلَّ के मुआ़मले में हो मसलन (बिला उ़ज़्रे शरई) फ़र्ज़ नमाज़ छोड़ना, या माहे रमज़ान का रोज़ा तर्क करना वग़ैरा। इस क़िस्म के गुनाहों से मुआ़फ़ी की सूरत में इतना ही काफ़ी है कि आदमी सच्चे दिल से तौबा करे। या'नी जो गुनाह कर चुका उस पर नादिम व शरमिन्दा हो, बारगाहे इलाही عَزَّوَجَلَّ में गिड़गिड़ा कर उस की मुआ़फ़ी चाहे और आयिन्दा के लिये उस गुनाह से बाज़ रहने का अ़ज़्म

www.dawateislami.net

बिल जज़्म, क़त्ई पुख़्ता इरादा कर ले। मौला तआ़ला करीम है, उस की रह़मत बहुत वसीअ़ है, उस की रह़मत से उम्मीद है कि वोह मुआ़फ़ फ़रमा दे और दर गुज़र फ़रमाए। हां ! इस सूरत में फ़राइज़ और वाजिबात की क़ज़ा लाज़िम है।

दूसरी क़िस्म के वोह गुनाह हैं जो बन्दों के बाहमी (आपस के) मुआ़मलात में हों कि आदमी किसी के दीन, आबरू, जान, माल, जिस्म या सिर्फ़ क़ल्ब को आज़ार व तक्लीफ़ पहुंचाए, जैसे किसी को गाली दी, मारा पीटा, बुरा कहा, ग़ीबत की या किसी का माल चुराया, छीना, लूटा, या रिश्वत, सूद, जूए वग़ैरा में लिया। इन तमाम सूरतों में जब तक बन्दा मुआ़फ़ न करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मुआ़फ़ नहीं फ़रमाता। क्यूंकि येह मुआ़मला हुक़ूक़ुल इबाद (बन्दों के हुक़ूक़) का है, अगर्चे **अल्लाह** तआ़ला हमारा, हमारे जानो माल व हुक़ूक़ सब का मालिक है, जिसे चाहे हमारे हुक़ूक़ छोड़ दे मगर उस की अ़दालत का क़ानून येही है कि उस ने हमारे हुक़ूक़ का इख़्तियार हमारे हाथ में रखा है और हमारे मुआ़फ़ किये बिग़ैर मुआ़फ़ी मिलने की सूरत न रखी। लिहाज़ा इस क़िस्म के गुनाहों में जिन का तअ़ल्लुक़ बन्दों से है, तौबा क़बूल होने के लिये उस बन्दे से मुआ़फ़ कराना भी ज़रूरी है कि जब तक साहिबे ह़क़ मुआ़फ़ न करेगा मुआ़फ़ी न मिलेगी।

(हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा, ह़िस्सा : 4, स. 200)

सुवाल : तौबा किसे कहते हैं और तौबा किस त़रह़ की जाती है ?

जवाब : तौबा की अस्ल, रुजूए इलल्लाह है। या'नी ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की फ़रमां बरदारी व इत़ाअ़त की त़रफ़ पलटना। इस के तीन रुक्न हैं : ﴿1﴾ गुनाह का ए'तिराफ़ ﴿2﴾ गुनाह पर नदामत ﴿3﴾ गुनाह से बाज़ रहने का क़त्ई इरादा।

और अगर गुनाह क़ाबिले तलाफ़ी हो तो उस की तलाफ़ी भी लाज़िम है मसलन बे नमाज़ी की तौबा के लिये पिछली नमाज़ों की क़ज़ा पढ़ना भी ज़रूरी है मौला तआ़ला करीम है, उस के करम के

www.dawateislami.net

दरवाज़े हर वक़्त बन्दों के लिये खुले हुवे हैं। लिहाज़ा तौबा करने में जिस क़दर मुमकिन हो जल्दी करनी चाहिये। तौबा करने में आज कल (या'नी टाल मटोल) करना मुसलमान की शान नहीं। क्या ख़बर मौत उसे मोहलत दे या न दे, पल की ख़बर नहीं, कल किस ने देखी है और बेहतर येह है कि जब अपने लिये दुआ़ए मग़फ़िरत या कोई भी दुआ़ करे तो सब अहले इस्लाम को इस में शरीक कर ले (या'नी उन के लिये भी दुआ़ करे) क्यूंकि अगर येह ख़ुद क़ाबिले अ़त़ा नहीं तो किसी बन्दे के तुफ़ैल मुराद को पहुंच जाए। चुनान्चे, ह़दीस शरीफ़ में आया है कि जो कोई तमाम मोमिन मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ़ए मग़फ़िरत करता है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के लिये हर मोमिन मर्द व औ़रत के इ़वज़ एक नेकी लिख देता है। (جمع الجوامع للسیوطی،حرف المیم،الحدیث ۲۰۲۳۱، ج٦،ص٤١٦)

और औलियाए किराम व उ़लमाए इ़ज़ाम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم की मजलिसों में दुआ़ए मग़फ़िरत करना बहुत बेहतर है, कि येह वोह लोग हैं जिन के पास बैठने वाला बद बख़्त और मह़रूम नहीं रहता। यूंही औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم के मज़ारात पर ह़ाज़िर हो कर या उन के वसीले से इस्तिग़फ़ार करना क़बूलिय्यते दुआ़ का बाइ़स है क्यूंकि इन के क़ुर्बो जवार पर रह़मतें नाज़िल होती हैं। यहां जो दुआ़एं मांगी जाती हैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ क़बूल फ़रमाता है। बिल ख़ुसूस ह़ुज़ूरे अक़्दस, नूरे मुक़द्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में तो ह़ाजत बर आरी का ज़रीआ़ए आ'ला व अर्फ़अ़ हैं। जिस पर येह आयते करीमा बिल्कुल वाज़ेह़ व रोशन दलील है।

وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْۤا اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ﴿۶۴﴾

(پ٥،النساء:٦٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और अगर जब वोह अपनी जानों पर ज़ुल्म करें तो ऐ मह़बूब ! तुम्हारे ह़ुज़ूर ह़ाज़िर हों और फिर* **अल्लाह** *से मुआ़फ़ी चाहें और रसूल उन की शफ़ाअ़त फ़रमाए तो ज़रूर* **अल्लाह** *को बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान पाएं।*

www.dawateislami.net

ह़ालांकि **अल्लाह** سبحانهٗ وتعالیٰ जिसे चाहे, जिस त़रह़ चाहे मुआ़फ़ फ़रमा सकता है । फिर भी अपने बन्दों को अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर होने का हुक्म इरशाद फ़रमा रहा है । (हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा, ह़िस्सा : 4, स. 201)

चुनान्चे, इसी आयते करीमा की त़रफ़ इशारा फ़रमाते हुवे मेरे आक़ाए ने'मत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, आ़शिक़े माहे नबुव्वत, पीरे त़रीक़त, आ़लिमे शरीअ़त, सय्यिदी व मुर्शिदी आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن इरशाद फ़रमाते हैं :

मुजरिम बुलाए आए हैं جَآءُوْكَ है गवाह
फिर रद हो कब येह शान करीमों के दर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 144)

मांगेंगे मांगे जाएंगे मुंह मांगी पाएंगे
सरकार में न ला है न ह़ाजत अगर की है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, ह़िस्सा : 1, स. 159)

ह़ज़रते आदम عَلَیْہِ السَّلَام और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم की सुन्नत

सरकारे मदीनए मुनव्वरा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की क़ब्रे अन्वर पर ह़ाजत के लिये जाना सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم के अ़मल से भी साबित है और हुक्मे मज़्कूर में भी दाख़िल है । और मक़्बूलाने बारगाह عَزَّوَجَلَّ के वसीले से दुआ़ करना या'नी ब ह़क़्क़े फ़ुलां या बि जाहि फ़ुलां कह कर मांगना जाइज़, बल्कि ह़ज़रते सय्यिदुना आदम عَلَیْہِ السَّلَام की सुन्नत है कि आप عَلَیْہِ السَّلَام ने हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जाहो मर्तबत के तुफ़ैल में मग़्फ़िरत चाही और ह़क़ तआ़ला ने उन की मग़्फ़िरत फ़रमाई ।

(हमारा इस्लाम, बिदअ़त और गुनाहे कबीरा व सग़ीरा, ह़िस्सा : 4, स. 202)

www.dawateislami.net

त़हारत के मसाइल

सुवाल : त़हारत का क्या मत़लब है और इस की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब : त़हारत का मत़लब येह है कि नमाज़ी का बदन, इस के कपड़े और वोह जगह जिस पर नमाज़ पढ़नी है नजासत से पाक साफ़ हो। त़हारत की दो क़िस्में हैं : ﴾1﴿ त़हारते सुग़रा ﴾2﴿ त़हारते कुब्रा।

त़हारते सुग़रा वुज़ू है और **त़हारते कुब्रा** गुस्ल है।

जिन चीज़ों से सिर्फ़ वुज़ू लाज़िम आता है उन को ह़दसे असग़र कहते हैं और जिन से गुस्ल फ़र्ज़ हो उन को ह़दसे अक्बर कहा जाता है।

(हमारा इस्लाम, नमाज़ की शर्तें अव्वल, त़हारत ह़िस्सा : 2, स. 72)

सुवाल : नजासत की कितनी क़िस्में हैं और इन का हुक्म और इन से पाक होने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : नजासत की दो क़िस्में हैं :﴾1﴿ हुक्मिय्या ﴾2﴿ ह़क़ीक़िय्या।

नजासते हुक्मिय्या : वोह है जो नज़र नहीं आती, या'नी सिर्फ़ शरीअ़त के हुक्म से उसे नापाकी कहते हैं जैसे बे वुज़ू होना, या गुस्ल की ह़ाजत होना।

पाक होने का त़रीक़ा : जहां वुज़ू करना लाज़िमी हो वहां वुज़ू करना, और जहां गुस्ल की ह़ाजत हो वहां गुस्ल करना।

नजासते ह़क़ीक़िय्या : वोह नापाक चीज़ है जो कपड़े या बदन वग़ैरा पर लग जाए तो ज़ाहिर त़ौर पर मा'लूम हो जाती है जैसे पाख़ाना, पेशाब वग़ैरा। फिर नजासते ह़क़ीक़िय्या की भी दो क़िस्में हैं :

﴾1﴿ ग़लीज़ा ﴾2﴿ ख़फ़ीफ़ा।

नजासते ग़लीज़ा वोह है जिस का हुक्म सख़्त है और **नजासते ख़फ़ीफ़ा** वोह है जिस का हुक्म हल्का है।

पाक होने का त़रीक़ा :

﴾1﴿ **नजासते ग़लीज़ा का हुक्म** येह है कि अगर कपड़े या बदन में एक दिरहम से ज़ियादा लग जाए तो उस का पाक करना फ़र्ज़ है। बे पाक किये नमाज़ होगी ही नहीं। और अगर दिरहम के बराबर है तो पाक

www.dawateislami.net

करना वाजिब है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो मकरूहे तह़रीमी हुई या'नी ऐसी नमाज़ का इआ़दा वाजिब है और अगर दिरहम से कम है तो पाक करना सुन्नत है कि बे पाक किये नमाज़ पढ़ी तो हो गई मगर ख़िलाफ़े सुन्नत हुई, इस का लौटाना बेहतर है।

﴾2﴿ **नजासते ख़फ़ीफ़ा का हुक्म** येह है कि कपड़े के ह़िस्से या बदन के जिस उ़ज़्व में लगी है अगर उस की चौथाई से कम है तो मुआ़फ़ हो जाएगी और अगर पूरी चौथाई में हो तो इस का धोना वाजिब है। और अगर ज़ियादा हो तो इस का पाक करना फ़र्ज़ है, बे धोए नमाज़ होगी ही नहीं।

(हमारा इस्लाम, नमाज़ की शर्तें अव्वल, त़हारत ह़िस्सा : 2, स. 73-74 मुल्तक़त़न)

सुवाल : अगर किसी पतली चीज़ में नजासत गिर जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब : नजासत अगर किसी पतली चीज़ मसलन पानी या सिर्का में गिरे तो चाहे ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा, वोह चीज़ कुल नापाक हो जाएगी अगर्चे एक क़त़रा ही गिरे। जब तक वोह पतली चीज़ ह़द्दे कसरत पर या'नी दह दर दह न हो।

(बहारे शरीअ़त, नजासतों के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम, ह़िस्सा : 2, जि. 1 स. 390)

सुवाल : कौन कौन सी चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं ?

जवाब : इन्सान का पेशाब, पाख़ाना, बहता ख़ून, पीप, मुंह भर क़ै, दुखती आंख का पानी, ह़राम चोपायों का पेशाब, पाख़ाना, घोड़े की लीद और हर ह़लाल जानवर का पाख़ाना, मेंगनी, मुर्ग़ी और बत़ की बीट, हर क़िस्म की शराब, सुवर का गोश्त और हड्डी और बाल, छिपकली या गिरगिट का ख़ून और दरिन्दे चोपायों का थूक, येह सब चीज़ें नजासते ग़लीज़ा हैं। इस के इ़लावा दूध पीते लड़के या लड़की का पेशाब और उन की मुंह भर क़ै (जब कि मे'दे से हो कर आई हो) भी नजासते ग़लीज़ा है। और येह जो अ़वाम में मश्हूर है कि "दूध पीते बच्चों का पेशाब पाक है" महज़ ग़लत है।

(हमारा इस्लाम, नमाज़ की शर्तें अव्वल, त़हारत ह़िस्सा : 2, स. 74)

www.dawateislami.net

सुवाल : नजासते ख़फ़ीफ़ा कौन कौन सी चीज़ें हैं ?

जवाब : ह़लाल जानवरों और घोड़े का पेशाब, ह़राम परन्दों की बीट नजासते ख़फ़ीफ़ा है और ह़लाल जानवरों का पित्ता नजासते ख़फ़ीफ़ा है।

(हमारा इस्लाम, नमाज़ की शर्तें अव्वल, त़हारत, ह़िस्सा : 2, स. 75 व बहारे शरीअ़त, किताबुत्त़हारत, नजासतों के मुतअ़ल्लिक़ अह़काम, ह़िस्सा : 2, जि.1, स. 391)

सुवाल : बदन या कपड़ा नजिस हो जाए तो पाक करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : नजासते मरइय्या (नज़र आने वाली नजासत) से त़हारत के लिये इज़ाला शर्त़ है अगर एक बार में ज़ाइल हो जाए तो एक ही मरतबा धोने में पाक हो जाएगी और तीन बार से ज़ियादा की ज़रूरत हो तो ज़ियादा धोए और नजासते ग़ैर मरइय्या (न नज़र आने वाली नजासत) अगर जिस पर लगी है वोह निचोड़ने के क़ाबिल है तो तीन बार धोए और हर बार निचोड़े और निचोड़ने की ह़द येह है कि अगर फिर निचोड़े तो क़त़रा न टपके और इस में ख़ुद उस की क़ुव्वत का ए'तिबार है और अगर दूसरा जो उस से ज़ियादा क़वी हो उस के निचोड़ने से क़त़रा टपकेगा तो क़वी के लिये नापाक होगा और उस कमज़ोर के लिये पाक होगा और येह हुक्म (तीन दफ़्आ धोना और हर बार निचोड़ना) भी उस वक़्त है जब वोह शख़्स साह़िबे वस्वसा हो (जिस को वस्वसे आते हैं) वरना (नजासत के ज़ाइल होने का) ग़लबए ज़न (ग़ालिब गुमान) ह़ासिल होने से पाक हो जाएगा। नीज़ येह हुक्म उस वक़्त है जब थोड़े पानी में धोया हो और अगर ह़ौज़े कबीर में धोया या बहुत सा पानी उस पर बहाया या बहते पानी में धोया तो निचोड़ने की शर्त़ नहीं।

(हमारा इस्लाम, नमाज़ की शर्तें अव्वल, त़हारत, ह़िस्सा : 2, स. 75)

वुज़ू के मसाइल

सुवाल : बे वुज़ू नमाज़ पढ़ना कैसा है, क्या शक से भी वुज़ू टूट जाता है ?

जवाब : बे वुज़ू नमाज़ पढ़ना ह़राम व सख़्त गुनाह है, बल्कि जो जान

www.dawateislami.net

बूझ कर बे त़हारत नमाज़ अदा करे, उसे उ़लमा कुफ़्र लिखते हैं और क्यूं न हो कि इस बे वुज़ू या बे गुस्ल नमाज़ अदा करने वाले ने इ़बादत की बे अदबी और तौहीन की, और येह कुफ़्र है। हुज़ूर सरवरे आ़लम, नूरे मुजस्सम, शहनशाहे मुअ़ज़्ज़म صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुकर्रम है कि जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी त़हारत।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 123)

(و مسند امام احمد بن حنبل،مسند جابر بن عبدالله،الحديث:١٤٦٦٨،ج٥،ص١٠٣)

लेकिन जो बा वुज़ू था अब उसे शक हुवा कि वुज़ू है या टूट गया तो उसे वुज़ू करने की ज़रूरत नहीं, हां कर लेना बेहतर है और अगर वस्वसा है तो उसे हरगिज़ न माने कि येह शैत़ाने लईन का धोका है।

(बहारे शरीअ़त, वुज़ू का बयान, मुतफ़र्रिक़ मसाइल, ह़िस्सा : 2, जि.1, स. 311)

सुवाल : आ'ज़ाए वुज़ू कितनी मरतबा धोए जाते हैं ?

जवाब : ह़दीस शरीफ़ में है जो एक एक बार वुज़ू करे (या'नी हर उ़ज़्व को एक एक बार धोए) तो येह ज़रूरी बात है (या'नी फ़र्ज़ है) और जो दो दो बार करे तो उस को दूना (या'नी दुगना) सवाब है और जो तीन तीन बार धोए तो येह मेरा और अगले नबियों عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वुज़ू है (या'नी उन की सुन्नत है।)

(مسند امام احمد بن حنبل، مسند عبدالله بن عمر بن الخطاب، الحديث:٥٧٣٩، ج٢، ص٤١٧)

व हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 123)

सुवाल : मिस्वाक करना कैसा है और इस का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : वुज़ू में मिस्वाक करना सुन्नत है। हमारे प्यारे नबी सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना, साह़िबे मुअ़त्तर पसीना, बाइ़से नुज़ूले सकीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है कि जो नमाज़ मिस्वाक कर के पढ़ी जाए वोह उस नमाज़ से सत्तर गुना अफ़्ज़ल है जो बे मिस्वाक के पढ़ी गई।

(شعب الايمان،باب العشرون من شعب الايمان،وهو باب فى الطهارات، الحديث:٢٧٧٤،ج٣،ص٢٦)

www.dawateislami.net

मिस्वाक से मुंह की सफ़ाई और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा हासिल होती है । मशाइख़े किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِم फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मिस्वाक का आ़दी होगा मरते वक़्त उसे कलिमा पढ़ना नसीब होगा। पीलू या नीम वग़ैरा की कड़वी लकड़ी से मिस्वाक करना चाहिये और दाहिने हाथ से कम से कम तीन मरतबा दाएं बाएं, ऊपर नीचे के दांतों में मिस्वाक करें और हर मरतबा मिस्वाक को धोएं । मिस्वाक छुंगली (या'नी छोटी उंगली) के बराबर मोटी और ज़ियादा से ज़ियादा एक बालिश्त लम्बी हो । फ़ारिग़ होने के बा'द मिस्वाक धो कर खड़ी रखें कि रेशा ऊपर की जानिब हो ।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 123)

सुवाल : अगर थोड़ी थोड़ी क़ै कई मरतबा हुई तो क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर थोड़ी थोड़ी क़ै चन्द बार आई कि इस का मजमूआ़ मुंह भर है तो अगर एक ही मतली से है तो वुज़ू तोड़ देगी और अगर वोह मतली ख़त्म हो गई फिर नए सिरे से दूसरी मतली शुरूअ़ हुई और क़ै आई कि अगर दोनों मरतबा की जम्अ़ की जाएं तो मुंह भर हो जाए तो इस से वुज़ू नहीं जाता फिर भी अगर एक ही निशस्त में है तो दोबारा वुज़ू कर लेना बेहतर है।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 124)

सुवाल : अगर मुंह से ख़ून निकले तो वुज़ू टूटेगा या नहीं ?

जवाब : अगर थूक पर ख़ून ग़ालिब है तो वुज़ू टूट जाएगा वरना नहीं इसे इस त़रह़ समझा जा सकता है कि अगर थूक का रंग सुर्ख़ हो जाए तो ख़ून ग़ालिब समझा जाएगा और अगर ज़र्द हो तो ख़ून ग़ालिब नहीं ।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 124)

सुवाल : वोह कौन सी नींद है जिस से वुज़ू नहीं टूटता ?

जवाब : इस त़रह़ सोना कि दोनों सुरीन ख़ूब जमे हुवे हों, या इस त़रह़ सोना कि जिस में ग़फ़्लत न आए, इस त़रह़ सोने से वुज़ू नहीं

www.dawateislami.net

टूटता । मसलन खड़े खड़े सोना या रुकूअ़ की सूरत में या मर्दों के सजदए मस्नूना की शक्ल पर सोना ।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 125)

सुवाल : क्या अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का वुज़ू सोने से टूट जाता है या नहीं ?

जवाब : अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام का सोना वुज़ू को तोड़ने वाला नहीं । क्यूंकि इन की सिर्फ़ आंखें सोती हैं, दिल जागते हैं । हां ! नींद के इलावा दीगर वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ों से इन का वुज़ू जाता रहता है और येह इस लिये नहीं कि वोह चीज़ें नजिस हैं बल्कि इस लिये कि इन ह़ज़रात عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام की शान बड़ी अ़ज़मत वाली है ।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 125)

सुवाल : नमाज़ में हंसी आ जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब : इतनी आवाज़ से हंसी आई हो कि इस के आस पास वाले सुन सकें (अगर्चे शोर वग़ैरा की वज्ह से न सुनें) जिसे क़हक़हा कहते हैं और हंसने वाला जाग रहा था, तो अगर रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में ऐसा हो तो वुज़ू भी टूट जाएगा और नमाज़ भी फ़ासिद हो जाएगी । और अगर नमाज़े जनाज़ा में या सजदए तिलावत में क़हक़हा लगाया तो वुज़ू नहीं जाएगा, अलबत्ता वोह नमाज़ या सजदा फ़ासिद है, और अगर इतनी आवाज़ से हंसा कि ख़ुद इस ने सुना, पास वालों ने न सुना तो वुज़ू नहीं जाएगा, अलबत्ता नमाज़ जाती रहेगी । और अगर दौराने नमाज़ यूं मुस्कुराया कि सिर्फ़ दांत निकले और आवाज़ बिल्कुल नहीं निकली तो इस से न नमाज़ जाएगी और न ही वुज़ू टूटेगा ।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 125)

सुवाल : फुन्सी से कपड़े पर धब्बा पड़ जाए तो पाक है या नहीं ?

जवाब : ख़ारिश या फुड़ियों में सिर्फ़ चिपक हो, बहने वाली रतूबत ख़ून पीप वग़ैरा न हो तो कपड़ा इस से बार बार छू कर अगर्चे कितना ही सन जाए, पाक है मगर धो डालना बेहतर है ।

(हमारा इस्लाम, वुज़ू के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 125)

www.dawateislami.net

ग़ुस्ल के मसाइल

सुवाल : जुनुब और जनाबत किसे कहते हैं ?

जवाब : जिस शख़्स पर नहाना फ़र्ज़ हो उसे जुनुब या जुनुबी कहते हैं। और जिन अस्बाब की वज्ह से नहाना फ़र्ज़ होता है उन्हें जनाबत कहते हैं। (हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 126)

सुवाल : ग़ुस्ल कितनी त़रह़ का होता है और जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उस पर क्या क्या चीज़ें ह़राम हैं ?

जवाब : ग़ुस्ल तीन त़रह़ का होता है :

﴾1﴿ फ़र्ज़ ﴾2﴿ सुन्नत ﴾3﴿ मुस्तह़ब।

जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो उसे मस्जिद में जाना, क़ुरआने पाक छूना या बे छूए देख कर ज़बानी पढ़ना या किसी आयत या आयत का ता'वीज़ लिखना, या ऐसा ता'वीज़ छूना जिस में आयत लिखी हो, ह़राम है, हां ! अगर क़ुरआने अ़ज़ीम जुज़दान में हो तो जुज़दान पर हाथ लगाने या रूमाल वग़ैरा किसी अ़लाहिदा पाक कपड़े से पकड़ने में ह़रज नहीं।

(हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 126-128 मुल्तक़त़न)

सुवाल : जुनुब अगर ग़ुस्ल करने में देर लगाए तो गुनाहगार है या नहीं ?

जवाब : जिस पर ग़ुस्ल फ़र्ज़ हो, उसे चाहिये कि नहाने में हरगिज़ ताख़ीर न करे। ह़दीसे पाक में है कि जिस घर में तस्वीर, कुत्ता और जुनुबी हो, उस में रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते।

(سنن ابی داود، کتاب الطهارة، باب فی الجنب یؤ خر الغسل، الحدیث:۲۲۸، ج۱، ص۱۰۹)

और अगर जुनुबी ने इतनी देर कर दी कि नमाज़ का आख़िरी वक़्त आ गया तो अब फ़ौरन नहाना फ़र्ज़ है, अब ताख़ीर करेगा तो गुनाहगार होगा।

(बहारे शरीअ़त, ग़ुस्ल का बयान, मस्अला. 30, हिस्सा : 2, जि. 1, स. 325)

www.dawateislami.net

सुवाल : कौन से ग़ुस्ल सुन्नत और कौन से मुस्तह़ब हैं ?

जवाब : ग़ुस्ले सुन्नत पांच हैं : ﴾1﴿ ग़ुस्ले जुमुआ़ ﴾2,3﴿ ग़ुस्ले ईदैन ﴾4﴿ ग़ुस्ले ह़ज ﴾5﴿ ग़ुस्ले उ़मरह ।

ग़ुस्ले मुस्तह़ब बहुत से हैं जिन में से चन्द येह हैं :

﴾1﴿ नया कपड़ा पहनने के लिये ﴾2﴿ गुनाह से तौबा करने के लिये ﴾3﴿ सफ़र से वापस आने के बा'द ﴾4﴿ शबे बराअत में ﴾5﴿ मजालिसे ख़ैर में शिर्कत के लिये ﴾6﴿ ख़ूब तारीकी या सख़्त आंधी के वक़्त ﴾7﴿ मक्कए मुअ़ज़्ज़मा या मदीनए मुनव्वरा में दाख़िल होने के लिये ﴾8﴿ सूरज या चांद ग्रहन की नमाज़ के लिये ﴾9﴿ अ़रफ़ा की रात में (या'नी आठवीं ज़िल ह़िज्जा का दिन गुज़र कर जो रात आती है उसे अ़रफ़ा की रात कहते हैं) ﴾10﴿ बदन पर नजासत लगी हो और येह मा'लूम न हो कि किस जगह है ।

(हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 127)

सुवाल : क्या बे वुज़ू आदमी क़ुरआने पाक छू सकता है ?

जवाब : बे वुज़ू को क़ुरआने पाक या इस की किसी आयत को छूना ह़राम है । हां ! बे छूए ज़बानी देख कर पढ़े तो कोई ह़रज नहीं और अगर किसी बरतन या गिलास पर आयत या सूरत लिखी हो तो बे वुज़ू और जुनुबी को इन का छूना ह़राम है ।

(हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 128)

सुवाल : तो क्या बे वुज़ू और जुनुबी दुरूद शरीफ़ या दुआ़ भी नहीं पढ़ सकते ?

जवाब : जिन पर वुज़ू या ग़ुस्ल फ़र्ज़ है उन्हें दुरूद शरीफ़ और दुआ़एं पढ़ने में कोई ह़रज नहीं अलबत्ता बेहतर येह है कि वुज़ू या कुल्ली कर के पढ़ें । (हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 128)

www.dawateislami.net

सुवाल : मुसलमान मय्यित को गुस्ल देना फ़र्ज़ है या सुन्नत ?

जवाब : मुसलमान मय्यित को गुस्ल देना मुसलमानों पर फ़र्ज़े किफ़ाया है, या'नी अगर एक ने नहला दिया तो सब की त़रफ़ से (फ़र्ज़) अदा हो गया, और किसी ने न नहलाया तो जिन जिन को इत्तिलाअ़ मिली थी सब गुनाहगार हुवे। (हमारा इस्लाम, गुस्ल के बक़िय्या मसाइल, हिस्सा : 3, स. 127)

नापाकी दूर करने का त़रीक़ा

सुवाल : नापाक चीज़ों को पाक करने के कितने त़रीक़े हैं ?

जवाब : नापाक चीज़ों को पाक करने के मुन्दरिजए ज़ैल मुख़्तलिफ़ त़रीक़े हैं :

﴾1﴿ **धोने से :** पानी और हर बहने वाली चीज़, जिस से नजासत दूर हो जाए धो कर नजिस चीज़ को पाक कर सकते हैं।

﴾2﴿ **पोंछने से :** मसलन लोहे की चीज़ जैसे चाक़ू वग़ैरा जिस पर ज़ंग न हो और न ही नक़्शो निगार हों, अगर नजिस हो जाए तो अच्छी त़रह़ पोंछ डालने से पाक हो जाएगी। नजासत ख़्वाह दलदार हो या पतली। इसी त़रह़ हर क़िस्म की धात की चीज़ें पोंछने से पाक हो जाती हैं, अलबत्ता नुक़ूश वाली या ज़ंग वाली अश्या हों तो उन्हें धोना ज़रूरी है।

﴾3﴿ **खुरचने या रगड़ने से :** मसलन मोज़े या जूते में दलदार नजासत लगी तो खुरचने और रगड़ने से पाक हो जाएंगी।

﴾4﴿ **ख़ुश्क हो जाने से :** मसलन नापाक ज़मीन हवा या आग से सूख जाए और नजासत का असर या'नी रंग व बू जाता रहे तो पाक हो जाएगी, इस पर नमाज़ तो पढ़ सकते हैं मगर इस से तयम्मुम करना जाइज़ नहीं है।

﴾5﴿ **पिघलने से :** मसलन रांग, सीसा पिघलाने से पाक हो जाता है।

www.dawateislami.net

﴾6﴿ **आग में जलाने से :** मसलन नापाक मिट्टी से बरतन बनाए तो जब तक कच्चे हैं नापाक हैं और आग में पका लेने से पाक हो जाएंगे।

﴾7﴿ **हैअत बदल जाने से :** मसलन शराब, सिर्का हो जाए तो अब पाक है । (हमारा इस्लाम, नापाकी दूर करने का त़रीक़ा, ह़िस्सा : 3, स. 128)

सुवाल : जो चीज़ निचोड़ने के क़ाबिल न हो जैसे चटाई, दरी, गद्दा वग़ैरा इस को किस त़रह़ पाक करें ?

जवाब : जो चीज़ निचोड़ने के क़ाबिल न हो जैसे चटाई, दरी, गद्दा, क़ालीन, कम्बल वग़ैरा, इस को पाक करने का त़रीक़ा येह है कि इस को धो कर छोड़ दें, यहां तक कि पानी टपकना बन्द हो जाए, यूंही दो मरतबा और धोएं, फिर जब तीसरी मरतबा पानी टपकना बन्द हो गया तो वोह चीज़ पाक हो गई। इसी त़रह़ ऐसा रेश्मी कपड़ा जो अपनी नाज़ुकी के सबब निचोड़ने के क़ाबिल नहीं उसे भी यूंही पाक किया जाएगा। (हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 129)

सुवाल : तांबे, पीतल वग़ैरा धातूं और चीनी के बरतनों को पाक करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : तांबे, पीतल वग़ैरा धातूं और चीनी के बरतनों को पाक करने का त़रीक़ा येह है कि जिन चीज़ों में नजासत जज़्ब नहीं होती उन्हें फ़क़त तीन मरतबा धो लेना काफ़ी है। इस की भी ज़रूरत नहीं कि उसे इतनी देर छोड़ दें कि पानी टपकना बन्द हो जाए, हां ! नापाक बरतन को मिट्टी से मांझ लेना बेहतर है।

(हमारा इस्लाम, ग़ुस्ल के बक़िय्या मसाइल, ह़िस्सा : 3, स. 129)

सुवाल : कपड़े का कोई ह़िस्सा नापाक हो गया और येह याद नहीं कि कहां से नापाक है तो उसे कैसे पाक किया जाए ?

www.dawateislami.net

जवाब : इस सूरत में बेहतर येही है की पूरा धोए, मसलन मा'लूम है कि कुर्ते की आस्तीन नजिस हो गई मगर येह मा'लूम नहीं कि कहां से, तो पूरी आस्तीन धो लेना चाहिये, और अगर अन्दाज़े से सोच कर इस का कोई हि़स्सा धो लिया जब भी कपड़ा पाक हो जाएगा।

(हमारा इस्लाम, गुस्ल के बक़िय्या मसाइल, हि़स्सा : 3, स. 130)

सुवाल : तेल या घी वग़ैरा नापाक हो जाएं तो कैसे पाक करें ?

जवाब : बहने वाली आ़म चीज़ें मसलन तेल, घी वग़ैरा को पाक करने का येह त़रीक़ा है कि इन में इतना ही पानी डाल कर ख़ूब हिलाएं, फिर ऊपर से तेल या घी उतार लें और पानी फेंक दें, येह अ़मल तीन बार करें वोह चीज़ पाक हो जाएगी।

(हमारा इस्लाम, गुस्ल के बक़िय्या मसाइल, हि़स्सा : 3, स. 130)

इस्तिन्जा का बयान

सुवाल : इस्तिन्जा किसे कहते हैं और पेशाब व पाख़ाना के बा'द इस्तिन्जा का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : पाख़ाना, पेशाब करने के बा'द बदन पर जो नापाकी लगी रहती है उसे पानी या ढेले वग़ैरा से पाक करने को इस्तिन्जा कहते हैं, पेशाब करने के बा'द मिट्टी के पाक ढेले से पेशाब के मक़ाम को ख़ुश्क कर ले और फिर पानी से धो डाले। और पाख़ाने के बा'द मिट्टी के तीन या पांच ढेलों से पाख़ाने के मक़ाम को साफ़ करे फिर आहिस्ता आहिस्ता पानी डाल कर उंगलियों के पेट से धो डाले, यहां तक कि चिकनाई जाती रहे। (हमारा इस्लाम, इस्तिन्जे का बयान, हि़स्सा : 2, स. 85)

सुवाल : क्या ढेलों से इस्तिन्जा कर लेने के बा'द पानी से त़हारत करना ज़रूरी है ?

जवाब : अगर पाख़ाना या पेशाब के मक़ाम के आस पास की जगह नजासत न लगी हो तो पानी से त़हारत करना मुस्तह़ब या'नी अच्छी

www.dawateislami.net

बात है, और अगर नजासत इधर उधर लग गई और एक दिरहम से कम या बराबर लगी है तो पानी से त़हारत कर लेना सुन्नत है, और अगर वोह जगह दिरहम से ज़ियादा सन जाए तो धोना फ़र्ज़ है, मगर ढेला लेना अब भी सुन्नत है। (हमारा इस्लाम, इस्तिन्जे का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 85)

सुवाल : इस्तिन्जा किन चीज़ों से जाइज़ और किन चीज़ों से मकरूह है ?

जवाब : ढेले, कंकर, पथ्थर और फटे हुवे कपड़े से इस्तिन्जा करना बिला कराहत जाइज़ है, ब शर्ते कि येह सब पाक हों। जब कि हड्डी और खाने, गोबर, लीद, पक्की ईंट, ठेकरी, कोइला और जानवर के चारे से इस्तिन्जा करना मकरूह है। काग़ज़ से भी इस्तिन्जा करना मन्अ़ है।

(हमारा इस्लाम, इस्तिन्जे का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 85)

सुवाल : किन मक़ामात में पेशाब पाख़ाना मकरूह है ?

जवाब : कुंवें या ह़ौज़ या चश्मे के किनारे, मस्जिद और ईदगाह के पहलू में, क़ब्रिस्तान या रास्ते में, पानी में अगर्चे बहता हो, फलदार दरख़्त के नीचे या साये में, जहां लोग उठते बैठते हों, या जिस जगह मवेशी बंधते हों या उस खेत में जिस में ज़राअ़त मौजूद है, या चूहे के बिल, या किसी और सूराख़ में पेशाब पाख़ाना मकरूह है। यूंही जिस जगह ग़ुस्ल या वुज़ू किया जाता हो, या सख़्त ज़मीन पर जिस से छींटें उड़ कर आएं, मकरूह और मन्अ़ है।

(हमारा इस्लाम, इस्तिन्जे का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 86)

सुवाल : पेशाब पाख़ाना करते वक़्त क्या क्या बातें मकरूह हैं ?

जवाब : खड़े हो कर या लेट कर या नंगे हो कर पेशाब करना मकरूह है। इसी त़रह़ नंगे सर पेशाब पाख़ाना को जाना या कलाम करना भी मकरूह है। या क़िब्ला की त़रफ़ मुंह या पीठ करना, यूंही चांद और

www.dawateislami.net

सूरज की त़रफ़ मुंह या पीठ करना या हवा के रुख़ पेशाब करना मम्नूअ़ है, या ऐसी जगह इस्तिन्जा करना कि लोगों की नज़रें आते जाते इस की शर्मगाह पर पड़ने का एह़तिमाल हो, येह मकरूह है, इसी त़रह़ दाएं हाथ से इस्तिन्जा करना भी मकरूह है।

(हमारा इस्लाम, इस्तिन्जे का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 86 मुल्तक़त़न)

सुवाल : इस्तिन्जा करने के आदाब क्या हैं ?

जवाब : जब तक बैठने के क़रीब न हो कपड़ा बदन से न हटाए और न ह़ाजत से ज़ियादा बदन खोले फिर दोनों पाउं कुशादा कर के बाएं पाउं पर ज़ोर दे कर बैठे और अपनी शर्मगाह की त़रफ़ नज़र न करे और न उस नजासत को देखे जो इस के बदन से निकली है और देर तक न बैठे और पेशाब में न थूके, न नाक साफ़ करे, न बार बार इधर उधर देखे, न बेकार बदन छूए, न आस्मान की त़रफ़ निगाह करे बल्कि शर्म के साथ सर झुकाए रहे, जब फ़ारिग़ हो जाए तो ढेलों से साफ़ कर के खड़ा हो जाए और सीधे खड़े होने से पहले बदन छुपा ले, फिर किसी दूसरी जगह बैठ कर त़हारत कर ले वोह इस त़रह़ कि पहले पेशाब का मक़ाम धोए फिर पाख़ाने का।

(हमारा इस्लाम, इस्तिन्जे का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 87 व बहारे शरीअ़त, इस्तिन्जे के मुतअ़ल्लिक़ मसाइल, मस्अला. 9, ह़िस्सा : 2, जि. 1 स. 409)

पानी का बयान

सुवाल : किस पानी से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ है ?

जवाब : मींह (बारिश), नदी, नाले, चश्मे, समन्दर, दरया, नहर, कुंवें, बर्फ़ और ओले के पानी से वुज़ू जाइज़ है। और जिस पानी से वुज़ू जाइज़ है उस से ग़ुस्ल भी जाइज़ है।

(हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 80)

www.dawateislami.net

सुवाल : बड़ा तालाब या ह़ौज़ किसे कहते हैं ?

जवाब : दस हाथ लम्बा, दस हाथ चौड़ा जो ह़ौज़ या तालाब हो उसे बड़ा ह़ौज़ कहते हैं । यूंही बीस हाथ लम्बा पांच हाथ चौड़ा ह़ौज़ भी बड़ा ह़ौज़ है, ग़रज़ येह कि जिस ह़ौज़ की पैमाइश सौ हाथ (लम्बाई चौड़ाई 25 गज़ या 225 फ़िट) हो तो वोह ह़ौज़ या तालाब बड़ा है ।

(हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 80)

सुवाल : किस पानी से वुज़ू या ग़ुस्ल करना जाइज़ नहीं ?

जवाब : किसी दरख़्त या फल से निचोड़े हुवे पानी से वुज़ू जाइज़ नहीं जैसे केले का पानी, गन्ने का रस, यूंही वोह पानी जिस का रंग या बू या मज़ा किसी पाक चीज़ के मिलने से बदल गया और वोह गाढ़ा भी हो गया, या पानी में कोई चीज़ मिल गई और बोल चाल में उसे अब पानी न कहें, या उस में कोई चीज़ डाल कर पकाएं जिस से मैल काटना मक़्सूद न हो जैसे शोरबा, चाय, गुलाब या अ़रक़, तो इस से वुज़ू व ग़ुस्ल जाइज़ नहीं । इसी त़रह़ वोह पानी जिस में ज़ा'फ़रान या कोई पुड़िया का रंग मिल गया और उस पानी से कपड़ा रंगा जा सकता है तो ऐसे पानी से भी वुज़ू जाइज़ नहीं । इसी त़रह़ माए मुस्ता'मल से भी वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं किया जा सकता । (हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 80)

सुवाल : माए मुस्ता'मल किसे कहते हैं और मकरूह पानी का क्या ह़ुक्म है ?

जवाब : जो पानी वुज़ू या ग़ुस्ल करने में बदन से गिरा, या वोह पानी जिस में किसी बे वुज़ू शख़्स का हाथ या उंगली या पोरा या बदन का कोई ह़िस्सा जो वुज़ू में धोया जाता हो ब क़स्द या बिला क़स्द दह दर दह से कम पानी में बे धुला पड़ जाए माए मुस्ता'मल कहलाता है । येह पानी पाक तो है मगर इस से वुज़ू और ग़ुस्ल जाइज़ नहीं ।

(हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 80 व बहारे शरीअ़त, पानी का बयान, मस्अला. 21, ह़िस्सा : 2, ज़ि. 1 स. 333)

www.dawateislami.net

सुवाल : किन जानवरों का जूठा पानी नापाक है ?

जवाब : सुवर, कुत्ता, चीता, शेर, हाथी, गीदड़ और दूसरे दरिन्दों का जूठा पानी नापाक है। इसी त़रह़ बिल्ली ने चूहा खाया और फ़ौरन बरतन में मुंह डाल दिया, अगर उस में पानी था तो येह पानी नापाक हो गया। इसी त़रह़ शराबी आदमी ने शराब पी कर फ़ौरन पानी पिया तो येह पानी भी नजिस हो गया। (हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 81)

सुवाल : किन जानवरों का जूठा पानी मकरूह है ?

जवाब : उड़ने वाले शिकारी जानवर जैसे शिकरा, बाज़, चील वग़ैरा का जूठा पानी मकरूह है। ऐसे ही घर में रहने वाले जानवर जैसे सांप, छिपकली, चूहा वग़ैरा का जूठा पानी। इसी त़रह़ ग़लीज़ चीज़ें खाने वाली गाए या ग़लीज़ चीज़ों पर मुंह मारने वाली मुर्ग़ी, जो छूटी फिरती है इस का जूठा मकरूह है। (हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 81)

सुवाल : किस किस का जूठा पानी पाक है ?

जवाब : आदमी का जूठा और उन जानवरों का जूठा पानी जिन का गोश्त खाया जाता है, (चौपाए हों या परन्दे) पाक है इसी त़रह़ पानी में रहने वाले जानवरों और घोड़े का जूठा भी पाक है।

(हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 81)

सुवाल : गधे और ख़च्चर का जूठा पानी पाक है या नापाक ?

जवाब : गधे और ख़च्चर का जूठा पानी मश्कूक कहलाता है, या'नी इस में शक है कि येह पानी वुज़ू या ग़ुस्ल के क़ाबिल है या नहीं, लिहाज़ा अच्छा पानी होते हुवे इस से वुज़ू व ग़ुस्ल जाइज़ नहीं। और अगर अच्छा पानी न हो तो इसी से वुज़ू कर ले और फिर तयम्मुम भी कर ले वरना नमाज़ नहीं होगी। (हमारा इस्लाम, पानी का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 81)

www.dawateislami.net

सुवाल : किस किस का पसीना और लुआ़ब पाक, नापाक या मकरूह है ?

जवाब : जिस का जूठा नापाक है उस का पसीना और लुआ़ब (थूक) भी नापाक है। और जिस का जूठा पाक है उस का पसीना और लुआ़ब भी पाक है और जिस का जूठा मकरूह है उस का पसीना और लुआ़ब भी मकरूह है और घोड़े और ख़च्चर का पसीना अगर कपड़े पर लग जाए तो कपड़ा पाक है चाहे कितना ही ज़ियादा लगा हो।

(हमारा इस्लाम, पानी का बयान, हि़स्सा : 2, स. 82)

सुवाल : बड़े हौ़ज़ या तालाब का पानी कब नापाक हो जाता है ?

जवाब : बड़े हौ़ज़ और तालाब का पानी, बहते पानी के हुक्म में है, नजासत पड़ने से नापाक नहीं होता। हां ! अगर नजासत से पानी का रंग या मज़ा या बू बदल जाए तो फिर येह पानी भी नापाक हो जाता है।

(हमारा इस्लाम, पानी का बयान, हि़स्सा : 2, स. 82)

कुंवें का बयान

सुवाल : क्या कुंवां भी नापाक हो जाता है ?

जवाब : जी हां ! अगर नजासते ग़लीज़ा या ख़फ़ीफ़ा या कोई नापाक चीज़ कुंवें में गिरी या आदमी या बहते हुवे ख़ून वाला कोई जानवर कुंवें में गिर कर मर जाए तो कुंवां नापाक हो जाता है।

(हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, हि़स्सा : 2, स. 82)

सुवाल : अगर कुंवें में कोई जानवर गिरा और ज़िन्दा निकल आया तो कुंवां पाक रहेगा या नापाक हो जाएगा ?

जवाब : सुवर के सिवा अगर कोई और जानवर कुंवें में गिरा और ज़िन्दा निकल आया तो इस की कई सूरतें हैं और हर सूरत का जुदा हुक्म है। मसलन उस के जिस्म पर नजासत लगी होना यक़ीनी मा'लूम न हो और पानी में उस का मुंह भी न पड़ा तो पानी पाक है मगर एह़तियात़न

www.dawateislami.net

बीस डोल निकालना बेहतर है और अगर यक़ीन है कि उस के बदन पर नजासत थी तो कुंवां नापाक हो गया, उस का कुल पानी निकाला जाए और अगर उस का मुंह पानी में पड़ा तो जो हुक्म उस के लुआ़ब और जूठे का है वोही हुक्म पानी का है।

(हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, हिस्सा : 2, स. 82)

सुवाल : कुंवां पाक करने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : कुंवां पाक करने के मुन्दरिजए ज़ैल तीन त़रीक़े हैं :

﴾1﴿ कुंवें में अगर आदमी, बकरी या कुत्ता या कोई दमवी जानवर (या'नी जिस में बहता ख़ून) हो उन के बराबर या उन से बड़ा गिर कर मर जाए, या मुर्ग़ी, मुर्ग़ा, बिल्ली, चूहा, छिपकली या कोई और जानवर जिस में बहता हुवा ख़ून हो, कुंवें में मर कर फूल जाए, या फट जाए या छिपकली या चूहे की दुम कट कर कुंवें में गिरी या कुंवें में नजासत या कोई नापाक चीज़ गिर जाए तो इन सूरतों में कुंवें का कुल पानी निकाला जाए।

﴾2﴿ चूहा, छछूंदर, चिड़या वग़ैरा कोई जानवर कुंवें में गिर कर मर गया तो बीस डोल पानी निकालना ज़रूरी है और तीस डोल निकालना बेहतर है।

﴾3﴿ कबूतर, मुर्ग़ी, बिल्ली गिर कर मर जाए तो चालीस से साठ डोल तक निकालना चाहिये। (हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, हिस्सा : 2, स. 83)

सुवाल : अगर जूता या गेंद कुंवें में गिर जाए तो इस का क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर जूता या गेंद पर नजासत लगी होना यक़ीनी त़ौर पर मा'लूम हो तो कुंवां नापाक हो गया, कुल पानी निकाला जाएगा। और अगर कुछ पता न हो तो बीस डोल पानी निकाल दिया जाए, कुंवां पाक हो जाएगा। महज़ नजिस होने का ख़याल मो'तबर नहीं।

(हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, हिस्सा : 2, स. 83)

www.dawateislami.net

सुवाल : पानी का जानवर कुंवें में मर जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब : पानी का जानवर या'नी वोह जानवर जो पानी में पैदा होता है अगर कुंवें में मर जाए या मरा हुवा गिर जाए तो पानी नापाक न होगा। अगर्चे फूला फटा हो मगर फट कर उस के अजज़ा पानी में मिल गए तो उस का पीना ह़राम है। और जिस की पैदाइश पानी की न हो मगर पानी में रहता हो जैसे बत़, इस के मर जाने से पानी नजिस हो जाएगा।

(हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 84 व बहारे शरीअ़त, कुंवें का बयान, ह़िस्सा : 2, जि. 1, स. 338)

सुवाल : कुंवां कब पाक माना जाएगा ?

जवाब : नापाक कुंवें में से जितना पानी निकालने का हुक्म है जब निकाल लिया गया तो कुंवां पाक हो गया, और वोह रस्सी, डोल जिस से पानी निकाला है या कुंवें की दीवारें, सब पाक हो गईं, धोने की ज़रूरत नहीं। (हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 84)

सुवाल : अगर थोड़ा थोड़ा पानी कुंवें से निकालें तो पाक होगा या नहीं ?

जवाब : कुंवें से जितना पानी निकालना है इस में इख़्तियार है कि एक दम से इतना निकालें या थोड़ा थोड़ा कर के, दोनों सूरतों में कुंवां पाक हो जाएगा। (हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 84)

येह जो हुक्म दिया गया है कि इतना इतना पानी निकाला जाए इस का मत़लब येह है कि वोह चीज़ जो उस में गिरी है उस को कुंवें में से निकाल लें, फिर इतना पानी निकालें अगर वोह उसी में पड़ी रही तो कितना ही पानी निकालें बेकार है।

(बहारे शरीअ़त, कुंवें का बयान, मस्अला. 33, जि. 1, स. 339)

सुवाल : डोल से कितना बड़ा डोल मुराद है ?

जवाब : जिस कुंवें का डोल मुअ़य्यन हो तो उसी का ए'तिबार है, इस के छोटे बड़े होने का कुछ ए'तिबार नहीं।

(बहारे शरीअ़त, कुंवें का बयान, मस्अला. 35 ह़िस्सा : 2, जि. 1, स. 339)

www.dawateislami.net

सुवाल : कुंवें से मरा हुवा जानवर निकला और मा'लूम नहीं कि कब गिरा तो अब क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर वक़्त मा'लूम नहीं तो जिस वक़्त देखा गया उसी वक़्त से कुंवां नजिस क़रार पाएगा इस से पहले नहीं । और उस के गिरने, मरने का वक़्त मा'लूम है तो उसी वक़्त से पानी नजिस है, इस के बा'द अगर किसी ने इस से वुज़ू या ग़ुस्ल किया तो न वोह वुज़ू हुवा न ग़ुस्ल, और इस से जितनी नमाज़ें पढ़ीं वोह नमाज़ें भी न हुईं ।

(हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, हिस्सा : 2, स. 84)

सुवाल : जिस कुंवें में पानी टूटता ही नहीं वोह किस त़रह़ पाक होगा ?

जवाब : जो कुंवां ऐसा हो कि उस का पानी टूटता ही नहीं, चाहे कितना ही निकालें, और उस का कुल पानी निकालना भी ज़रूरी हो तो ऐसी सूरत में हुक्म येह है कि पहले येह मा'लूम कर लें कि इस में कितना पानी है, वोह सब निकाल लिया जाए, निकालते वक़्त जितना ज़ियादा होता गया उस का कुछ लिहाज़ नहीं ।

(हमारा इस्लाम, कुंवें का बयान, हिस्सा : 2, स. 84)

अवक़ाते नमाज़ का बयान

सुवाल : नमाज़ के लिये "**वक़्त**" शर्त होने का क्या मत़लब है ?

जवाब : नमाज़ के लिये जो अवक़ात मुक़र्रर हैं नमाज़ उन ही मह़दूद अवक़ात में अदा करना फ़र्ज़ है । अगर इस से पहले पढ़ ली तो नमाज़ होगी ही नहीं और अगर वक़्त गुज़ार कर पढ़ेगा तो क़ज़ा कहलाएगी और येह पढ़ने वाला गुनाहगार होगा ।

(हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, हिस्सा : 3, स. 140)

सुवाल : नमाज़ कितने वक़्त की फ़र्ज़ है ?

जवाब : हर रात दिन में हर मुसलमान, आ़क़िल, बालिग़ मर्द व औ़रत पर पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है :

www.dawateislami.net

﴾1﴿ फ़ज्र ﴾2﴿ ज़ोहर ﴾3﴿ अ़स्र ﴾4﴿ मग़रिब और ﴾5﴿ इ़शा।

(हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, हिस्सा : 3, स. 140)

सुवाल : फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त कब से कब तक रहता है ?

जवाब : फ़ज्र की नमाज़ का वक़्त सुब्हे सादिक़ से शुरूअ़ होता है, और सूरज की पहली किरन चमकने (सूरज निकलने) तक रहता है।

(हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, हिस्सा : 3, स. 140)

सुवाल : सुब्हे सादिक़ से क्या मुराद है और फ़ज्र का मुस्तह़ब वक़्त क्या है ?

जवाब : सुब्हे सादिक़ एक रोशनी है जो मशरिक़ की जानिब आस्मान के किनारे में दिखाई देती है और रफ़्ता रफ़्ता बढ़ती जाती है यहां तक कि तमाम आस्मान पर फैल जाती है। और ज़मीन पर उजाला हो जाता है इसे **सुब्हे सादिक़** कहते हैं और फ़ज्र में ताख़ीर करना मुस्तह़ब है, कि जब ख़ूब उजाला हो या'नी ज़मीन रोशन हो जाए। ऐसे वक़्त में नमाज़ शुरूअ़ करे कि सुन्नत के मुवाफ़िक़ चालीस या साठ आयात पढ़ सके। फिर सलाम फेरने के बा'द भी इतना वक़्त बाक़ी बचे कि अगर नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़े तो सुन्नत के मुत़ाबिक़ पढ़ी जा सके।

(हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, हिस्सा : 3, स. 140)

सुवाल : नमाज़े ज़ोहर का वक़्त क्या है ? और इस के मुस्तह़ब वक़्त से क्या मुराद है ?

जवाब : ज़ोहर की नमाज़ का वक़्त सूरज ढलने के बा'द से शुरूअ़ होता है। इस बात को इस त़रह़ समझें कि दोपहर के वक़्त जूं जूं सूरज बुलन्द होता जाता है तो हर शै का साया भी कम होता जाता है, फिर एक वक़्त ऐसा भी आता है जब येह साया कम होना बन्द हो जाता है, इसे सायए अस्ली कहते हैं। येह कुछ देर तक बाक़ी रहता है। फिर जब येह साया बढ़ना शुरूअ़ होता है, तब वक़्ते ज़ोहर शुरूअ़ हो जाता है। फिर जब हर शै का साया, इ़लावा सायए अस्ली के दुगना हो जाए तो

www.dawateislami.net

ज़ोहर का वक़्त ख़त्म हो जाता है। सर्दियों में ज़ोहर जल्दी पढ़ना और गर्मी के दिनों में ताख़ीर करना मुस्तह़ब है। या'नी जब गर्मी की शिद्दत कम हो जाए, ख़्वाह तन्हा पढ़े या जमाअ़त के साथ। हां गर्मियों में ज़ोहर की जमाअ़त अव्वल वक़्त में होती हो तो मुस्तह़ब वक़्त के लिये जमाअ़त का छोड़ना जाइज़ नहीं। (हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, ह़िस्सा : 3, स. 141 व बहारे शरीअ़त, नमाज़ के वक़्तों का बयान, वक़्ते ज़ोहर, ह़िस्सा : 3, जि. 1, स. 449)

सुवाल : अ़स्र का वक़्त कब से कब तक रहता है, और इस का मुस्तह़ब वक़्त क्या है ?

जवाब : सायए अस्ली के सिवा जब हर चीज़ का साया दुगना हो जाए तो अस्र का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है और ग़ुरूबे आफ़्ताब तक रहता है। अ़स्र की नमाज़ में हमेशा ताख़ीर करना मुस्तह़ब है, मगर इतनी भी ताख़ीर न करें कि सूरज बहुत नीचा और ज़र्द हो जाए और इस पर बे तकल्लुफ़ निगाह ठहरने लगे। येह वक़्त, नमाज़ अदा करने के लिये मकरूह है या'नी इस वक़्त में नमाज़ पढ़ना मकरूह है। सूरज पर येह ज़र्दी उस वक़्त आती है जब ग़ुरूब में तक़रीबन बीस मिनट बाक़ी रहते हैं। (हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, ह़िस्सा : 3, स. 142)

सुवाल : मग़रिब का वक़्त कब से कब तक है और इस का मुस्तह़ब वक़्त भी बताएं ?

जवाब : वक़्ते मग़रिब, ग़ुरूबे आफ़्ताब से ले कर ग़ुरूबे शफ़क़ तक है। इमामे आ'ज़म ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ह़नीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के नज़दीक शफ़क़ उस सफ़ेदी का नाम है जो मग़रिब में सुर्ख़ी डूबने के बा'द सुब्हे सादिक़ की त़रह़ फैली रहती है। (जब कि बादल न हों) मग़रिब हमेशा अव्वल वक़्त में पढ़ना बेहतर है और बिला उ़ज़्र देर से पढ़ना मकरूह है, अब्र वाले दिन ताख़ीर करना मुस्तह़ब है।

(हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, ह़िस्सा : 3, स. 142)

www.dawateislami.net

सुवाल : नमाज़े इ़शा का वक़्त कब होता है और इस का वक़्ते मुस्तह़ब क्या है ?

जवाब : शफ़क़ के ग़ुरूब होने के बा'द इ़शा का वक़्त शुरूअ़ हो जाता है, और सुब्हे सादिक़ से पहले तक रहता है। इ़शा में तिहाई रात तक देर करना मुस्तह़ब है (तिहाई रात से येह मुराद है कि अगर बिलफ़र्ज़ रात नौ घन्टे की हो तो इस के इब्तिदाई तीन घन्टे तिहाई रात कहलाएंगे। येह याद रहे कि सूरज ग़ुरूब होते ही रात शुरूअ़ हो जाती है)। आधी रात तक देर करना मुबाह़ है और इतनी देर करना कि रात ढ़ल गई, मकरूह है।

(हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, हिस्सा : 3, स. 143)

सुवाल : नमाज़े वित्र का वक़्त कौन सा है ?

जवाब : नमाज़े इ़शा व वित्र का वक़्त एक ही है, मगर इन में तरतीब फ़र्ज़ है कि अगर इ़शा से पहले वित्र की नमाज़ पढ़ ली तो होगी ही नहीं। और जो शख़्स जागने पर येह ए'तिमाद रखता है कि अगर इ़शा के फ़र्ज़ और सुन्नतें पढ़ कर सो जाए तो सह़री के वक़्त उठ जाएगा, उस के लिये बेहतर येह है कि वित्र रात के आख़िरी हिस्से में पढ़ ले वगर्ना सोने से पहले पढ़ ले। (हमारा इस्लाम, वक़्त का बयान, हिस्सा : 3, स. 143)

सुवाल : वोह कौन से अवक़ात हैं जिन में कोई नमाज़ जाइज़ ही नहीं ?

जवाब : वोह तीन वक़्त हैं :

﴿1﴾ तुलूए आफ़्ताब ﴿2﴾ ग़ुरूबे आफ़्ताब ﴿3﴾ निस्फ़ुन्नहारे शरई। इन तीनों वक़्तों में कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। न फ़र्ज़ न वाजिब न नफ़्ल न अदा न क़ज़ा न सजदए तिलावत और न ही सजदए सह्व। अलबत्ता, अगर इस रोज़ अ़स्र की नमाज़ नहीं पढ़ी थी तो अगर्चे आफ़्ताब डूबता हो, पढ़ ले मगर इतनी ताख़ीर करना ह़राम है, ह़दीस में इस को मुनाफ़िक़ की नमाज़ फ़रमाया। (बहारे शरीअ़त, अवक़ाते मकरूहा, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 454 व صحيح مسلم، كتاب المساجد ومواضع الصلاة، باب استحباب التكبير بالعصر، الحديث ٦٢٢، ص ٣١٣)

www.dawateislami.net

सुवाल : वोह कौन से अवक़ात हैं जिन में नफ़्ल नमाज़ जाइज़ नहीं ?

जवाब : इन बारह वक़्तों में नवाफ़िल पढ़ना मन्अ़ है : ﴾1﴿ तुलूए़ फ़ज्र से तुलूए़ आफ़्ताब तक ﴾2﴿ जब अपने मज़हब की जमाअ़त के लिये इक़ामत हो इलावा सुन्नते फ़ज्र के ﴾3﴿ नमाज़े अ़स्र के बा'द से आफ़्ताब ज़र्द होने तक ﴾4﴿ गुरूबे आफ़्ताब से मग़रिब के फ़र्ज़ तक ﴾5﴿ जब इमाम अपनी जगह से ख़ुत़बए जुमुआ़ के लिये खड़ा हो ﴾6﴿ ऐ़न ख़ुत़बे के वक़्त ﴾7﴿ नमाज़े ईदैन से पहले ﴾8﴿ नमाज़े ईदैन के बा'द जब कि ईदगाह या मस्जिद में पढ़े, घर में पढ़ना मकरूह नहीं ﴾9﴿ अ़रफ़ात में ज़ोहर व अ़स्र के दरमियान में और बा'द में भी नफ़्ल व सुन्नत मकरूह है ﴾10﴿ मुज़्दलिफ़ा में मग़रिब व इ़शा के दरमियान ﴾11﴿ जब कि फ़र्ज़ का वक़्त तंग हो तो हर नमाज़, यहां तक कि सुन्नते फ़ज्र व ज़ोहर भी मकरूह है ﴾12﴿ जिस बात से दिल बटे और उसे दफ़्अ़ कर सकता हो तो उसे दफ़्अ़ किये बिग़ैर हर नमाज़ मकरूह है, मसलन ज़ोर का पेशाब, पाख़ाना लगते वक़्त।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़ के वक़्तों का बयान, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 455)

जमाअ़त का बयान

सुवाल : पन्ज वक़्ता फ़र्ज़ नमाज़ों में जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने के बारे में क्या हुक्म है ?

जवाब : हर मुसलमान, आ़क़िल, बालिग़ मर्द पर जिसे मस्जिद तक जाने में मशक़्क़त न हो जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना वाजिब है, बिला उ़ज़्रे शरई एक बार भी छोड़ने वाला ऐसा फ़ासिक़ है, जिस की गवाही क़बूल नहीं की जाएगी, और उस को सख़्त सज़ा दी जाएगी। अगर पड़ोसी हो और वोह नमाज़ की त़रफ़ न बुलाए तो वोह भी गुनाहगार होगा।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 233)

सुवाल : जुमुआ़ व ईदैन और तरावीह़ व वित्र में जमाअ़त करना कैसा है ?

www.dawateislami.net

जवाब : जुमुआ़ और ईदैन में जमाअ़त शर्त़ है, जब कि तरावीह़ में सुन्नते किफ़ाया है, कि अगर मह़ल्ले के सब लोगों ने तर्क की तो सब ने बुरा किया, और अगर कुछ लोगों ने क़ाइम कर ली तो बाक़ियों के सर से जमाअ़त साक़ित़ हो गई और रमज़ान के वित्र में जमाअ़त क़ाइम करना मुस्तह़ब है, और सूरज गहन में सुन्नत है।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 233)

सुवाल : औ़रतों पर नमाज़ बा जमाअ़त वाजिब है या नहीं ?

जवाब : औ़रतों को किसी नमाज़ में जमाअ़त की ह़ाज़िरी जाइज़ नहीं ख़्वाह दिन की नमाज़ हो या रात की जुमुआ़ हो या इ़दैन ख़्वाह वोह जवान हों या बुढ़ियां। (हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 234)

सुवाल : वोह क्या वुजूहात हैं जिन की वज्ह से जमाअ़त की ह़ाज़िरी मुआ़फ़ है ?

जवाब : सख़्त बारिश, और शदीद कीचड़ का ह़ाइल होना, सख़्त सर्दी, सख़्त तारीकी, आंधी का होना, माल या खाने के ज़ाएअ़ होने का अन्देशा, क़र्ज़ ख़्वाह का ख़ौफ़ जब कि आदमी तंगदस्त हो, ज़ालिम का ख़ौफ़, पाख़ाना, पेशाब और रियाह़ की शदीद ह़ाजत, जब खाना ह़ाज़िर हो और नफ़्स को उस की ख़्वाहिश भी हो, क़ाफ़िले के चले जाने का अन्देशा हो, मरीज़ की तीमारदारी कि उस को तक्लीफ़ होगी और वोह घबराएगा, येह सब तर्के जमाअ़त के लिये उ़ज़्र हैं।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 234)

सुवाल : वोह लोग कौन हैं जिन्हें जमाअ़त छोड़ने की इजाज़त है ?

जवाब : ऐसा मरीज़ जिसे मस्जिद तक जाने में मशक़्क़त हो, या जिस का पाउं कट गया हो, या जिस पर फ़ालिज गिरा हो, या इतना बूढ़ा कि मस्जिद तक जाने से आ़जिज़ हो, या नाबीना, अगर्चे उस को हाथ पकड़ कर मस्जिद तक पहुंचाने वाला मौजूद हो और ना बालिग़ के ज़िम्मे जमाअ़त की ह़ाज़िरी लाज़िम नहीं है।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 234)

www.dawateislami.net

सुवाल : जमाअ़त से नमाज़ पढ़ने में क्या क्या फ़ाइदे हैं ?

जवाब : ह़दीस शरीफ़ में है कि जमाअ़त से नमाज़ पढ़ना तन्हा नमाज़ पढ़ने से सत्ताईस दरजे बढ़ कर है।

(صحیح البخاری ، کتاب الاذان ، باب فضل صلاۃ الجماعۃ ، الحدیث:٦٤٥،ج١،ص٢٣٢)

इसी त़रह़ एक और ह़दीस शरीफ़ में है कि जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये चालीस दिन बा जमाअ़त नमाज़ पढ़े और तक्बीरे ऊला पाए, इस के लिये दो आज़ादियां लिख दी जाएंगी, एक दोज़ख़ से और एक निफ़ाक़ से। (या'नी वोह शख़्स मुनाफ़क़त से मह़फ़ूज़ रहेगा)

(سنن الترمذی،ابواب الصلاۃ،باب ماجاء فی فضل التکبیرۃ الاولیٰ،الحدیث:٢٤١،ج١،ص٢٧٤)

इन अ़ज़ीमुश्शान फ़ाइदों के इ़लावा जमाअ़त में और भी बहुत सी ख़ूबियां हैं मसलन मुसलमानों में इत्तिह़ाद व यक जहती, ना वाक़िफ़ों का मसाइले इ़ल्मी से वाक़िफ़ होना, हमसायों और अहले मह़ल्ला की ह़ालत से आगाह होना, इ़बादत गुज़ारों के फ़ैज़ व बरकत और मुलाक़ात से बहरा वर होना, इन के तुफ़ैल अपनी नमाज़ों का क़बूल होना, ह़ाजत मन्दों और ग़रीबों का ह़ाल मा'लूम होना, दूसरों को देख कर इ़बादत का ज़ौक़ो शौक़ और ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ रग़बत पैदा होना, दुन्या की आलूदगियों और बखेड़ों से इतनी देर तक मह़फ़ूज़ रहना वग़ैरा।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 235)

सुवाल : जमाअ़त में किस त़रह़ खड़ा होना चाहिये ?

जवाब : मुक़्तदी सीधी सफ़ बना कर मिल कर (इस त़रह़ खड़े हों कि कन्धे से कन्धा मस हो) दो आदमियों के दरमियान कुशादगी न रह जाए (कि शैत़ान बीच में घुस जाता है, सब के कन्धे, गर्दनें और पाउं एक सीध में हों) और अगर मुक़्तदी अकेला हो तो इमाम के बराबर दहनी जानिब इस त़रह़ खड़ा हो कि इस के पाउं का गट्टा इमाम के गट्टे से आगे न हों, बाईं त़रफ़ या पीछे खड़ा होना मकरूह है और सफ़ों की तरतीब येह है कि पहले मर्दों की सफ़ हो, फिर बच्चों की और अगर बच्चा तन्हा हो तो

www.dawateislami.net

मर्दों की सफ़ में दाख़िल हो जाए। इमाम को चाहिये कि मुक़्तदियों के आगे वस्त में खड़ा हो। अगर दाईं या बाईं जानिब खड़ा हुवा तो ख़िलाफ़े सुन्नत किया और इमाम के ऐन पीछे वोह शख़्स खड़ा हो जो जमाअ़त में सब से अफ़्ज़ल है।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 235)

सुवाल : पहली सफ़ में जगह होते हुवे पीछे खड़ा होना कैसा है ?

जवाब : पहली सफ़ में जगह होते हुवे मुक़्तदी का पिछली सफ़ में खड़ा होना तर्के वाजिब, नाजाइज़ और गुनाह है।

(फ़तावा रज़विय्या बाबुल जमाअ़त, जि. 7, स. 223)

और अगर पिछली सफ़ भर गई हो और पहली सफ़ में जगह हो तो उस को चीर कर जाए और ख़ाली जगह में खड़ा हो इस के लिये ह़दीस शरीफ़ में फ़रमाया कि जो सफ़ में कुशादगी देख कर इसे बन्द कर दे उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी।

(المجمع الزوائد، کتاب الصلاۃ، باب صلۃ الصفوف وسد الفرج، الحدیث:۲۵۰۳، ج۲،ص۲۵۱)

मगर येह हुक्म वहां है जहां फ़ितना व फ़साद का एह़तिमाल न हो।

(बहारे शरीअ़त, जमाअ़त के मसाइल, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 586)

सुवाल : कौन सी ऐसी चीज़ें हैं कि अगर इमाम न करे तो मुक़्तदी भी न करे ?

जवाब : वोह पांच चीज़ें हैं कि इमाम छोड़ दे तो मुक़्तदी भी न करे और इमाम का साथ दे :

﴿1﴾ ईदैन की तक्बीरें ﴿2﴾ क़ा'दए ऊला ﴿3﴾ सजदए तिलावत ﴿4﴾ सजदए सह्व और ﴿5﴾ क़ुनूत, जब कि रुकूअ़ फ़ौत होने का अन्देशा हो वरना क़ुनूत पढ़ कर रुकूअ़ करे और अगर इमाम ने क़ा'दए ऊला न किया और अभी सीधा खड़ा न हुवा हो तो मुक़्तदी अभी न उठे बल्कि उसे बताए ताकि वोह वापस आए, और अगर

www.dawateislami.net

सीधा खड़ा हो गया तो न बताए कि अब इस बताने वाले की नमाज़ जाती रहेगी बल्कि ख़ुद भी खड़ा हो जाए।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 236)

सुवाल : वोह क्या क्या चीज़ें हैं कि अगर इमाम करे तो मुक़्तदी न करें ?

जवाब : वोह चार चीज़ें हैं कि अगर इमाम करे तो मुक़्तदी उस का साथ न दे :

﴿1﴾ नमाज़ में कोई रुक्न ज़ाइद अदा करे, या'नी दो रुकूअ़ या दो से ज़ाइद सजदे करना ﴿2﴾ ईदैन की सोलह तक्बीरात से ज़ाइद कहे ﴿3﴾ नमाज़े जनाज़ा में पांच तक्बीरें कहे ﴿4﴾ क़ा'दए अख़ीरह के बा'द पांचवीं रक्अ़त के लिये भूल कर खड़ा हो जाए। फिर इस सूरत में अगर पांचवीं के सजदे से पहले लौट आया तो मुक़्तदी उस का साथ दे और उस के साथ सजदए सह्व कर के सलाम फेरे, और अगर पांचवीं रक्अ़त का सजदा कर लिया तो मुक़्तदी तन्हा सलाम फेर ले।

(बहारे शरीअ़त, जमाअ़त का बयान, मस्अला. 51, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 593 व हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 236)

सुवाल : वोह क्या क्या चीज़ें हैं कि अगर इमाम तर्क कर दे तो मुक़्तदी बजा लाए ?

जवाब : वोह चीज़ें मुन्दरिजए ज़ैल हैं :

﴿1﴾ तक्बीरे तह़रीमा में हाथ उठाना ﴿2﴾ सना पढ़ना जब कि इमाम फ़ातिहा में हो और आहिस्ता पढ़ता हो ﴿3﴾ रुकूअ़ और ﴿4﴾ सुजूद के वक़्त की तक्बीरें ﴿5﴾ रुकूअ़ व सुजूद की तस्बीहात ﴿6﴾ तस्मीअ़, या'नी سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ कहना ﴿7﴾ तशह्हुद पढ़ना ﴿8﴾ सलाम फेरना ﴿9﴾ तक्बीराते तशरीक़। (बहारे शरीअ़त, जमाअ़त का बयान, मस्अला. 52, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 594 व हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 236)

सुवाल : फ़र्ज़ नमाज़ तन्हा अदा करते हुवे अगर जमाअ़त क़ाइम हो जाए तो क्या करना चाहिये ?

www.dawateislami.net

जवाब : अगर तन्हा फ़र्ज़ नमाज़ अभी शुरूअ़ ही की थी या फ़ज्र या मग़रिब की नमाज़ एक रक्अ़त पढ़ चुका था कि इसी अस्ना में जमाअ़त शुरूअ़ हो गई तो फ़ौरन अपनी नमाज़ तोड़ कर जमाअ़त में शामिल हो जाए अलबत्ता अगर दूसरी रक्अ़त का सजदा कर लिया तो अब इन दो नमाज़ों या'नी फ़ज्र व मग़रिब में तोड़ने की इजाज़त नहीं, नमाज़ पूरी कर ले और चार रक्अ़त वाली नमाज़ में वाजिब है कि पहली वाली के साथ एक और मिला कर पढ़े और फिर तोड़ दे और अगर दो पढ़ ली हों तो तशह्हुद पढ़ कर सलाम फेर दे कि येह दोनों रक्अ़तें नफ़्ल हो जाएं, अलबत्ता अगर तीन पढ़ ली हैं तो वाजिब है कि न तोड़े वरना गुनाहगार होगा बल्कि पूरी कर के नफ़्ल की निय्यत से जमाअ़त में शामिल हो जाए तो जमाअ़त का सवाब पा लेगा मगर अ़स्र में जमाअ़त में शामिल नहीं हो सकता कि अ़स्र के बा'द नफ़्ल जाइज़ नहीं।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 237)

सुवाल : सुन्नत व नफ़्ल पढ़ते वक़्त अगर जमाअ़त शुरूअ़ हो जाए तो क्या हुक्म है ?

जवाब : नफ़्ल शुरूअ़ कर लिये थे तो क़त्अ़ न करे बल्कि दो रक्अ़त पूरी करे, और अगर तीसरी पढ़ रहा था तो चार पूरी कर ले और अगर जुमुआ़ और ज़ोहर की सुन्नतें पढ़ रहा था कि इसी दौरान में ख़ुत्बा या जमाअ़त शुरूअ़ हो गई तो अब क़त्अ़ न करे बल्कि चार पूरी कर ले।

(हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 237)

सुवाल : ह़ाजत के वक़्त नमाज़ तोड़ने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : नमाज़ तोड़ना बिग़ैर उ़ज़्र हो तो ह़राम है और ज़रूरतन नमाज़ तोड़ने के लिये बैठने की ह़ाजत नहीं, खड़े खड़े एक त़रफ़ सलाम फेर कर तोड़ दे। (हमारा इस्लाम, जमाअ़त का बयान, हिस्सा : 4, स. 237)

www.dawateislami.net

इमामत का बयान

सुवाल : इमामत के क्या मा'ना हैं ?

जवाब : इमामत सरदारी को कहते हैं और इमाम क़ौम के सरदार और पेश्वा को कहते हैं। इमामते नमाज़ के मा'ना हैं : "मुक़्तदी की नमाज़ का इमाम की नमाज़ से चन्द शर्तों के साथ वाबस्ता होना।" जैसा कि ह़दीसे मुबारका में आया है कि इमाम ज़ामिन होता है, (سنن الترمذی، ابواب الصلاۃ، باب ماجاء ان الامام ضامن...الخ، الحدیث۲۰۷، ج۱، ص۲۴۹) या'नी नमाज़ में इमाम के सर पर बड़ी ज़िम्मेदारी होती है। मुक़्तदियों की नमाज़ों का सह़ीह़ व फ़ासिद होना सब इसी के सर है लिहाज़ा किसी को मौलवी सूरत देख कर इमामत के लिये आगे बढ़ा देना नादानी और अह़कामे शरअ़ से ला परवाही है, शरीअ़ते मुत़ह्हरा ने इमामत के लिये कुछ शर्तें भी रखी हैं जिन का हर इमाम में पाया जाना ज़रूरी है।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 227)

सुवाल : शराइते़ इमामत क्या हैं ?

जवाब : इमाम के लिये छे शर्तें हैं :

﴾1﴿ इस्लाम ﴾2﴿ बुलूग़ ﴾3﴿ आ़क़िल होना ﴾4﴿ मर्द होना ﴾5﴿ इतनी क़िराअत जानता हो कि जिस से नमाज़ सह़ीह़ हो जाए ﴾6﴿ उ़ज़्र से मह़फ़ूज़ हो या'नी उसे कोई ऐसा मरज़ न हो जिस की वज्ह से उसे मा'ज़ूर कहा जाए। (हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 228)

मा'ज़ूर की ता'रीफ़ : क़त़रा आने, पीछे से रीह़ ख़ारिज होने, ज़ख़्म बहने, दुखती आंख से ब वज्हे मरज़ आंसू बहने, कान, नाफ़, नाक, पिस्तान से पानी निकलने, फोड़े या नासूर से रत़ूबत बहने और दस्त आने से वुज़ू टूट जाता है। अगर किसी को इस त़रह़ का मरज़ मुसल्सल जारी रहे कि शुरूअ़ से आख़िर तक नमाज़ का पूरा एक वक़्त गुज़र गया और वुज़ू के साथ नमाज़े फ़र्ज़ अदा न कर सका वोह शरअ़न मा'ज़ूर है। (नमाज़ के अह़काम, वुज़ू का त़रीक़ा, स. 43)

www.dawateislami.net

सुवाल : किन लोगों के पीछे नमाज़ मकरूहे तन्ज़ीही है ?

जवाब : गुलाम, दहक़ानी (किसान या देहाती), अन्धे, वलदुज़्ज़िना, अम्रद (वोह बालिग़ जिस की अभी दाढ़ी मूंछ न आई हो), कोढ़ी, फ़ालिज की बीमारी वाले, बर्स वाले, जिस से लोग कराहत व नफ़रत करते हों, और सफ़ीह (या'नी ऐसा बे वुकूफ़ कि ख़रीदो फ़रोख़्त में अकसर धोका खाता हो) । इस क़िस्म के लोगों के पीछे नमाज़ पढ़ना मकरूहे तन्ज़ीही और ख़िलाफ़े औला है और पढ़ लें तो ह़रज नहीं, बल्कि अगर ह़ाज़िरीन में येही लोग सब से ज़ाइद मसाइले नमाज़ व त़हारत का इ़ल्म रखते हों और इस जमाअ़त में कोई और इन से बेहतर न हो तो येही मुस्तह़िक़े इमामत हैं । इन की इमामत में कोई कराहत नहीं । और नाबीना की इमामत में तो बहुत ही ख़फ़ीफ़ कराहत है ।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 228 व बहारे शरीअ़त, इमामत का ज़ियादा ह़क़दार कौन है, मस्अला. 44 ह़िस्सा : 3, जि. 1, स. 569)

सुवाल : किन लोगों के पीछे नमाज़ मकरूहे तह़रीमी है ?

जवाब : वोह बद मज़हब जिस की बद मज़हबी ह़द्दे कुफ़्र तक न पहुंची हो और फ़ासिक़े मो'लिन जो ए'लानिया कबीरा गुनाह करता हो जैसे शराबी, जुवारी, ज़िनाकार, सूदख़ोर, चुग़ुल ख़ोर, दाढ़ी मुंडाने वाला या ख़श्ख़शी रखने वाला, या कतरवा कर एक मुठ्ठी से कम करने वाला या नाच रंग देखने वाला या मौलाए काइनात ह़ज़रते सय्यिदुना मौला अ़ली मुश्किल कुशा کرم اللہ وجھہ الکریم को शैख़ैने करीमैन या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर और ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अफ़्ज़ल बताने वाला या किसी सह़ाबी मसलन ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे मुआ़विया व ह़ज़रते सय्यिदुना अबू मूसा अश्अ़री رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बुरा कहने वाला, इन में से किसी को इमाम बनाना

www.dawateislami.net

गुनाह है। और इन के पीछे नमाज़ मकरूहे तह़रीमी वाजिबुल इआ़दा है या'नी जितनी पढ़ी हों सब का दोबारा पढ़ना वाजिब है।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 228)

सुवाल : किन लोगों के पीछे नमाज़ बिल्कुल नहीं होती ?

जवाब : जो क़िराअत ऐसी ग़लत़ पढ़ता हो जिस से मा'ना फ़ासिद हों या वुज़ू या ग़ुस्ल सह़ीह़ न करता हो, या ज़रूरिय्याते दीन में से किसी चीज़ का मुन्किर हो या'नी वोह बद मज़हब जिस की बद मज़हबी कुफ़्र की ह़द तक पहुंच चुकी हो, या वोह शफ़ाअ़त या दीदारे इलाही عَزَّوَجَلَّ या अ़ज़ाबे क़ब्र या किरामन कातिबीन का इन्कार करता है तो उन के पीछे नमाज़ बात़िले महज़ है क्यूंकि न उन की नमाज़, नमाज़ है न उन के पीछे नमाज़ होती है ह़त्ता कि जुमुआ़ व ईदैन में भी उन की इक़्तिदा दुरुस्त नहीं। (हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 229)

सुवाल : इक़्तिदा की शर्तें कितनी हैं ?

जवाब : इक़्तिदा या'नी किसी इमाम की नमाज़ के साथ अपनी नमाज़ वाबस्ता कर देना, इस की तेरह शर्तें हैं, और वोह येह हैं : ﴾1﴿ मुक़्तदी को इक़्तिदा की निय्यत करना ﴾2﴿ निय्यते इक़्तिदा का तक्बीरे तह़रीमा के साथ होना या तह़रीमा पर मुक़द्दम होना, बशर्ते कि इस सूरत में निय्यत व तह़रीमा के दरमियान कोई फ़े'ले अजनबी (ऐसा अ़मल जो मनाफ़िये नमाज़ हो मसलन खाना, पीना, गुफ़्तगू वग़ैरा) न पाया जाए ﴾3﴿ इमाम व मुक़्तदी दोनों का एक मकान (जगह) में होना, ख़्वाह मस्जिद हो या कोई और मक़ाम ﴾4﴿ दोनों की नमाज़ एक हो या इमाम की नमाज़ मुक़्तदी की नमाज़ को मुतज़म्मिन हो ﴾5﴿ इमाम की नमाज़ का मुक़्तदी के मज़हब में सह़ीह़ होना ﴾6﴿ इमाम व मुक़्तदी दोनों का इसे सह़ीह़ समझना ﴾7﴿ औ़रत का नमाज़ में मर्द के बराबर न होना (इस की सूरतें मख़्सूस हैं) ﴾8﴿ मुक़्तदी का इमाम से आगे न होना ﴾9﴿ इमाम

www.dawateislami.net

के इन्तिक़ालात का इ़ल्म होना या'नी इमाम के एक रुक्न से दूसरे रुक्न में जाने को जानना, ख़्वाह देख कर या किसी और त़रह़ ﴾10﴿ मुक़्तदी को इमाम का मुक़ीम या मुसाफ़िर होना मा'लूम होना, अगर्चे बा'दे नमाज़ हो ﴾11﴿ अरकाने नमाज़ की अदा में शरीक होना ﴾12﴿ अरकान की बजा आवरी में मुक़्तदी का इमाम की मानिन्द या कम होना ﴾13﴿ और शराइत़ में मुक़्तदी का इमाम से ज़ाइद न होना।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 229)

सुवाल : क्या तरावीह़ में ना बालिग़ बच्चे को इमाम बनाना दुरुस्त है ?

जवाब : बालिग़ मर्द किसी नमाज़ में ना बालिग़ लड़के की इक़्तिदा नहीं कर सकता। अगर्चे नमाज़े जनाज़ा व तरावीह़ व नवाफ़िल ही हों, येही सह़ीह़ है। हां ! ना बालिग़ दूसरे ना बालिग़ों की इमामत कर सकता है, जब कि समझदार हो। (हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 230)

सुवाल : इमामत का ज़ियादा ह़क़दार कौन है ?

जवाब : सब से ज़ियादा मुस्तह़िक़े इमामत वोह सुन्नी शख़्स है जो नमाज़ व त़हारत के अह़काम को सब से ज़ियादा जानता हो बशर्ते कि उसे इतना क़ुरआन शरीफ़ याद हो कि बत़ौरे मस्नून पढ़े और सह़ीह़ पढ़ सके या'नी मख़ारिज वग़ैरा दुरुस्त हों और फ़वाह़िश या'नी बे ह़याइयों और ऐसे कामों से बचता हो, जो मुरुव्वत के ख़िलाफ़ हैं।

इस के बा'द वोह शख़्स जो क़िराअत का ज़ियादा इ़ल्म रखता हो, और इस के मुवाफ़िक़ अदा भी करता हो। इस के बा'द वोह कि जो ज़ियादा परहेज़गार हो या'नी ह़राम तो ह़राम शुब्हात से भी बचता हो। इस के बा'द ज़ियादा उ़म्र वाला, इस के बा'द वोह जिस के अख़्लाक़ ज़ियादा अच्छे हों, इस के बा'द तहज्जुद गुज़ार और अगर चन्द शख़्स इन तमाम बातों में बराबर हों तो उन में जो शरई तरजीह़ रखता हो वोह ज़ियादा ह़क़दार है, या फिर उन में से जमाअ़त जिस को मुन्तख़ब कर ले।

www.dawateislami.net

हां ! अगर किसी जगह इमाम मख़्सूस हो तो वोही इमामत का ह़क़दार है, अगर्चे ह़ाज़िरीन में कोई इस से ज़ियादा इ़ल्म और ज़ियादा तजवीद जानने वाला हो, या'नी जब कि इमामे मख़्सूस में शराइते इमामत भी पाई जाती हों वरना वोह इमामत का अहल ही नहीं ।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 230)

सुवाल : जिस से लोग नाराज़ हों उस की इमामत का क्या हुक्म है ?

जवाब : जिस शख़्स की इमामत से लोग किसी शरई वज्ह से नाराज़ हों तो उस का इमाम बनना मकरूहे तह़रीमी है और अगर नाराज़ी किसी शरई वज्ह से न हो तो कोई कराहत नहीं बल्कि अगर वोही अह़क़्क़ हो तो उसी को इमाम होना चाहिये ।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 231)

सुवाल : क्या मा'ज़ूर भी इमामत कर सकता है ?

जवाब : मा'ज़ूर अपने जैसों की या अपने से ज़ाइद उ़ज़्र वाले की इमामत कर सकता है, कम उ़ज़्र वाले की इमामत नहीं कर सकता और अगर इमाम व मुक़्तदी दोनों को दो क़िस्म के उ़ज़्र हों मसलन एक को रियाह़ का मरज़ है दूसरे को नक्सीर का तो एक, दूसरे की इमामत नहीं कर सकता और उम्मी (या'नी जिस को कोई आयत याद नहीं और अगर आयतें तो याद हैं मगर हुरूफ़ सह़ीह़ अदा नहीं कर सकता जिस की वज्ह से मा'ना फ़ासिद हो जाते हैं तो वोह भी उम्मी के मिस्ल है) उम्मी का इमाम हो सकता है, क़ारी का नहीं, और क़ारी से मुराद वोह शख़्स है कि ब क़दरे फ़र्ज़ कुरआन सह़ीह़ पढ़ सकता हो, चुनान्चे अगर उम्मी ने उम्मी और क़ारी की इमामत की तो किसी की नमाज़ न हुई, अगर्चे क़ारी दरमियाने नमाज़ में शरीक हुवा हो । (हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 231)

www.dawateislami.net

सुवाल : मुक़्तदी किसे कहते है और इस की कितनी क़िस्में हैं ?

जवाब : इमाम की इक़्तिदा में नमाज़ अदा करने वाले को मुक़्तदी कहते हैं और इस की चार क़िस्में हैं :

﴾1﴿ **मुदरिक :** या'नी वोह जिस ने अव्वल रक्अ़त से तशह्हुद तक इमाम के साथ नमाज़ पढ़ी ।

﴾2﴿ **लाहिक़ :** या'नी वोह कि इमाम के साथ पहली रक्अ़त में शरीक हुवा मगर इक़्तिदा के बा'द उस की कुल रक्अ़तें या बा'ज़ फ़ौत हो गईं, ख़्वाह उ़ज़्र से हो या बिला उ़ज़्र ।

﴾3﴿ **मस्बूक़ :** या'नी वोह कि इमाम की बा'ज़ रक्अ़तें पढ़ने के बा'द जमाअ़त में शामिल हुवा और आख़िर तक शामिल रहा ।

﴾4﴿ **लाहिक़ मस्बूक़ :** या'नी वोह कि जिसे शुरूअ़ की कुछ रक्अ़तें इमाम के साथ न मिलें, फिर जमाअ़त में शामिल हुवा, और इस के बा'द लाहिक़ हो गया । (हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, हिस्सा : 4, स. 231)

सुवाल : लाहिक़ का हुक्म क्या है ?

जवाब : लाहिक़, मुदरिक के हुक्म में है कि जब अपनी फ़ौत शुदा नमाज़ पढ़ेगा तो उस में न क़िराअत करेगा न सह्व होने की सूरत में सजदए सह्व करेगा और अगर मुसाफ़िर था तो नमाज़ में निय्यते इक़ामत से इस का फ़र्ज़ मुतग़य्यर न होगा कि दो से चार हो जाए और अपनी फ़ौत शुदा को पहले पढ़ेगा । येह न होगा कि इमाम के साथ पढ़े, फिर जब इमाम फ़ारिग़ हो जाए तो अपनी पढ़े, मसलन इस को ह़दस हुवा और वुज़ू कर के आया तो इमाम को क़ा'दए अख़ीरा में पाया तो येह क़ा'दा में शरीक न होगा, बल्कि जहां से बाक़ी है वहां से पढ़ना शुरूअ़ करे इस के बा'द अगर इमाम को पा ले तो साथ हो जाए और अगर ऐसा न किया बल्कि इमाम के साथ हो लिया फिर इमाम के सलाम फेरने के बा'द फ़ौत शुदा पढ़ी तो नमाज़ हो गई मगर गुनाहगार हुवा ।

(बहारे शरीअ़त, जमाअ़त का बयान, मस्अला. 28, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 589)

www.dawateislami.net

सुवाल : मस्बूक़ का क्या हुक्म है ?

जवाब : मस्बूक़ पहले इमाम के साथ हो ले फिर इमाम के सलाम फेरने के बा'द अपनी फ़ौत शुदा नमाज़ पढ़े। अपनी फ़ौत शुदा रक्अ़ात की अदा में येह मुन्फ़रिद (तन्हा) के हुक्म में है, कि जो रक्अ़तें जाती रही थीं इन में क़िराअत करे। और अगर किसी वज्ह से पहले सना न पढ़ी थी तो अब पढ़े। क़िराअत से पहले اَعُوْذُ بِاللّٰہِ और بِسْمِ اللّٰہِ पढ़े। और अगर फ़ौत शुदा में सह्व हो तो सजदए सह्व करे, और तशह्हुद के ह़क़ में येह रक्अ़त, पहली रक्अ़त क़रार न दी जाएगी बल्कि दूसरी, तीसरी, चौथी जो शुमार में आए, मसलन चार रक्अ़त वाली नमाज़ में इसे एक रक्अ़त मिली तो ह़क़्क़े क़िराअत में येह जो अब पढ़ता है वोह पहली है और ह़क़्क़े तशह्हुद में दूसरी, लिहाज़ा एक रक्अ़त फ़ातिह़ा और सूरत के साथ पढ़ कर क़ा'दा करे और इस के बा'द वाली में भी फ़ातिह़ा के साथ सूरत मिलाए और उस में न बैठे, फिर इस के बा'द वाली में फ़ातिह़ा पढ़ कर रुकूअ़ कर दे और तशह्हुद वग़ैरा पढ़ कर नमाज़ ख़त्म कर दे। और मस्बूक़ को चाहिये कि इमाम के सलाम फेरते ही फ़ौरन खड़ा न हो, बल्कि इमाम के दूसरी त़रफ़ सलाम फेरने तक सब्र करे, ताकि मा'लूम हो जाए कि इमाम को सजदए सह्व तो नहीं करना है।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 232)

सुवाल : मस्बूक़ अगर इमाम के साथ सलाम फेर दे तो क्या हुक्म है ?

जवाब : मस्बूक़ ने येह गुमान कर के कि मुझे भी इमाम के साथ सलाम फेरना चाहिये क़स्दन सलाम फेर दिया तो नमाज़ फ़ासिद हो गई और अगर भूल कर सलाम फेरा तो अगर इमाम के बा'द फेरा तो सजदए सह्व लाज़िम है, अपनी नमाज़ पूरी कर के सजदए सह्व करे और अगर बिल्कुल साथ साथ फेरा तो फिर सजदए सह्व नहीं, फ़ौरन खड़ा हो जाए और अपनी नमाज़ पूरी कर ले।

(हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 233)

www.dawateislami.net

सुवाल : मस्बूक़ खड़ा हो गया, अब इमाम ने सजदए सह्व किया तो मस्बूक़ क्या करे ?

जवाब : अगर इमाम ने सलाम फेरा और मस्बूक़ अपनी नमाज़ पूरी करने खड़ा हुवा, अब इमाम ने सजदए सह्व किया तो जब तक मस्बूक़ ने इस रक्अ़त का सजदा न किया हो लौट आए और इमाम के साथ सजदए सह्व करे, और फिर अपनी पढ़े, और पहले जो अफ़्आ़ल कर चुका था उस का शुमार न होगा। और अगर न लौटा और अपनी पढ़ ली तो आख़िर में सजदए सह्व करे और अगर इस रक्अ़त का सजदा कर चुका है तो अब न लौटे, क्यूंकि अब लौटेगा तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी। (हमारा इस्लाम, इमामत का बयान, हिस्सा : 4, स. 233)

मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान

सुवाल : मुफ़्सिदाते नमाज़ से क्या मुराद है ?

जवाब : मुफ़्सिदाते नमाज़ वोह चीज़ें हैं कि अगर दौराने नमाज़ पाई जाएं तो इन के बाइ़स नमाज़ फ़ासिद हो जाती है या'नी टूट जाती है और उसे दोबारा सह़ीह़ तौ़र पर अदा करना ज़िम्मे पर बाक़ी रहता है।

(हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, हिस्सा : 4, स. 238)

सुवाल : वोह कौन से अक़्वाल हैं जिन्हें नमाज़ के दौरान कहने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है ?

जवाब : ऐसे अक़्वाल जिन्हें नमाज़ के दौरान कहने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है, मुन्दरिजए ज़ैल है :

﴾1﴿ कलाम करना, चाहे जानबूझ कर हो या भूल से, सोते में हो या बेदारी में, अपनी ख़ुशी से कलाम किया हो या किसी मजबूरी के बाइ़स, थोड़ा हो या बहुत ﴾2﴿ किसी को सलाम करना ﴾3﴿ ज़बान से सलाम का जवाब देना ﴾4﴿ छींक का जवाब देना या'नी किसी को छींक आने पर يَرْحَمُكَ اللّٰهُ कहना ﴾5﴿ ख़ुशी की ख़बर सुन कर जवाब में اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहना ﴾6﴿ कोई तअ़ज्जुब ख़ेज़ चीज़ देख कर ब क़स्दे जवाब سُبْحَانَ اللّٰهِ या لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहना। ﴾7﴿ बुरी ख़बर सुन कर اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ कहना

www.dawateislami.net

﴾8﴿ अल्फ़ाज़े कुरआन से किसी को जवाब देना या मुख़ातब करना ﴾9﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नामे पाक सुन कर جَلَّ جَلَالُهٗ कहना ﴾10﴿ नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का नामे नामी इस्मे गिरामी सुन कर दुरूद शरीफ़ पढ़ना ﴾11﴿ इमाम की क़िराअत सुन कर صَدَقَ اللهُ وَصَدَقَ رَسُوْلُهٗ कहना जब कि तीनों सूरतों में ब क़स्दे जवाब हो ﴾12﴿ अज़ान का जवाब देना ﴾13﴿ शैतान का नाम सुन कर उस पर ला'नत करना ﴾14﴿ चांद देख कर رَبِّیْ وَ رَبُّكَ اللهُ पढ़ना ﴾15﴿ बुख़ार वग़ैरा की वज्ह से कुछ कुरआन पढ़ कर दम करना ﴾16﴿ कुरआने करीम की कोई इबारत ब निय्यते शे'र पढ़ना ﴾17﴿ दर्द या मुसीबत की वज्ह से आह, ऊह, उफ़ वग़ैरा अल्फ़ाज़ कहना ﴾18﴿ नमाज़ में कुरआन शरीफ़ से देख कर कुरआन पढ़ना ﴾19﴿ सिर्फ़ तौरैत व इन्जील को नमाज़ में पढ़ना ﴾20﴿ नमाज़ी का अपने इमाम के सिवा किसी दूसरे को लुक़्मा देना ﴾21﴿ अपने मुक़्तदी के सिवा इमाम का किसी दूसरे का लुक़्मा लेना ﴾22﴿ नमाज़ में ऐसी चीज़ की दुआ करना जिस का बन्दों से सुवाल किया जा सकता है ﴾23﴿ कुरआने मजीद या ﴾24﴿ अज़्कारे नमाज़ मसलन تسمیع سَمِعَ اللهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ और तह़मीद رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ पढ़ने में या तशह्हुद में ऐसी ग़लती करने से कि जिस से मा'ना बिगड़ते हैं वग़ैरा वग़ैरा। (हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 238)

सुवाल : वोह अफ़्आ़ल कौन कौन से हैं जो नमाज़ को फ़ासिद कर देते हैं ?

जवाब : वोह अफ़्आ़ल मुन्दरिजए ज़ैल हैं जो नमाज़ को फ़ासिद कर देते हैं :

﴾1﴿ अ़मले कसीर या'नी जिस काम के करने वाले को दूर से देख कर गुमाने ग़ालिब हो कि वोह नमाज़ में नहीं ﴾2﴿ नमाज़ के दौरान कुर्ता या पाजामा पहनना या तहबन्द बांधना ﴾3﴿ नापाक जगह पर किसी ह़ाइल शै के बिग़ैर सजदा करना ﴾4﴿ हाथ या घुटने सजदे में नापाक जगह पर रखना ﴾5﴿ सित्र खोले हुवे नमाज़ पढ़ना या ﴾6﴿ ब क़दरे मानेअ़

www.dawateislami.net

नजासत के साथ पूरा रुक्न अदा करना ﴾7﴿ इस ह़ालत में तीन तस्बीह़ का वक़्त गुज़र जाना ﴾8﴿ नमाज़ के दौरान इमाम से आगे बढ़ जाना ﴾9﴿ नमाज़ के अन्दर खाना पीना, ख़्वाह जान बूझ कर हो या भूल कर, थोड़ा हो या बहुत, यहां तक कि अगर तिल बिग़ैर चबाए निगल गया या कोई क़त़रा इस के मुंह में गिरा और इस ने निगल लिया तो नमाज़ जाती रही ﴾10﴿ सीने को (बिला उ़ज़्र) क़िब्ला से फेरना या'नी इतना फेरना कि सीना, ख़ास जेहते का'बा से पैंतालीस दरजे हट जाए ﴾11﴿ दो सफ़ों की मिक़्दार के बराबर या'नी तीन क़दम बिला ज़रूरत एक बार चलना या हटना ﴾12﴿ एक नमाज़ से दूसरी की त़रफ़ तक्बीर कह कर मुन्तक़िल होना, मसलन ज़ोहर पढ़ रहा था और अ़स्र या नफ़्ल की निय्यत से اَللّٰہُ اَکْبَر कहा तो ज़ोहर की नमाज़ जाती रही ﴾13﴿ तीन कलिमात इस त़रह़ लिखना कि हुरूफ़ ज़ाहिर हों ﴾14﴿ एक रुक्न में तीन बार खुजाना या ﴾15﴿ पै दर पै तीन बाल उख़ाड़ना ﴾16﴿ दर्द और मुसीबत में आवाज़ से रोना ﴾17﴿ जुनून या बेहोशी का त़ारी होना ﴾18﴿ (जागते में) रुकूअ़ व सुजूद वाली नमाज़ में बालिग़ आदमी क़हक़हा मार कर इस त़रह़ हंसा कि आस पास वालों ने सुन लिया तो इस सूरत में वुज़ू भी टूट जाएगा और नमाज़ भी और अगर ख़ुद अपनी हंसी की आवाज़ सुनी, आस पास वालों ने न सुनी तो इस सूरत में सिर्फ़ नमाज़ टूटेगी, वुज़ू बाक़ी रहेगा ﴾19﴿ तक्बीराते इन्तिक़ाल में اَللّٰہُ اَکْبَر के अलिफ़ को दराज़ करना या'नी **आल्लाह** कहना या **आक्बर** कहना या **अक्बार** कहना। और अगर तक्बीरे तह़रीमा में ऐसे कहा तो नमाज़ शुरूअ़ ही न हुई। वग़ैरा।

(हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 239 व बहारे शरीअ़त, वुज़ू तोड़ने वाली चीज़ों का बयान, मस्अला, 41-43, ह़िस्सा : 2, जि. 1, स. 308)

सुवाल : मरीज़ की ज़बान से बे इख़्तियार "आह" निकल जाए तो नमाज़ फ़ासिद होगी या नहीं ?

www.dawateislami.net

जवाब : मरीज़ की ज़बान से बे इख़्तियार "आह ऊह" वग़ैरा निकली तो नमाज़ फ़ासिद न होगी। इसी त़रह़ छींक, खांसी, जमाई, डकार वग़ैरा में जितने हुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं मुआ़फ़ है। यूंही जन्नत व दोज़ख़ या मदीने को याद करते हुवे येह अल्फ़ाज़ कहे तो नमाज़ फ़ासिद न हुई। (हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 240)

सुवाल : खंकारने से नमाज़ किस वक़्त फ़ासिद होगी ?

जवाब : खंकारने में जब दो ह़ुरूफ़ ज़ाहिर हों जैसे "उख़" तो नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी जब कि न कोई उ़ज़्र हो न ग़रज़े सह़ीह़, तो अगर उ़ज़्र से हो मसलन त़बीअ़त का तक़ाज़ा है या किसी सह़ीह़ ग़रज़ के लिये हो मसलन आवाज़ साफ़ करने के लिये या इमाम से ग़लती हो गई है, या इस लिये खंकारता है कि दूसरे शख़्स को इस का नमाज़ में होना मा'लूम हो जाए तो नमाज़ फ़ासिद न होगी।

(हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 240)

सुवाल : क्या लुक़्मा देना तरावीह़ के सिवा और नमाज़ों में भी दुरुस्त है ?

जवाब : जी हां ! तरावीह़ और ग़ैर तरावीह़ सब नमाज़ों में अपने इमाम को लुक़्मा देना और इमाम का अपने मुक़्तदी से लुक़्मा लेना दुरुस्त है मगर इमाम के रुकते ही फ़ौरन लुक़्मा देना मकरूह है, थोड़ी देर ठहरना चाहिये क्यूंकि हो सकता है कि इमाम अपनी ग़लती ख़ुद दुरुस्त कर ले, इसी त़रह़ इमाम के लिये मकरूह है कि मुक़्तदियों को लुक़्मा देने पर मजबूर करे या'नी बार बार पढ़े या ख़ामोश खड़ा रहे, येह न चाहिये बल्कि चाहिये कि किसी दूसरी सूरत की त़रफ़ मुन्तक़िल हो जाए या कोई दूसरी आयत शुरूअ़ कर दे बशर्ते कि इस का येह वस्ल (मिलाना) नमाज़ को फ़ासिद न करे। और अगर ब क़दरे ह़ाजत पढ़ चुका हो तो रुकूअ़ कर दे। (हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 240)

सुवाल : नमाज़ी के आगे से गुज़रने से नमाज़ फ़ासिद होगी या नहीं ?

जवाब : नमाज़ी के आगे से किसी का गुज़रना नमाज़ को फ़ासिद नहीं

www.dawateislami.net

करता ख़्वाह गुज़रने वाला मर्द हो या औ़रत या कुत्ता, मगर नमाज़ी के आगे से गुज़रना बहुत सख़्त गुनाह है, जैसा कि सरकारे मदीना, सुल्ताने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना, साहिबे मुअ़त्तर पसीना, बाइसे नुज़ूले सकीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अगर कोई जानता कि अपने भाई के सामने से नमाज़ में आड़े हो कर गुज़रने में क्या है तो सौ बरस खड़ा रहना इस एक क़दम चलने से बेहतर समझता।

(المؤطا للامام مالك، كتاب قصر الصلاة فى السفر،باب التشديد...الخ، الحديث:٣٧١، ج١،ص١٥٤)

एक और रिवायत में ह़ज़रते सय्यिदुना का'बुल अह़बार رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का इरशाद है : नमाज़ी के सामने से गुज़रने वाला अगर जानता कि इस पर क्या गुनाह है तो ज़मीन में धंस जाने को गुज़रने से बेहतर जानता।

(سنن ابن ماجه، كتاب اقا مة الصلاة، باب المرور بين يدى المصلى، الحديث:٩٤٦، ج١،ص٥٠٦

व बहारे शरीअ़त, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, मस्अला, 69-70, ह़िस्सा : 3, जि. 1, स. 614)

सुवाल : सुतरह किसे कहते हैं ?

जवाब : नमाज़ी के आगे किसी ऐसी चीज़ का होना जिस से आड़ हो जाए, उसे सुतरह कहते हैं, नमाज़ी के आगे सुतरह हो और सुतरह के आगे से गुज़रा जाए तो कोई ह़रज नहीं। सुतरह की मिक़्दार येह है कि एक हाथ (दरमियानी उंगली के सिरे से ले कर कोहनी तक) ऊंचा और उंगली के बराबर मोटा हो और अगर सामने दीवार या दरख़्त वग़ैरा हो तो वोही सुतरह है। (हमारा इस्लाम, मुफ़्सिदाते नमाज़ का बयान, ह़िस्सा : 4, स. 241)

नमाज़े मरीज़ का बयान

सुवाल : बीमार के लिये किस ह़ालत में बैठ कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ है?

जवाब : ऐसा बीमार आदमी जो बीमारी की वज्ह से खड़े हो कर नमाज़ न पढ़ सकता हो, या खड़े हो कर पढ़ने से ज़रर लाह़िक़ होगा या मरज़ बढ़ जाएगा या देर में अच्छा होगा या चक्कर आता है या खड़े हो

www.dawateislami.net

कर नमाज़ पढ़ने से क़त्रा आएगा या बहुत शदीद ना क़ाबिले बरदाश्त दर्द पैदा हो जाएगा तो इन सब सूरतों में बैठ कर रुकूअ़ व सुजूद के साथ नमाज़ पढ़े ।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़े मरीज़ का बयान, मस्अला. 1, हिस्सा : 3, जि. 1, स. 720)

सुवाल : ऐसा बीमार जो किसी चीज़ का सहारा ले कर खड़ा हो सकता हो, क्या वोह भी बैठ कर नमाज़ पढ़ सकता है ?

जवाब : अगर खड़े होने से महज़ कुछ तक्लीफ़ होती हो तो येह उ़ज़्रे शरई नहीं, बल्कि क़ियाम उस वक़्त साक़ित होगा कि जब बिल्कुल खड़ा न हो सके लिहाज़ा अगर अ़सा के ज़रीए या ख़ादिम या दीवार से टेक लगा कर खड़ा हो सकता है तो फ़र्ज़ है कि खड़ा हो कर पढ़े बल्कि अगर कुछ देर भी खड़ा हो सकता है, अगर्चे इतना ही कि खड़ा हो कर اَللّٰہُ اَکْبَر कह ले तो फ़र्ज़ है कि खड़ा हो कर इतना कह ले फिर बैठ जाए ।

आज कल उ़मूमन येह बात देखी जाती है कि जहां ज़रा सा बुख़ार आया या ख़फ़ीफ़ सी तक्लीफ़ हुई फ़ौरन बैठ कर नमाज़ शुरूअ़ कर दी । ऐसे लोगों को इन मसाइल से सबक़ ह़ासिल करना चाहिये, और जितनी नमाज़ें बा वुजूद क़ुदरते क़ियाम बैठ कर पढ़ीं, इन का इआ़दा (दोबारा पढ़ना) फ़र्ज़ है ।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मरीज़ का बयान, हिस्सा : 5, स. 330)

सुवाल : जो शख़्स बैठ कर भी नमाज़ पढ़ने की त़ाक़त न रखता हो वोह क्या करे ?

जवाब : अगर मरीज़ अपने आप तो न बैठ सकता हो मगर कोई दूसरा वहां है कि बिठा देगा तो बैठ कर पढ़ना ज़रूरी है और अगर बैठा नहीं रह सकता तो तक्या या दीवार या किसी शख़्स पर टेक लगा कर पढ़े और बैठ कर पढ़ने में जिस त़रह़ आसानी हो उसी त़रह़ बैठे और अगर येह भी न हो सके तो अब लैट कर नमाज़ पढ़े ।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मरीज़ का बयान, हिस्सा : 5, स. 331)

www.dawateislami.net

सुवाल : मरीज़ लैटे लैटे नमाज़ किस त़रह़ अदा करे ?

जवाब : लैट कर पढ़ने की सूरत येह है कि ख़्वाह दाहिनी या बाईं करवट पर लैट कर क़िब्ला को मुंह करे ख़्वाह चित लैट कर क़िब्ले को पाउं करे मगर इस सूरत में पाउं न फैलाए कि क़िब्ला की त़रफ़ पाउं फैलाना मकरूह है बल्कि घुटने खड़े रखे और सर के नीचे तक्या वग़ैरा रख कर सर को ऊंचा कर ले ताकि मुंह क़िब्ले की त़रफ़ हो जाए, और येह सूरत या'नी चित लैट कर पढ़ना अफ़्ज़ल है। और रुकूअ़ व सुजूद के लिये सर से इशारा करे और सजदे का इशारा रुकूअ़ से पस्त करे, सजदे के लिये तक्या वग़ैरा कोई चीज़ पेशानी के क़रीब उठा कर उस पर सजदा करना मकरूहे तह़रीमी है बल्कि इस सूरत में अगर सजदे के लिये रुकूअ़ की निस्बत ज़ियादा सर न झुकाया तो सजदा हुवा ही नहीं।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मरीज़ का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 331)

सुवाल : अगर बीमार सर से भी इशारा न कर सके तो क्या करे ?

जवाब : अगर सर से भी इशारा न कर सके तो नमाज़ साक़ित़ है। आंख या भंवों या दिल के इशारे से पढ़ने की ज़रूरत नहीं, फिर अगर इसी ह़ालत में छे नमाज़ों का वक़्त गुज़र गया तो इन छे की क़ज़ा भी साक़ित़ है, फ़िदया देने की भी ह़ाजत नहीं। और अगर छे नमाज़ों का वक़्त गुज़रने से पहले सिह़्ह़त मन्द हो गया तो अब इन नमाज़ों की क़ज़ा लाज़िम है अगर्चे इतनी ही सिह़्ह़त हो कि सर के इशारे से पढ़ सके। (हमारा इस्लाम, नमाज़े मरीज़ का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 332)

सुवाल : इशारे से जो नमाज़ें पढ़ीं हैं उन का इआ़दा है या नहीं ?

जवाब : इशारे से जो नमाज़ें पढ़ीं हैं, सिह़्ह़त के बा'द उन का इआ़दा नहीं, यूंही अगर ज़बान बन्द हो गई और गूंगे की त़रह़ नमाज़ पढ़ी फिर ज़बान खुल गई तो उन नमाज़ों का भी इआ़दा नहीं।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मरीज़ का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 332)

www.dawateislami.net

सुवाल : बीमारी में जो नमाज़ें फ़ौत हुईं इन की क़ज़ा किस त़रह़ करे ?

जवाब : बीमारी में जो नमाज़ें क़ज़ा हो गईं अब अच्छा हो कर उन्हें पढ़ना चाहता है तो वैसे ही पढ़े जैसे तन्दुरुस्त पढ़ते हैं और अगर सिह़्ह़त की ह़ालत में क़ज़ा हुईं और बीमारी में उन्हें पढ़ना चाहता है तो जिस त़रह़ पढ़ सकता है पढ़े, हो जाएंगी । सिह़्ह़त की सी पढ़ना इस वक़्त वाजिब नहीं । (हमारा इस्लाम, नमाज़े मरीज़ का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 332)

नमाज़े मुसाफ़िर का बयान

सुवाल : शरीअ़त में मुसाफ़िर किसे कहते हैं ?

जवाब : शरअ़न मुसाफ़िर वोह शख़्स है जो तीन दिन की राह तक जाने के इरादे से बस्ती से बाहर हुवा, तीन दिन से मुराद येह नहीं कि सुब्ह़ से शाम तक चले, बल्कि मुराद दिन का अकसर ह़िस्सा है, इस लिये कि खाने पीने, नमाज़ और दीगर ज़रूरिय्यात के लिये ठहरना तो ज़रूरी है और चलने से मुराद मो'तदिल चाल है या'नी न तेज़ हो न सुस्त ।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 332)

सुवाल : शरअ़न मसाफ़ते सफ़र क्या है ?

जवाब : सय्यिदी व मुर्शिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ शरअ़न सफ़र की मिक़्दार साढ़े सत्तावन मील (या'नी तक़रीबन 92 किलो मीटर) है जो कोई इतनी मिक़्दार का फ़ासिला त़ै करने की ग़रज़ से अपने शहर या गाऊं की आबादी से बाहर निकल आया वोह अब शरअ़न मुसाफ़िर है । (फ़तावा रज़विय्या, बाब सलातुल मुसाफ़िर, जि. 8, स. 270)

सुवाल : बस्ती से बाहर होने का क्या मत़लब है ?

जवाब : बस्ती से बाहर होने से मुराद येह है कि बस्ती की आबादी से बाहर हो जाए या'नी शहर में है तो शहर की आबादी से और गाऊं में है तो गाऊं की आबादी से बाहर हो जाए । शहर वाले के लिये येह भी

www.dawateislami.net

ज़रूरी है कि शहर के आस पास जो आबादी शहर से मुत्तसिल है इस से भी बाहर हो जाए और अगर स्टेशन आबादी से बाहर हो तो स्टेशन पर पहुंचने से पहले मुसाफ़िर हो जाएगा जब कि तीन दिन का इरादा मुत्तसिल सफ़र का हो। (हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, हिस्सा : 5, स. 333)

सुवाल : वोह क्या अह़काम हैं जो मुसाफ़िर के लिये बदल जाते हैं ?

जवाब : नमाज़ का क़स्र हो जाना, रोज़ा न रखने का मुबाह़ हो जाना, मोज़ों के मस्ह़ की मुद्दत का तीन दिन तक बढ़ जाना, जुमुआ़, ईदैन और क़ुरबानी का इस के ज़िम्मे लाज़िम न रहना वग़ैरा।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, हिस्सा : 5, स. 333)

सुवाल : नमाज़ में क़स्र का क्या मत़लब है ?

जवाब : क़स्र या'नी चार रक्अ़त वाले फ़र्ज़ को दो पढ़ना, क्यूंकि मुसाफ़िर के ह़क़ में येह दो रक्अ़तें ही पूरी नमाज़ है अगर क़स्दन चार रक्अ़त पढ़ेगा गुनाहगार होगा, और मुस्तह़िक़े अ़ज़ाब है कि वाजिब तर्क किया, लिहाज़ा तौबा करे और सुन्नत व नफ़्ल में क़स्र नहीं, बल्कि पूरी पढ़ी जाएंगी, अलबत्ता ख़ौफ़ और रवारवी (या'नी ख़ौफ़ और घबराहट) की ह़ालत में मुआ़फ़ हैं और अम्न की ह़ालत में पढ़ी जाएं।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, हिस्सा : 5, स. 333)

सुवाल : मुसाफ़िर कब तक मुसाफ़िर रहता है ?

जवाब : मुसाफ़िर उस वक़्त तक मुसाफ़िर है जब तक अपनी बस्ती में पहुंच न जाए या आबादी में पूरे पन्दरह दिन ठहरने की निय्यत न कर ले और येह उस वक़्त है जब तीन दिन की राह चल चुका हो और अगर तीन मन्ज़िल पहुंचने से पहले अपने वत़न वापसी का इरादा कर लिया तो अब मुसाफ़िर न रहा अगर्चे जंगल में हो।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, मस्अला. 21, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 744)

www.dawateislami.net

सुवाल : वत़न कितनी क़िस्म के होते हैं ?

जवाब : वत़न दो क़िस्म के होते हैं :

﴾1﴿ वत़ने अस्ली ﴾2﴿ वत़ने इक़ामत ।

वत़ने अस्ली वोह जगह है जहां इस की पैदाइश है या इस के घर के लोग वहां रहते हैं या वहां सुकूनत इख़्तियार कर ली और येह इरादा है कि यहां से न जाएगा । और **वत़ने इक़ामत** वोह जगह है जहां मुसाफ़िर ने पन्दरह दिन या इस से ज़ियादा ठहरने का इरादा किया हो ।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, मस्अला. 52, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 750)

सुवाल : किसी शख़्स का इरादा अगर किसी जगह पन्दरह रोज़ से कम रहने का है, मगर काम पूरा न हो और उस ने फिर चार छे दिन इक़ामत की निय्यत कर ली तो अब उस पर क़स्र वाजिब है या नहीं ?

जवाब : मुसाफ़िर जब किसी काम के लिये या साथियों के इन्तिज़ार में दो चार दिन या तेरह चौदह दिन की निय्यत से ठहरा या येह इरादा है कि काम हो जाएगा तो चला जाएगा और इसी त़रह़ आज कल आज कल करते बरसों गुज़र जाएं जब भी मुसाफ़िर ही है, नमाज़ क़स्र पढ़े जब तक कि इकठ्ठे पन्दरह दिन की निय्यत न करे ।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, मस्अला. 36, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 747)

सुवाल : अगर मुसाफ़िर ने चार रक्अ़त वाली नमाज़ पूरी पढ़ ली तो क्या हुक्म है ?

जवाब : अगर सह्वन (भूल से) ऐसा हो गया तो आख़िर में सजदए सह्व कर ले, दो फ़र्ज़ हो जाएंगे और दो नफ़्ल, और अगर क़स्दन चार पढ़ीं और दो पर क़ा'दा किया तो फ़र्ज़ अदा हो गए, और आख़िरी दो रक्अ़तें नफ़्ल हुईं मगर गुनाहगार हुवा और अगर दो रक्अ़त पर क़ा'दा न किया तो फ़र्ज़ अदा न हुवे और वोह नमाज़ नफ़्ल हो गई फ़र्ज़ दोबारा पढ़े । (हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, हिस्सा : 5, स. 334)

www.dawateislami.net

सुवाल : मुसाफ़िर मुक़ीम की इक़्तिदा कर सकता है या नहीं ?

जवाब : नमाज़ का वक़्त ख़त्म होने पर मुसाफ़िर मुक़ीम की इक़्तिदा नहीं कर सकता, वक़्त में कर सकता है, और इस सूरत में मुसाफ़िर के फ़र्ज़ भी चार हो जाएंगे । येह हुक्म सिर्फ़ चार रक्अ़त वाली नमाज़ का है, लिहाज़ा जिन नमाज़ों में क़स्र नहीं उन में वक़्त और बा'दे वक़्त दोनों सूरतों में इक़्तिदा कर सकता है ।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, हिस्सा : 5, स. 335)

सुवाल : मुक़ीम मुसाफ़िर की इक़्तिदा कर सकता है या नहीं ?

जवाब : अदा व क़ज़ा दोनों में मुक़ीम मुसाफ़िर की इक़्तिदा कर सकता है । वोह इस त़रह़ कि चार रक्अ़त वाली नमाज़ में इमाम के सलाम फेरने के बा'द अपनी दो रक्अ़तें पढ़ ले और इन रक्अ़तों में क़िराअत बिल्कुल न करे बल्कि ब क़दरे फ़ातिह़ा चुप खड़ा रहे, अलबत्ता इस सूरत में इमाम को चाहिये कि नमाज़ शुरूअ़ करते वक़्त अपना मुसाफ़िर होना ज़ाहिर कर दे और अगर शुरूअ़ में न कहा तो बा'द में कह दे और शुरूअ़ में कह दिया है जब भी बा'द में कह दे कि अपनी नमाज़ें पूरी कर लो मैं मुसाफ़िर हूं, ताकि जो लोग उस वक़्त मौजूद न थे उन्हें भी इमाम का मुसाफ़िर होना मा'लूम हो जाए ।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, हिस्सा : 5, स. 335)

सुवाल : मुसाफ़िर चलती रेल गाड़ी में नमाज़ पढ़ सकता है या नहीं ?

जवाब : चलती रेल गाड़ी पर फ़र्ज़ व वाजिब व सुन्नते फ़ज्र नहीं हो सकते, हां नफ़्ल और दूसरी नमाज़ें हो सकती हैं, इस लिये कि फ़राइज़ वग़ैरा में जगह का एक रहना और नमाज़ी का क़िब्ला रुख़ होना शर्त़ है, और चलती हुई रेल में येह दोनों बातें मफ़्क़ूद हैं, लिहाज़ा जब गाड़ी स्टेशन पर ठहर जाए उस वक़्त येह नमाज़ें पढ़े, वुज़ू वग़ैरा का एहतिमाम पहले से रखे और अगर देखे कि वक़्त जाता है तो जिस त़रह़ भी मुमकिन हो पढ़ ले, फिर जब मौक़अ़ मिले इआ़दा कर ले कि जहां

www.dawateislami.net

مِنْ جِهَةِ الْعِبَاد (बन्दों की त़रफ़ से) कोई रुक्न या शर्त़ मफ़्क़ूद हो, उस का येही हुक्म है, रेल गाड़ी को जहाज़ और किश्ती के हुक्म में तसव्वुर करना ग़लत़ी है, क्यूंकि किश्ती अगर ठहराई भी जाए जब भी ज़मीन पर न ठहरेगी, जब कि रेल गाड़ी ऐसी नहीं। और किश्ती पर भी उसी वक़्त नमाज़ जाइज़ है जब वोह बीच दरिया में हो, अगर किनारे पर हो और आदमी ख़ुश्की पर आ सकता हो तो उस (किश्ती) पर भी नमाज़ जाइज़ नहीं है। (हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 335)

नमाज़े जुमुआ़ का बयान

सुवाल : जुमुआ़ की नमाज़ फ़र्ज़े ऐ़न है या फ़र्ज़े किफ़ाया ?

जवाब : जुमुआ़ की नमाज़ फ़र्ज़े ऐ़न है, और इस की फ़र्ज़िय्यत ज़ोहर से ज़ियादा मुअक्कद है। या'नी ज़ोहर की नमाज़ से इस की ताकीद ज़ियादा है। ह़दीस शरीफ़ में है कि : जो तीन जुमुए़ सुस्ती की वज्ह से छोड़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के दिल पर मोहर कर देगा।

(سنن الترمذی، کتاب الجمعة، باب ما جاء فی ترك الجمعة...الخ،الحدیث ۵۰۰،ج۲،ص۳۸)

एक रिवायत में है कि वोह मुनाफ़िक़ है और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से उसे कोई तअ़ल्लुक़ नहीं।

(الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان، کتاب الایمان،باب ماجاء فی الشرك والنفاق، الحدیث۲۵۸، ج۱، ص۲۳۷)

चूंकि इस की फ़र्ज़िय्यत का सुबूत दलीले क़त़ई से है लिहाज़ा इस को फ़र्ज़ न मानने वाला काफ़िर है।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े मुसाफ़िर का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 336 व ب۲۸،الجمعة:۹)

सुवाल : जुमुआ़ अदा करने के लिये कितनी शर्तें हैं ?

जवाब : जुमुआ़ पढ़ने के लिये छे शर्तें हैं, कि इन में से एक शर्त़ भी मफ़्क़ूद हो (न पाई जाए) तो जुमुआ़ न होगा ﴿1﴾ शहर या शहर के क़ाइम मक़ाम बड़े गाऊं या क़स्बा या'नी वोह जगह जहां मुतअ़द्दद कूचे और बाज़ार हों और वोह ज़िल्अ़ या ज़िल्अ़ का ह़िस्सा हो और वहां कोई ऐसा ह़ाकिम मुक़र्रर हो जो कि ज़ालिम से मज़्लूम के लिये इन्साफ़ ले

www.dawateislami.net

सके । इसी त़रह़ शहर के आस पास की वोह जगह जो शहर की मस्लह़तों के लिये बनाई जाती है, जिसे फ़िनाए मिस्र कहते हैं । जैसे क़ब्रिस्तान, फ़ौज के रहने की जगह, कचहरियां, स्टेशन वग़ैरा, वहां जुमुआ़ जाइज़ है और छोटे गाऊं में जुमुआ़ जाइज़ नहीं, तो जो लोग शहर के क़रीब गाऊं में रहतें हैं उन्हें चाहिये कि शहर में आ कर जुमुआ़ पढ़ें । ﴾2﴿ सुल्त़ाने इस्लाम या उस का नाइब जिसे जुमुआ़ क़ाइम करने का हुक्म दिया, तो जहां इस्लामी सल्त़नत न हो वहां जो सब से बड़ा फ़क़ीह सुन्नी सह़ीहुल अ़क़ीदा हो, अह़कामे शरीअ़त जारी करने में सुल्त़ाने इस्लाम के क़ाइम मक़ाम होता है लिहाज़ा वोही जुमुआ़ क़ाइम करे । और येह भी न हो तो आ़म लोग जिस को इमाम बनाएं, वोही जुमुआ़ क़ाइम करे । हां ! आ़लिमे दीन के होते हुवे अ़वाम बत़ौरे ख़ुद किसी को इमाम नहीं बना सकते, न ही येह हो सकता है कि दो चार शख़्स किसी को इमाम मुक़र्रर कर लें । ऐसा जुमुआ़ कहीं से साबित नहीं । ﴾3﴿ वक़्ते ज़ोहर होना या'नी वक़्ते ज़ोहर में नमाज़ पूरी हो जाए तो अगर नमाज़ के दौरान अगर्चे तशह्हुद के बा'द सलाम फेरने से पहले अ़स्र का वक़्त आ गया तो जुमुआ़ बात़िल हो गया । लिहाज़ा अब ज़ोहर की क़ज़ा पढ़ें । ﴾4﴿ ख़ुत़बए जुमुआ़ का होना और इस में शर्त़ येह है कि वक़्त में हो और नमाज़ से पहले हो और ऐसी जमाअ़त के सामने हो जो जुमुआ़ के लिये शर्त़ है, और इतनी आवाज़ से हो कि पास वाले सुन सकें अगर कोई अम्र मानेअ़ न हो और ख़ुत़बा व नमाज़ में अगर ज़ियादा फ़ासिला हो जाए तो वोह ख़ुत़बा काफ़ी नहीं । ﴾5﴿ जमाअ़त, या'नी ख़त़ीब के इ़लावा कम से कम तीन मर्द हों । ﴾6﴿ आ़म इजाज़त होना, या'नी मस्जिद का दरवाज़ा खोल दिया जाए कि जिस मुसलमान का जी चाहे आए, किसी की रोक टोक न हो ।

(हमारा इस्लाम, नमाज़े जुमुआ़ का बयान, हिस्सा : 5, स. 336)

सुवाल : ख़ुत़बा किसे कहते हैं ?

जवाब : ख़ुत़बा ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ का नाम है अगर्चे सिर्फ़ एक बार

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰه या سُبْحٰنَ اللّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा फ़र्ज़ अदा हो गया मगर इतने ही पर इक्तिफ़ा करना मकरूह है। और छींक आई और इस पर اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा या तअ़ज्जुब के तौ़र पर سُبْحٰنَ اللّٰه या لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰه कहा तो फ़र्ज़ अदा न हुवा।

(बहारे शरीअ़त, जुमुआ़ का बयान, मस्अला. 21-22, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 767)

सुवाल : खुत़बा की सुन्नतें क्या हैं बयान करें ?

जवाब : खुत़बा में येह चीज़ें सुन्नत हैं : ﴾1﴿ ख़त़ीब का पाक होना ﴾2﴿ खड़ा होना ﴾3﴿ खुत़बा से पहले ख़त़ीब का बैठना ﴾4﴿ ख़त़ीब का मिम्बर पर होना और ﴾5﴿ सामेईन की त़रफ़ मुंह और ﴾6﴿ क़िब्ला को पीठ करना और बेहतर येह है कि मिम्बर मेह़राब की बाईं जानिब हो ﴾7﴿ ह़ाज़िरीन का मुतवज्जेह ब इमाम होना ﴾8﴿ खुत़बा से पहले اَعُوْذُ بِاللّٰه आहिस्ता पढ़ना ﴾9﴿ इतनी बुलन्द आवाज़ से खुत़बा पढ़ना कि लोग सुनें ﴾10﴿ اَلْحَمْدُ لِلّٰه से शुरूअ़ करना ﴾11﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की सना करना ﴾12﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की वह्दानिय्यत और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रिसालत की शहादत देना ﴾13﴿ हुज़ूर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर दुरूद भेजना ﴾14﴿ कम से कम एक आयत की तिलावत करना ﴾15﴿ पहले खुत़बा में वा'ज़ो नसीह़त होना ﴾16﴿ दूसरे में हम्दो सना व शहादत व दुरूद का इआ़दा करना ﴾17﴿ दूसरे में मुसलमानों के लिये दुआ़ करना और ﴾18﴿ दोनों खुत़बे हल्के होना ﴾19﴿ दोनों के दरमियान ब क़दरे तीन आयत पढ़ने के बैठना।

(बहारे शरीअ़त, जुमुआ़ का बयान, मस्अला. 25, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 767)

सजदए तिलावत का बयान

सुवाल : सजदए तिलावत किसे कहते हैं और इस का मस्नून त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : कुरआने करीम में चौदह मक़ामात ऐसे हैं जिन की तिलावत करने या किसी तिलावत करने वाले से सुनने से सजदा वाजिब हो जाता है, उसे सजदए तिलावत कहते हैं। और इस का मस्नून त़रीक़ा येह है कि

www.dawateislami.net

खड़ा हो कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा सजदे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा खड़ा हो जाए। अगर सजदे से पहले या बा'द में खड़ा न हुवा या اَللّٰہُ اَکْبَر न कहा या سُبْحَانَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی न पढ़ा तो इस सूरत में सजदा तो हो जाएगा मगर तक्बीर न छोड़ना चाहिये, क्यूंकि इस त़रह़ करना हमारे सलफ़ के त़रीक़े के ख़िलाफ़ है। और सजदए तिलावत के लिये اَللّٰہُ اَکْبَر कहते वक़्त हाथ उठाना नहीं है, और न ही इस में तशह्हुद है और न सलाम और इस की निय्यत इस त़रह़ करे कि मैं **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये **सजदए तिलावत** करता हूं।

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 327-328)

सुवाल : सजदए तिलावत कब और किस पर वाजिब होता है, और इस की शराइत़ क्या हैं ?

जवाब : ऐसा आ़क़िल व बालिग़ मुसलमान जो कि नमाज़ का अहल हो या'नी अदा या क़ज़ा का उसे हुक्म हो, तो आयते सजदा पढ़ने या सुनने से उस पर सजदए तिलावत वाजिब हो जाता है। बशर्ते कि येह पढ़ना या सुनना इतनी आवाज़ से हो कि अगर कोई उ़ज़्र न हो तो ख़ुद सुन सके और सुनने वाले पर बिला क़स्द सुनने से भी वाजिब हो जाता है। सजदए तिलावत के लिये तक्बीरे तह़रीमा के सिवा वोही तमाम शराइत़ हैं जो नमाज़ के लिये हैं। मसलन त़हारत, इस्तिक़्बाले क़िब्ला, निय्यत, सित्रे औ़रत और अगर नमाज़ में आयते सजदा पढ़ी तो इस का सजदा नमाज़ ही में फ़ौरन वाजिब है, येह सजदा नमाज़ के बाहर नहीं हो सकता और अगर जान बूझ के न किया तो गुनाहगार हुवा, तौबा लाज़िम है। हां ! अगर आयत पढ़ने के फ़ौरन बा'द नमाज़ का सजदा कर लिया या'नी आयते सजदा पढ़ने के बा'द तीन आयत से ज़ियादा न पढ़ा और रुकूअ़ कर के सजदा कर लिया तो अगर्चे सजदए तिलावत की निय्यत न हो, अदा हो जाएगा।

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 327-328)

www.dawateislami.net

सुवाल : वोह कौन से मक़ामात हैं जिन की तिलावत या समाअ़त से सजदए तिलावत वाजिब होता है ?

जवाब : हम ह़नफ़ियों के नज़दीक तमाम क़ुरआन शरीफ़ में सजदे की चौदह आयतें हैं। चार निस्फ़े अव्वल में, और दस निस्फ़े आख़िर में। और वोह जो सूरए ह़ज की आख़िर आयत जिस में सजदे का ज़िक्र है, उस के पढ़ने या सुनने से सजदा वाजिब नहीं, क्यूंकि उस में सजदे से नमाज़ का सजदा मुराद है। वोह चौदह मक़ामात येह हैं :

﴿१﴾(پ۹،الاعراف:۲۰۶) ﴿२﴾(پ۱۳،الرعد:۱۵) ﴿३﴾(پ۱٤،النحل:۵۰)

﴿٤﴾(پ۱۵، بنیٓ اسرآء یل:۱۰۹) ﴿۵﴾(پ۱٦، مریم: ۵۸) ﴿٦﴾(پ۱۷، الحج:۱۸)

﴿۷﴾(پ۱۹، الفرقان: ٦۰) ﴿۸﴾(پ۱۹، النمل:۲٦) ﴿۹﴾ (پ۲۱، السجدة:۱۵)

﴿۱۰﴾(پ۲۳،صٓ:۲۵)﴿۱۱﴾(پ۲٤،حٰمٓ السجدة:۳۸) ﴿۱۲﴾(پ۲۷،النجم:٦۲)

﴿۱۳﴾(پ۳۰،الانشقاق:۲۱) ﴿۱٤﴾(پ۳۰، العلق:۱۹)

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 327 व बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, मस्अला. 1, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 726)

सुवाल : सजदए तिलावत में ताख़ीर जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : अगर आयते सजदा नमाज़ के इलावा पढ़ी तो फ़ौरन सजदा कर लेना वाजिब नहीं, हां ! बेहतर है कि फ़ौरन कर ले और वुज़ू हो तो ताख़ीर करना मकरूहे तन्ज़ीही है लेकिन अगर किसी वज्ह से उस वक़्त सजदा न कर सके तो तिलावत करने वाले और सुनने वाले को येह कह लेना मुस्तह़ब है :

سَمِعْنَا وَاَطَعْنَاۗ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ۝۲۸۵ (پ۳،البقرة:۲۸۵)

(बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, मस्अला. 28-29, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 733)

सुवाल : सजदए तिलावत किन चीज़ों से फ़ासिद हो जाता है ?

जवाब : जो चीज़ें नमाज़ को फ़ासिद करती हैं उन से सजदा भी फ़ासिद हो जाएगा मसलन क़हक़हा लगाना, कलाम वग़ैरा करना।

(बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, मस्अला. 21, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 731)

www.dawateislami.net

सुवाल : आयते सजदा बार बार तिलावत की जाए तो कितने सजदे वाजिब होंगे ?

जवाब : एक मजलिस में सजदे की एक आयत को बार बार सुना या पढ़ा तो एक ही सजदा वाजिब होगा अगर्चे चन्द लोगों से सुना हो और अगर पढ़ने वाले या सुनने वाले की मजलिस बदल जाए तो जिस की मजलिस बदल जाए उस पर उतने ही सजदे वाजिब होंगे जितनी बार आयते सजदा पढ़ी जाए। और एक मजलिस में सजदे की चन्द आयतें पढ़ीं या सुनीं तो इतने ही सजदे करे, एक काफ़ी नहीं।

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, हिस्सा : 5, स. 329)

सुवाल : तिलावत में आयते सजदा को छोड़ देना कैसा है ?

जवाब : पूरी सूरत पढ़ना और सजदए तिलावत वाली आयत को छोड़ देना मकरूहे तहरीमी है। सिर्फ़ आयते सजदा पढ़ने में कराहत नहीं। उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि किसी मक़्सद के लिये एक मजलिस में सजदे की सब आयतें पढ़ कर सजदा करे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस का मक़्सद पूरा फ़रमाएगा। ख़्वाह एक एक आयत पढ़ कर सजदा करता जाए या सब को पढ़ कर आख़िर में चौदह सजदे कर ले।

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, हिस्सा : 5, स. 329)

सुवाल : अगर आयते सजदा हिज्जे कर के पढ़ी तो सजदा वाजिब होगा या नहीं ?

जवाब : आयत के हिज्जे करने या हिज्जे सुनने से सजदए तिलावत वाजिब नहीं होता। यूंही जंगल या पहाड़ वग़ैरा में आवाज़ गूंजी और बिल्कुल वैसी ही आवाज़ कान में आई जैसी कि आयत की थी तो सजदा वाजिब नहीं होगा।

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, हिस्सा : 5, स. 329)

www.dawateislami.net

सुवाल : तिलावत करने वाला आयते सजदा आहिस्ता पढ़े तो कैसा है ?

जवाब : अगर सुनने वालों के बारे में येह मा'लूम न हो कि सजदा करने पर आमादा हैं या नहीं, आहिस्ता पढ़ना जाइज़ है, बल्कि येही बेहतर है और अगर सजदा उन पर बार न हो तो आयते सजदा बुलन्द आवाज़ से पढ़ना बेहतर है।

(हमारा इस्लाम, सजदए तिलावत का बयान, हिस्सा : 5, स. 330)

सुवाल : सजदए शुक्र किसे कहते हैं, और इस का हुक्म क्या है ?

जवाब : सजदए शुक्र मसलन औलाद पैदा हुई या माल पाया या गुम शुदा चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया, ग़रज़ किसी ने'मत पर सजदा करना मुस्तहब है और इस का वोही त़रीक़ा है जो सजदए तिलावत का है।

(बहारे शरीअ़त, सजदए तिलावत का बयान, मस्अला. 63, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 738)

रोज़ी का एक सबब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ह़याते ज़ाहिरी के दौरे अक़्दस में दो भाई थे, जिन में एक कस्ब (काम काज) करते और दूसरे आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा बरकत में (इल्मे दीन सीखने के लिये) हाज़िर होते। (एक रोज़) कमाने वाले भाई ने सरकार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم से अपने भाई की शिकायत की (या'नी इस ने सारा बोझ मुझ पर डाल दिया है। इस को मेरे काम काज में हाथ बटाना चाहिये) तो मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : لَعَلَّكَ تُرْزَقُ بِهٖ

"क्या अ़जब कि तुझे इस की बरकत से रिज़्क़ मिले"

(سنن الترمذی، حدیث ۲۳٤٥، ص ۱۸۸۷ واشعة اللمعات، ج٤، ص٢٦٢)

www.dawateislami.net

मय्यित का बयान

सुवाल : मौत किसे कहते हैं और मौत के वक़्त क्या नज़र आता है ?

जवाब : हर शख़्स की जितनी उ़म्र मुक़र्रर है, इस से कुछ भी कम या ज़ियादा न होगी। जब वोह उ़म्र पूरी हो जाती है तो मलकुल मौत (मौत का फ़िरिश्ता) या'नी ह़ज़रते सय्यिदुना इ़ज़राईल عَلَیْہِ السَّلَام क़ब्ज़े रूह़ के लिये तशरीफ़ लाते हैं, और उस की रूह़ निकाल लेते हैं, इसी का नाम मौत है और जहां तक नज़र काम करती है मरने वाले को अपने दाएं बाएं फ़िरिश्ते ही फ़िरिश्ते दिखाई देते हैं। मुसलमान के आस पास रह़मत के फ़िरिश्ते नज़र आते हैं जब कि काफ़िर के दाएं बाएं अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते होते हैं। मुसलमान आदमी की रूह़ फ़िरिश्ते इ़ज़्ज़त के साथ ले जाते हैं और काफ़िर की रूह़ को ज़िल्लत और ह़क़ारत (नफ़रत) से ले जाते हैं।

(हमारा इस्लाम, मौत व क़ब्र का बयान, ह़िस्सा : 2, स. 63)

सुवाल : जां कनी की अ़लामात क्या हैं और उस वक़्त क्या करना चाहिये ?

जवाब : जां कनी की कुछ अ़लामात येह हैं : पाउं का सुस्त हो जाना कि खड़ा न हो सके, नाक का टेढ़ा हो जाना, दोनों कन पटियों का बैठ जाना मुंह की खाल का सख़्त हो जाना वग़ैरा।

फिर जब मौत का वक़्त क़रीब आ जाए और मज़्कूरा अ़लामात नज़र आना शुरूअ़ हो जाएं तो सुन्नत येह है कि मय्यित का मुंह क़िब्ला की त़रफ़ कर दें, और अगर क़िब्ला की त़रफ़ करना दुश्वार हो या'नी उस को तक्लीफ़ होती हो तो जिस ह़ालत पर है छोड़ दें, और जब तक रूह़ गले तक न आए उसे तल्क़ीन करें या'नी उस के पास बुलन्द आवाज़ से कलिमए त़य्यिबा या कलिमए शहादत पढ़ें, मगर उस मरने वाले को इस के कहने का हुक्म न करें। फिर जब उस ने कलिमा पढ़ लिया तो अब तल्क़ीन मौक़ूफ़ कर दें, हां ! अगर कलिमा पढ़ने के बा'द उस ने फिर कोई बात की तो फिर तल्क़ीन करें, ताकि उस का आख़िरी कलाम "لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ" صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم हो।

www.dawateislami.net

ख़ुश्बू उस के पास रखें मसलन लोबान या अगरबत्तियां सुलगा दें, सूरए यासीन शरीफ़ की तिलावत करें, मकान में कोई तस्वीर या कुत्ता वग़ैरा हो तो उस को फ़ौरन निकाल दें, क्यूंकि जहां येह चीज़ें होती हैं वहां रह़मत के फ़िरिश्ते नहीं आते, इस वक़्त उस के पास नेक और परहेज़गार लोग रहें तो बहुत बेहतर है, ताकि नज़्अ़ के वक़्त अपने और उस के लिये दुआए ख़ैर करते रहें, कोई बुरा कलिमा ज़बान से न निकालें, नज़्अ़ में सख़्ती देखें तो सूरए यासीन और सूरए रा'द की तिलावत करें।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 345)

सुवाल : जब दम निकल जाए तो क्या करना चाहिये ?

जवाब : जब रूह़ निकल जाए तो एक चौड़ी पट्टी जबड़े के नीचे से सर पर ले जा कर गिरह लगा दें ताकि मुंह खुला न रहे। निहायत नर्मी और शफ़्क़त से मय्यित की आंखें बन्द कर दें। उंगलियां और हाथ पाउं सीधे कर दें। आंखें बन्द करते वक़्त येह दुआ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ يَسِّرْ عَلَيْهِ اَمْرَهٗ وَسَهِّلْ عَلَيْهِ مَا بَعْدَهٗ وَاَسْعِدْهُ بِلِقَآئِكَ وَاجْعَلْ مَا خَرَجَ اِلَيْهِ خَيْرًا مِّمَّا خَرَجَ عَنْهُ

अल्लाह के नाम के साथ और रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मिल्लत पर, ऐ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ तू इस के काम को इस पर आसान कर और इस के मा बा'द को इस पर सहल कर और अपनी मुलाक़ात से तू इसे नेक बख़्त कर और इस की आख़िरत इस के लिये दुन्या से बेहतर कर।

फिर उस के पेट पर लोहा या गीली मिट्टी या कोई और भारी चीज़ रख दें, ताकि पेट फूल न जाए, मगर वोह ज़ियादा वज़्नी न हो कि बाइसे तक्लीफ़ है। मय्यित को चारपाई वग़ैरा किसी ऊंची चीज़ पर रखें कि ज़मीन की सील न पहुंचे। अगर उस के ज़िम्मे क़र्ज़ वग़ैरा हो तो जल्द अज़ जल्द अदा कर दें। पड़ोसियों और उस के दोस्त अह़बाब को इत्तिलाअ़ दें, ताकि नमाज़ियों की कसरत हो और ग़ुस्ल व कफ़न व दफ़न

www.dawateislami.net

में जल्दी करें, क्यूंकि ह़दीस शरीफ़ में इस की बहुत ताकीद आई है।

(बहारे शरीअ़त, मौत आने का बयान, मस्अला. 5 ता 8-10-12-13, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 808 ता 810 व हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 346)

सुवाल : मय्यित के पास तिलावते कुरआने मजीद वग़ैरा जाइज़ है या नहीं?

जवाब : मय्यित के पास तिलावते कुरआने मजीद उस वक़्त जाइज़ है जब कि उस का तमाम बदन कपड़े से छुपा हुवा हो, और तस्बीह़ और दूसरे अज़्कार में तो कोई ह़रज नहीं।

(बहारे शरीअ़त, मौत आने का बयान, मस्अला. 11, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 809)

सुवाल : मय्यित को ग़ुस्ल देने का त़रीक़ा क्या है?

जवाब : मय्यित को ग़ुस्ल देना या'नी नहलाना फ़र्ज़े किफ़ाया है कि अगर बा'ज़ लोगों ने ग़ुस्ल दे दिया तो सब से साक़ित़ हो गया और बा वुजूदे इ़ल्म किसी ने ग़ुस्ल न दिया तो सब पर गुनाह हुवा। इस का त़रीक़ा येह है कि जिस चार पाई या तख़्त या तख़्ते पर नहलाने का इरादा हो उस को तीन या पांच या सात बार ख़ुश्बूदार धूनी दें, या'नी जिस चीज़ में वोह ख़ुश्बू सुलगती हो उसे इतनी बार उस के गिर्द फिराएं और फिर उस पर मय्यित को लिटा दें, और नाफ़ से ले कर घुटनों समेत ह़िस्सए बदन किसी कपड़े से छुपा दें। मुस्तह़ब येह है कि जिस जगह ग़ुस्ल दें वहां पर्दा कर लें कि नहलाने वाले और उस के मददगार के सिवा कोई न देखे। अब नहलाने वाला, जो बा त़हारत हो अपने हाथ पर कपड़ा लपेट कर पहले मय्यित को इस्तिन्जा कराए फिर नमाज़ का सा वुज़ू कराए। मगर मय्यित के वुज़ू में पहुंचों तक हाथ धोना, कुल्ली करना और नाक में पानी डालना नहीं है, लिहाज़ा पहले मय्यित का मुंह और फिर कोहनियों समेत दोनों हाथ धोएं फिर मय्यित के सर का मस्ह़ करें फिर पाउं धोएं और किसी कपड़े या रूई की फुरैरी भिगो कर मय्यित के दांतों, मसूढ़ों, होंटों और नथनों पर फेर दें, फिर सर और दाढ़ी के

www.dawateislami.net

बाल हो तो गुल ख़ैरू (एक नीले रंग का फूल जो बत़ौरे दवा इस्ति'माल होता है) या बेसन या किसी और पाक चीज़ मसलन इस्लामी कारख़ाने के बने हुवे साबुन से धोएं, वरना ख़ाली पानी भी काफ़ी है। फिर मय्यित को बाईं करवट पर लिटा कर सर से पाउं तक बेरी के पत्तों का जोश दिया हुवा पानी इस त़रह़ बहाएं कि तख़्ते तक पहुंच जाए फिर दाहिनी करवट पर लिटा कर इसी त़रह़ करें और बेरी के पत्ते जोश दिया हुवा पानी न हो तो ख़ालिस पानी नीम गर्म काफ़ी है फिर मय्यित को टेक लगा कर बिठाएं और नर्मी के साथ पेट पर नीचे को हाथ फेरें अगर कुछ निकले तो धो डालें, वुज़ू व ग़ुस्ल का इआ़दा न करें, फिर आख़िर में सर से पाउं तक काफ़ूर का पानी बहाएं। फिर इस के बदन को किसी पाक कपड़े से आहिस्ता पौंछ लें। याद रहे कि एक मरतबा सारे बदन पर पानी बहाना फ़र्ज़ है और तीन बार सुन्नत।

(बहारे शरीअ़त, मय्यित के नहलाने का बयान, मस्अला. 1-2, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 810 व हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 347)

मदीना : मज़ीद मा'लूमात के लिये अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का तह़रीर कर्दा रिसाला **"मदनी वसिय्यत नामा"** मुलाह़ज़ा फ़रमाएं।

सुवाल : मय्यित को ग़ुस्ल देने वाला शख़्स कैसा होना चाहिये ?

जवाब : सब से बेहतर येह है कि ग़ुस्ल देने वाला मय्यित का इन्तिहाई क़रीबी रिश्तेदार हो। वोह न हो या नहलाना न जानता हो तो कोई और ऐसा शख़्स जो मुत्तक़ी और अमानत दार हो, पूरी त़रह़ ग़ुस्ल दे, और जो अच्छी बात देखे तो उसे लोगों के सामने बयान करे, और बुरी बात देखे तो उसे किसी से न कहे। हां ! अगर कोई बद मज़हब बद अ़क़ीदा मरा, और उस की कोई बुरी बात ज़ाहिर हुई तो उस को बयान कर देना चाहिये, ताकि लोगों को इ़ब्रत हो। मर्द को मर्द नहलाए, औ़रत को औ़रत। अगर मय्यित छोटे बच्चे की है तो उसे औ़रत भी नहला सकती

www.dawateislami.net

है, और इसी त़रह़ छोटी बच्ची को मर्द भी ग़ुस्ल दे सकता है। छोटे से येह मुराद कि ह़द्दे शहवत को न पहुंचे हों।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 348)

सुवाल : मय्यित के ग़ुस्ल के लिये इस्ति'माल होने वाले बरतन, टब या बाल्टी वग़ैरा का क्या ह़ुक्म है ?

जवाब : मय्यित के ग़ुस्ल के लिये नए बरतन वग़ैरा लेने की ज़रूरत नहीं बल्कि जो आ़म इस्ति'माल में हैं उन्हीं से ग़ुस्ल दिया जाए और ग़ुस्ल के बा'द इन को नापाक या नुहूसत समझना ह़माक़त है धो कर अपने इस्ति'माल में लाएं उन्हें फेंक देना इसराफ़ और ह़राम है। मय्यित के ईसाले सवाब की निय्यत से किसी ज़रूरत मन्द को भी दे सकते हैं।

(बहारे शरीअ़त, मय्यित के नहलाने का बयान, मस्अला. 32, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 816)

सुवाल : मय्यित को कफ़न देना कैसा है ?

जवाब : मय्यित को कफ़न देना फ़र्ज़े किफ़ाया है कि एक के देने से सब पर से गुनाह उठ जाएगा, वरना सब गुनाहगार होंगे। कफ़न अच्छा होना चाहिये, या'नी मर्द ईदैन और जुमुआ़ के लिये जैसे कपड़े पहनता था और औ़रत जैसे कपड़े पहन कर मैके जाती थी उस क़ीमत का होना चाहिये। चुनान्चे, ह़दीसे मुबारका में है कि मुर्दों को अच्छा कफ़न दो, क्यूंकि वोह बाहम मुलाक़ात करते हैं और अच्छे कफ़न पर तफ़ाख़ुर करते हैं, (या'नी ख़ुश होते हैं) (فردوس الاخبار،الحدیث:٣١٦، ج١،ص٦٦)

और बेहतर येह है कि कफ़न सफ़ेद हो। कुसुम या ज़ा'फ़रान का रंगा हुवा या रेशम का कफ़न मर्द को मम्नूअ़ है और औ़रत के लिये जाइज़ या'नी जो कपड़ा ज़िन्दगी में पहन सकता है उस का कफ़न भी दिया जा सकता है और जो ज़िन्दगी में नाजाइज़ उस का कफ़न भी नाजाइज़। (हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 349-350)

सुवाल : मर्द और औ़रत के लिये कफ़न में कितने कितने कपड़े सुन्नत हैं ?

www.dawateislami.net

जवाब : मर्द के लिये तीन कपड़े सुन्नत हैं : ﴾1﴿ लिफ़ाफ़ा या'नी चादर जो मय्यित के क़द से इस क़दर ज़ियादा हो कि दोनों त़रफ़ बांध सकें। ﴾2﴿ इज़ार या'नी तहबन्द, चोटी से क़दम तक या'नी लिफ़ाफ़ा से क़दरे छोटा हो। ﴾3﴿ क़मीस जिसे कफ़नी कहते हैं, गर्दन से घुटनों के नीचे तक और येह आगे और पीछे दोनों त़रफ़ बराबर हो इस में चाक और आस्तीनें न हों।

औ़रत के लिये कफ़न में पांच कपड़े सुन्नत हैं : तीन तो येही हैं। इस के इलावा ﴾4﴿ ओढ़नी इस की मिक़्दार तीन हाथ या'नी डेढ़ गज़ है। ﴾5﴿ सीना बन्द, सीने से नाफ़ तक, और बेहतर येह है कि रान तक हो। हां ! मर्द और औ़रत की कफ़नी में फ़र्क़ है। मर्द की कफ़नी कन्धे से चीरें और औ़रत की सीने की त़रफ़ से या'नी मर्द की कफ़नी का गरीबान कन्धे की त़रफ़ होगा और औ़रत की कफ़नी का सीने की त़रफ़।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 349)

सुवाल : अगर किसी को सुन्नत के मुत़ाबिक़ कफ़न मुयस्सर न हो तो उस के लिये कितना कफ़न काफ़ी है ?

जवाब : कफ़ने किफ़ायत, मर्द के लिये दो कपड़े हैं : लिफ़ाफ़ा और इज़ार और औ़रत के लिये तीन : लिफ़ाफ़ा, इज़ार, ओढ़नी या लिफ़ाफ़ा, क़मीस, ओढ़नी और येह भी न हो सके तो कफ़ने ज़रूरत दोनों के लिये येह कि जो मुयस्सर आए और कम अज़ कम इतना तो हो कि जिस से सारा बदन ढक जाए। (हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 349)

सुवाल : कफ़न पहनाने का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : कफ़न पहनाने का त़रीक़ा येह है कि मय्यित को ग़ुस्ल देने के बा'द किसी पाक कपड़े से आहिस्ता से पौंछ लें ताकि कफ़न गीला न हो, फिर कफ़न को एक या तीन या पांच या सात बार धूनी दे ले इस से ज़ियादा नहीं फिर कफ़न इस त़रह़ बिछाएं कि सब से पहले बड़ी चादर, फिर तहबन्द और फिर कफ़नी फिर मय्यित को इस के ऊपर लिटाएं,

www.dawateislami.net

और सब से पहले कफ़नी पहनाएं और दाढ़ी और तमाम बदन पर ख़ुश्बू मलें और मवाज़ए़ सुजूद या'नी माथे, नाक, हाथ, घुटने क़दम पर काफ़ूर लगाएं, फिर इज़ार या'नी तहबन्द लपेटें पहले बाईं जानिब से फिर दाहिनी जानिब से फिर लिफ़ाफ़ा लपेटें पहले बाईं फिर दाईं त़रफ़ से ताकि दाहिना ऊपर रहे और फिर सर और पाउं की त़रफ़ से बांध दें, ताकि उड़ने का अन्देशा न रहे और औ़रत को कफ़नी पहना कर उस के बालों के दो ह़िस्से कर के कफ़नी के ऊपर सीने पर डाल दें फिर ओढ़नी निस्फ़ पुश्त के नीचे से बिछा कर सर पर ला कर मुंह पर मिस्ले निक़ाब इस त़रह़ डाल दें कि सीने पर भी रहे और इस की लम्बाई निस्फ़ पुश्त से सीने तक है और चौड़ाई एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक फिर ब दस्तूर इज़ार और लिफ़ाफ़ा लपेटें फिर सब के ऊपर सीना बन्द, सीने के ऊपर से रान तक ला कर बांधें।

(बहारे शरीअ़त, कफ़न का बयान, मस्अला. 18, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 820)

सुवाल : जनाज़े को क़ब्रिस्तान ले जाने का मस्नून त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : सुन्नत येह है कि चार (शख़्स) जनाज़ा उठाएं और हर एक यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे, और हर बार दस दस क़दम चले और पूरी सुन्नत येह है कि पहले मय्यित के दाएं कन्धे की त़रफ़ से कन्धा दे और दस क़दम चले, फिर दाहिनी पाइंती पर बाएं कन्धे की त़रफ़ और फिर बाईं पाइंती हर मरतबा दस क़दम चले तो येह कुल चालीस क़दम हुवे। ह़दीस में हुज़ूर आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे कौनो मकान صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है की जो चालीस क़दम जनाज़ा ले कर चले उस के चालीस कबीरा गुनाह मिटा दिये जाते हैं।

(جمع الجوامع للسیوطی،حرف المیم،الحدیث:۲۰۵۸۳،ج۷،ص۱۹)

www.dawateislami.net

चलने में चारपाई का सिरहाना आगे रखें। चलने की रफ़्तार मो'तदिल रखें, इस त़रह़ कि मय्यित को झटका न लगे। और अगर छोटा शीर ख़्वार बच्चा हो या इस से कुछ बड़ा तो उस को अगर एक शख़्स हाथों पर उठा कर चले तो ह़रज नहीं। और यके बा'द दीगरे लोग हाथों हाथ लेते रहें, वरना छोटे खटोले या चारपाई पर ले जाएं। जनाज़े के साथ जाने वालों के लिये अफ़्ज़ल येह है कि जनाज़े के पीछे चलें, दाएं बाएं न चलें और अगर कोई आगे चले तो इतनी दूर रहे कि साथ वालों में शुमार न हो, नीज़ साथ चलने वालों को सुकूत की ह़ालत में होना चाहिये, मौत और क़ब्र को पेशे नज़र रखें, न दुन्या की बातें करें और न ही हंसें बल्कि जिक्रुल्लाह عَزَّوَجَلَّ करते रहें। (हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 350)

सुवाल : जो शख़्स जनाज़े के साथ है दफ़्न से पहले वापस आ सकता है या नहीं ?

जवाब : जो शख़्स जनाज़े के साथ हो उसे बिग़ैर नमाज़ पढ़े वापस न होना चाहिये, फिर नमाज़ के बा'द औलियाए मय्यित से इजाज़त ले कर वापस हो सकता है और दफ़्न के बा'द औलिया से इजाज़त की भी ज़रूरत नहीं।

(बहारे शरीअ़त, जनाज़ा ले चलने का बयान, मस्अला. 15, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 825)

सुवाल : नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ है या वाजिब, और इस का त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है, कि एक ने भी पढ़ ली तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए वरना जिस जिस को ख़बर पहुंची और न पढ़ी, गुनाहगार हुवा। इस की फ़र्ज़िय्यत का जो इन्कार करे वोह काफ़िर है और जमाअ़त इस के लिये शर्त नहीं एक शख़्स भी पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो गया और इस का त़रीक़ा येह है कि मय्यित के सीने के सामने मय्यित से क़रीब इमाम खड़ा हो और बेहतर येह है कि मुक़्तदी नमाज़े जनाज़ा में तीन सफ़ें कर लें और कुल सात ही शख़्स हों तो एक इमाम हो और तीन पहली सफ़ में और दो दूसरी में और एक तीसरी में, अब इमाम

www.dawateislami.net

और मुक़्तदी इस त़रह़ निय्यत करें कि निय्यत की मैं ने नमाज़े जनाज़ा मअ़ चार तक्बीरों के, वासिते **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, दुआ वासिते इस मय्यित के, मुंह मेरा का'बा शरीफ़ की त़रफ़।

इमाम इमामत की और मुक़्तदी इक़्तिदा की निय्यत करे, फिर कानों तक हाथ उठा कर اَللّٰہُ اَکْبَر कहता हुवा हाथ नीचे लाए और नाफ़ के नीचे ह़स्बे दस्तूर बांध ले और सना पढ़े, इस में وَتَعَالٰی جَدُّكَ के बा'द وَجَلَّ ثَنَاءُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ पढ़ें फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहे मगर हाथ न उठाए और दुरूद शरीफ़ पढ़े, बेहतर वोह दुरूद है जो नमाज़ में पढ़ा जाता है। फिर اَللّٰہُ اَکْبَر कहे और हाथ न उठाए, और अपने और मय्यित और तमाम मुसलमान मर्दों और औ़रतों के लिये दुआ करे, येह तीन तक्बीरें हुईं, चौथी तक्बीर के बा'द बिग़ैर कोई दुआ पढ़े हाथ खोल कर सलाम फेर दे, तक्बीर और सलाम को इमाम जहर (ऊंची आवाज़) के साथ कहे और मुक़्तदी आहिस्ता, बाक़ी तमाम दुआएं आहिस्ता पढ़ी जाएंगी। फिर सफ़ें तोड़ कर मय्यित के लिये मग़फ़िरत की दुआ मांगनी चाहिये।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 351 व बहारे शरीअ़त, जनाज़ा ले चलने का बयान, मस्अला. 5, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 835)

सुवाल : नमाज़े जनाज़ा के अरकान, वाजिबात, सुन्नतें और मुफ़्सिदात क्या हैं ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न हैं : ﴿1﴾ चार बार اَللّٰہُ اَکْبَر कहना ﴿2﴾ क़ियाम करना। और तीन चीज़ें सुन्नते मुअक्कदा हैं : ﴿1﴾ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ह़म्दो सना करना ﴿2﴾ प्यारे आक़ा, मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूद शरीफ़ पढ़ना ﴿3﴾ मय्यित के लिये दुआ। बा'ज़ उ़लमा इसे वाजिब भी कहते हैं और जिन चीज़ों से तमाम नमाज़ें फ़ासिद होती हैं, नमाज़े जनाज़ा भी इन से फ़ासिद हो जाती है।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 352)

www.dawateislami.net

सुवाल : नमाज़े जनाज़ा की शराइत़ क्या हैं ?

जवाब : नमाज़े जनाज़ा में दो त़रह़ की शर्तें हैं, एक नमाज़ पढ़ने वाले से मुतअ़ल्लिक़ और दूसरी मय्यित से मुतअ़ल्लिक़। नमाज़ पढ़ने वाले के लिहाज़ से तो वोही शर्तें हैं जो मुत़्लक़ नमाज़ की हैं। और मय्यित से तअ़ल्लुक़ रखने वाली चन्द शर्तें हैं जो येह हैं :

﴾1﴿ मय्यित का मुसलमान होना ﴾2﴿ मय्यित के बदन और कफ़न का पाक होना ﴾3﴿ जनाज़े का वहां मौजूद होना, लिहाज़ा ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती और वोह जो नजाशी की नमाज़ हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पढ़ाई वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़साइस में से है, दूसरों को जाइज़ नहीं ﴾4﴿ जनाज़ा ज़मीन पर रखा होना या हाथ पर हो मगर क़रीब हो ﴾5﴿ जनाज़ा, नमाज़ पढ़ने वाले के आगे क़िब्ला रू होना ﴾6﴿ मय्यित का वोह हिस्सए बदन जिस का छुपाना फ़र्ज़ है छुपा हुवा होना ﴾7﴿ मय्यित का इमाम के महाज़ी (सामने) होना।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, हिस्सा : 5, स. 352)

सुवाल : वोह कौन लोग हैं जिन की नमाज़े जनाज़ा नहीं ?

जवाब : ﴾1﴿ बाग़ी, जो बग़ावत में मारा जाए ﴾2﴿ ऐसा डाकू जो कि डाका डालते हुवे मारा गया ﴾3﴿ जो ना हक़ पासदारी से लड़ें और वहीं मर जाएं ﴾4﴿ जिस ने कई शख़्स गला घोंट कर मार डाले ﴾5﴿ जो शहर में रात को हथियार ले कर लूट मार करे और इसी ह़ालत में मारा जाए ﴾6﴿ जिस ने अपनी मां या बाप को मार डाला ﴾7﴿ जो किसी का माल छीन रहा था और इसी ह़ालत में मारा गया। इन के इलावा हर मुसलमान की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी, अगर्चे वोह कैसा ही गुनाहगार और मुर्तकिबे कबाइर हो, यहां तक कि जिस ने ख़ुद कुशी की ह़ालांकि येह बहुत बड़ा गुनाह है मगर उस की भी नमाज़ पढ़ी जाएगी, यूंही बे नमाज़ी की भी जनाज़े की नमाज़ पढ़ना हम पर फ़र्ज़ है।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, हिस्सा : 5, स. 352)

www.dawateislami.net

सुवाल : जनाज़े में कौन सी दुआ पढ़ी जाती है ?

जवाब : मय्यित बालिग़ हो तो येह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِيْرِنَا وَكَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا ؕ اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهٗ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَى الْاِيْمَانِ ؕ

तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को, इलाही عَزَّوَجَلَّ तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे ।

ना बालिग़ लड़के की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَآ اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ؕ

तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए ।

ना बालिग़ लड़की की दुआ :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَآ اَجْرًا وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ؕ

तर्जमा : इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे, और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब) और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारे लिये सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए ।

जो शख़्स अच्छी त़रह़ येह दुआएं न पढ़ सके तो जो दुआ चाहे पढ़े मगर वोह दुआ ऐसी हो जिस में उमूरे आख़िरत का ज़िक्र हो । जैसे :

www.dawateislami.net

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً وَّ فِی الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّ قِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۲۰۱﴾ (پ۲، البقرة:۲۰۱)

तर्जमए कन्जुल ईमान : *ऐ रब हमारे ! हमें दुन्या में भलाई दे और हमें आख़िरत में भलाई दे और हमें अ़ज़ाबे दोज़ख़ से बचा।*

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 353)

सुवाल : अगर कई जनाज़े हों तो सब की नमाज़ एक साथ पढ़ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : कई जनाज़े जम्अ़ हों तो एक साथ सब की नमाज़ पढ़ सकते हैं। वोह इस त़रह़ कि एक नमाज़ में सब की निय्यत कर ले और अफ़्ज़ल येह है कि सब की अ़लाह़िदा अ़लाह़िदा पढ़े, और इस सूरत में पहले उस की पढ़े जो इन में अफ़्ज़ल हो फिर उस की जो इस के बा'द सब में अफ़्ज़ल हो। وَ عَلٰی هٰذَا الْقِیاس और जब एक साथ पढ़ें तो इख़्तियार है कि सब को आगे पीछे रखें या'नी सब का सीना इमाम के मुक़ाबिल हो या बराबर बराबर रखें या'नी एक की पाइंती दूसरे के सिरहाने।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़े जनाज़ा का बयान, मस्अला. 27-28, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 839)

सुवाल : मय्यित की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ सकते हैं या नहीं ?

जवाब : मय्यित अगर बिग़ैर नमाज़ पढ़े दफ़्न कर दी गई और मिट्टी भी दे दी गई, तो अब उसी सूरत में क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी जा सकती है जब तक लाश के फटने का गुमान न हो और अगर मिट्टी न दी गई हो तो मय्यित को क़ब्र से निकाल लें और नमाज़ पढ़ कर दफ़्न करें और क़ब्र पर नमाज़ पढ़ने में दिनों की कोई ता'दाद मुक़र्रर नहीं बल्कि येह मौसिम और ज़मीन और मय्यित के जिस्म और मरज़ के ह़ालात पर मौक़ूफ़ है मसलन गर्मियों में जिस्म जल्द फटेगा और सर्दियों में देर से, इसी त़रह़ फ़र्बा जिस्म जल्द और लाग़र देर में, तर ज़मीन में जल्द और ख़ुश्क में देर से।

(बहारे शरीअ़त, नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाए, मस्अला. 31, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 840)

www.dawateislami.net

सुवाल : मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना कैसा है ?

जवाब : मस्जिद में नमाज़े जनाज़ा पढ़ना मुत्लक़न मकरूहे तह़रीमी है ख़्वाह मय्यित मस्जिद के अन्दर हो या बाहर सब नमाज़ी अन्दर हों या बा'ज़ । क्यूंकि ह़दीसे पाक में नमाज़े जनाज़ा मस्जिद में पढ़ने की मुमानअ़त आई है ।

(سنن ابی داود، کتاب الجنائز،باب الصلاۃ علی الجنازۃ فی المسجد، الحدیث:۳۱۹۱، ج۳،ص۲۷۸

व बहारे शरीअ़त, नमाज़े जनाज़ा कौन पढ़ाए, मस्अला. 33, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 840)

सुवाल : मय्यित को क़ब्र में किस त़रह़ रखा जाए ?

जवाब : मय्यित को क़िब्ला की जानिब से क़ब्र में उतारें । और दहनी त़रफ़ की करवट पर लिटाएं और उस का मुंह क़िब्ला को करें । औ़रत का जनाज़ा उतारने वाले उस के मह़ारिम हों, येह न हों तो दूसरे रिश्ते वाले येह भी न हों तो परहेज़गार अजनबी उतारे । अगर औ़रत का जनाज़ा हो तो क़ब्र में उतारने से तख़्ता लगाने तक क़ब्र को कपड़े वग़ैरा से छुपाए रखें, मय्यित को क़ब्र में रखते वक़्त येह दुआ़ पढ़ें :

بِسْمِ اللّٰهِ وَ بِاللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ

तर्जमा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *के नाम के साथ और* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *की मदद के साथ और रसूलुल्लाह* صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم *की मिल्लत पर ।*

फिर क़ब्र में रखने के बा'द कफ़न की बन्दिश खोल दें और लह़द को कच्ची ईंटों से बन्द करें । अगर ज़मीन नर्म हो तो तख़्ते लगाना भी जाइज़ है । तख़्तों के दरमियान झरी रह गई हो तो उसे मिट्टी के ढेले वग़ैरा से बन्द कर दें और सन्दूक़ हो तो इस का भी येही हुक्म है ।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 355)

सुवाल : क़ब्र को मिट्टी देने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : मुस्तह़ब येह है कि सिरहाने की त़रफ़ से दोनों हाथों से तीन बार मिट्टी डालें पहली बार येह कहें :

www.dawateislami.net

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ (इसी से हम ने तुम को पैदा किया) दूसरी बार कहें : وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ (और इसी में तुम को लोटाएंगे) और तीसरी बार कहें : وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى (और इसी से तुम को दोबारा निकालेंगे)।

बाक़ी मिट्टी हाथ या बेलचे वग़ैरा से क़ब्र पर डालें। जितनी मिट्टी क़ब्र से निकली इस से ज़ियादा डालना मकरूह है। हाथ में जो मिट्टी लगी है उसे झाड़ दे या धो डालें। और क़ब्र चौखूंटी (चौकूर) न बनाएं बल्कि इस में ढलान रखें जैसे ऊंट का कोहान लेकिन ऊंचाई में एक बालिश्त या कुछ ज़ियादा हो और इस पर पानी छिड़कने में भी कुछ ह़रज नहीं बल्कि बेहतर है। (हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, हिस्सा : 5, स. 355)

सुवाल : क़ब्र पर कितनी देर तक ठहरना चाहिये ?

जवाब : दफ़्न के बा'द क़ब्र के पास इतनी देर तक ठहरना मुस्तह़ब है जितनी देर में ऊंट को ज़ब्ह़ कर के गोश्त तक़्सीम कर दिया जाए कि उन के रहने से मय्यित का दिल लगा रहेगा और नकीरैन का जवाब देने में वह़शत न होगी। इतनी देर तक तिलावते क़ुरआने मजीद और मय्यित के लिये इस्तिग़फ़ार करें। और येह दुआ़ करें कि मुन्कर नकीर के सुवालात के जवाब देने में साबित क़दम रहे और मुस्तह़ब येह है कि दफ़्न के बा'द क़ब्र पर सूरए बक़रह का अव्वल व आख़िर पढ़ें, सिरहाने الٓمّٓ से هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ तक और पाइंती की तरफ़ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ से आख़िर तक।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, हिस्सा : 5, स. 356)

सुवाल : क़ब्र पर क़ुरआन पढ़ने के लिये ह़ाफ़िज़ को मुक़र्रर करना कैसा है ?

जवाब : क़ब्र पर क़ुरआन पढ़ने और इस का सवाब मय्यित को बख़्शने के लिये ह़ाफ़िज़ मुक़र्रर करना जाइज़ है जब कि पढ़ने वाले बिला उजरत पढ़ें क्यूंकि उजरत पर क़ुरआने करीम पढ़ना और पढ़वाना

www.dawateislami.net

जाइज़ नहीं। हां ! अगर बिला उजरत पढ़ने वाला मिलता ही न हो और उजरत पर पढ़वाना हो तो उसे पहले अपने काम काज के लिये नौकर रखे फिर येह काम ले (या'नी इतने वक़्त के लिये उजरत पर ठहराए और अब इस वक़्त में क़ुरआन वग़ैरा पढ़वाए)

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, हिस्सा : 5, स. 356 व बहारे शरीअ़त, क़ब्र व दफ़्न का बयान, मस्अला. 33, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 848)

सुवाल : शजरह या अ़हद नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है नहीं ?

जवाब : शजरह या अ़हद नामा क़ब्र में रखना जाइज़ है और बेहतर येह है कि मय्यित के मुंह के सामने क़िब्ला की जानिब ताक़ खोद कर उस में रखें बल्कि दुर्रे मुख़्तार में कफ़न पर अ़हद नामा लिखने को जाइज़ कहा है और फ़रमाया कि इस से मग़फ़िरत की उम्मीद है और मय्यित के सीने और पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ लिखना जाइज़ है। एक शख़्स ने इस की वसिय्यत की थी, इन्तिक़ाल के बा'द सीने और पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ लिख दी गई फिर किसी ने उन्हें ख़्वाब में देखा, हाल पूछा। कहा : जब मैं क़ब्र में रखा गया, अ़ज़ाब के फ़िरिश्ते आए, फ़िरिश्तों ने जब पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ देखी। कहा : तू अ़ज़ाब से बच गया। यूं भी हो सकता है कि पेशानी पर بِسۡمِ اللّٰہِ शरीफ़ लिखें और सीने पर कलिमए त़य्यिबा لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मगर नहलाने के बा'द कफ़न पहनाने से पेशतर कलिमे की उंगली से लिखें रोशनाई से न लिखें।

(बहारे शरीअ़त, क़ब्र व दफ़्न का बयान, मस्अला. 34, हिस्सा : 4, जि. 1, स. 848)

सुवाल : जनाज़े या क़ब्र पर फूल डालने का क्या हुक्म है ?

जवाब : जनाज़े पर फूलों की चादर डालने में ह़रज नहीं, यूंही क़ब्र पर फूल डालना बेहतर है कि जब तक तर रहेंगे, तस्बीह़ करेंगे और मय्यित का दिल बहलेगा। इसी लिये क़ब्र पर से तर घास नहीं नोचना चाहिये कि

www.dawateislami.net

उस की तस्बीह़ से रह़मत उतरती है, और मय्यित को उन्स होता है, जब कि नोचने में मय्यित का ह़क़ ज़ाएअ़ करना है।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 357 व बहारे शरीअ़त, दफ़्न के बा'द तल्क़ीन, मस्अला. 43, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 851)

सुवाल : क़ब्र पर अज़ान देने से मय्यित को क्या फ़ाइदा पहुंचता है ?

जवाब : अह़ादीसे करीमा में आया है कि जब बन्दा क़ब्र में रखा जाता है और मुर्दे से सुवाल होता है कि तेरा रब कौन है ? तो शैत़ान उस पर ज़ाहिर होता है और अपनी त़रफ़ इशारा करता है कि मैं तेरा रब हूं। इस लिये हुक्म आया कि मय्यित के लिये जवाब में साबित क़दम रहने के लिये दुआ करें। ख़ुद हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم मय्यित को दफ़्न करते वक़्त दुआ फ़रमाते : "इलाही عَزَّوَجَلَّ ! इसे शैत़ान से बचा।" और सह़ीह़ ह़दीसों से साबित है कि जब मुअज़्ज़िन अज़ान कहता है तो शैत़ान पीठ फेर कर भाग जाता है। लिहाज़ा क़ब्र पर अज़ान देने का पहला फ़ाइदा तो ज़ाहिर है कि بفضله تعالى मय्यित को शैत़ाने रजीम के शर से पनाह मिल जाती है। और फिर इसी अज़ान की बरकत से मय्यित को सुवालाते नकीरैन के जवाबात भी याद आ जाते हैं, येह दूसरा फ़ाइदा हुवा, फिर अज़ान ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ है और जहां ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ होता है वहां रह़मत नाज़िल होती है, आस्मान के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं, अ़ज़ाबे इलाही عَزَّوَجَلَّ उठा लिया जाता है, और येह तो ज़ाहिर है कि ज़िक्रे इलाही عَزَّوَجَلَّ वह़शत को दूर करता है और दिल को इत़मीनान बख़्शता है, तो क़ब्र पर अज़ान से मय्यित से अ़ज़ाब उठ जाने और उस की वह़शत दूर हो जाने की क़वी उम्मीद है, इस लिये अज़ान ज़िन्दों की त़रफ़ से मय्यित के लिये एक अ़जीब नफ़्अ़ बख़्श तोह़फ़ा है। (हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 357)

सुवाल : क़ब्रिस्तान में कौन कौन सी चीज़ें मम्नूअ़ व ना जाइज़ हैं ?

जवाब : क़ब्र पर सोना, चलना, पाख़ाना पेशाब करना ह़राम है।

www.dawateislami.net

क़ब्रिस्तान में जो नया रास्ता निकाला गया है इस से गुज़रना नाजाइज़ है और अपने किसी रिश्तेदार की क़ब्र तक पहुंचने के लिये दूसरों की क़ब्रों पर से गुज़रना मन्अ़ है। बेहतर येह है कि दूर ही से फ़ातिहा पढ़ दे। क़ब्रिस्तान में जूतियां पहन कर भी न जाए। इसी त़रह़ वोह तमाम बातें मम्नूअ़ हैं जो बाइ़से ग़फ़्लत हों जैसे खाना पीना, हंसना, दुन्या का कोई कलाम करना वग़ैरा। (हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 358 व बहारे शरीअ़त, क़ब्र व दफ़्न का बयान, मस्अला. 31-32, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 847)

सुवाल : ता'ज़िय्यत किसे कहते हैं, इस का त़रीक़ा और हुक्म क्या है?

जवाब : किसी मुसलमान की मौत पर अपने उस मुसलमान भाई को जो मय्यित के क़रीबी रिश्तेदारों में से है, सब्र की तल्क़ीन करना ता'ज़िय्यत कहलाता है। ता'ज़िय्यत मस्नून और कारे सवाब है। इस का वक़्त मौत से तीन दिन तक है और अगर कोई उ़ज़्र हो तो बा'द में भी ह़रज नहीं। ता'ज़िय्यत में येह कहना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मय्यित की मग़्फ़िरत फ़रमाए और उस को अपनी रह़मत में ढांके और तुम को सब्र अ़त़ा फ़रमाए, और इस मुसीबत पर सवाब अ़त़ा फ़रमाए।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 358)

सुवाल : नौह़ा करना जाइज़ है या नहीं?

जवाब : नौह़ा या'नी मय्यित के औसाफ़ मुबालग़े के साथ बयान कर के ऊंची आवाज़ से रोना, इसे "बैन" कहते हैं, और येह ह़राम है। यूंही गरीबान फाड़ना, मुंह नोचना, बाल खोलना, सर पर ख़ाक डालना, सीना कूटना, रान पर हाथ मारना वग़ैरा, येह सब जाहिलिय्यत के काम हैं और ह़राम हैं। इसी त़रह़ सोग मनाने के लिये सियाह कपड़े पहनना मर्दों को नाजाइज़ है, यूंही सियाह बिल्ले (badge बैज वग़ैरा) लगाना भी मन्अ़ है, कि इस में नसारा (ईसाइयों) की मुशाबहत भी है। हां! सिर्फ़ रोने में अगर आवाज़ बुलन्द न हो तो इस की मुमानअ़त नहीं।

(हमारा इस्लाम, मय्यित का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 358 व बहारे शरीअ़त, सोग और नौह़ा करना, मस्अला. 17-18-20, ह़िस्सा : 4, जि. 1, स. 854)

www.dawateislami.net

ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान

सुवाल : ज़ियारते क़ुबूर का हुक्म क्या है ?

जवाब : ज़ियारते क़ुबूर जाइज़ व मुस्तह़ब बल्कि मस्नून है ख़ुद आक़ाए दो जहान, रह़मते आ़लमिय्यान, मक्की मदनी सुल्त़ान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم शुहदाए उ़ह़ुद की ज़ियारत को तशरीफ़ ले जाते और उन के लिये दुआ़ फ़रमाते।

(الد رالمنثور للسیوطی ، سورۃ الرعد ، تحت الآیۃ :٢٤ ،ج٤، ص٦٤٠)

और येह भी इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग क़ब्रों की ज़ियारत करो, वोह दुन्या में बे रग़बती का सबब हैं और आख़िरत की याद दिलाती हैं।

(سنن ابن ماجہ، کتاب الجنائز،باب ماجاء فی زیارۃ القبور، الحدیث:١٥٧١،ج٢،ص٢٥٢

व हमारा इस्लाम, ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 359)

सुवाल : ज़ियारते क़ुबूर का मुस्तह़ब त़रीक़ा क्या है ?

जवाब : जब भी ज़ियारते क़ुबूर का इरादा हो तो मुस्तह़ब येह है कि पहले अपने मकान में दो रक्अ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़े, हर रक्अ़त में फ़ातिह़ा के बा'द आयतुल कुर्सी एक बार और قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ तीन बार पढ़े और इस नमाज़ का सवाब मय्यित को पहुंचाए, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मय्यित की क़ब्र में नूर पैदा फ़रमाएगा और उस शख़्स को बहुत बड़ा सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा। अब क़ब्रिस्तान को जाए, रास्ते में फ़ुज़ूल बातों में मश्ग़ूल न हो। जब क़ब्रिस्तान पहुंचे जूते उतार ले और पाइंती की त़रफ़ से जा कर इस त़रह़ खड़ा हो कि क़िब्ला को पीठ हो और मय्यित के चेहरे की त़रफ़ मुंह हो। मय्यित के सिरहाने से न आए कि मय्यित के लिये बाइ़से तक्लीफ़ है या'नी मय्यित को गर्दन फेर कर देखना पड़ता है कि कौन

www.dawateislami.net

आया है और इस के बा'द येह कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ وَاَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ

तर्जमा : सलाम हो तुम पर ऐ अहले क़ब्रिस्तान ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ *हमारी और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाए, तुम हम से पहले गए और हम तुम्हारे बा'द आने वाले हैं।*

या यूं कहे :

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ اَهْلَ دَارِ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ اَنْتُمْ لَنَا سَلَفٌ وَّاِنَّا اِنْ شَآءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ

तर्जमा : सलाम हो तुम पर ऐ मुसलमानों की क़ौम के घर वालो ! तुम हम से पहले गए और हम तुम्हारे बा'द तुम से मिलने वाले हैं। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

और सूरए फ़ातिहा व आयतुल कुर्सी और सूरए ज़िलज़ाल व तकासुर पढ़े। सूरए मुल्क और दूसरी सूरतें भी पढ़ सकता है और इस का सवाब मुर्दों को पहुंचाए। अगर बैठना चाहे तो इतने फ़ासिले से बैठे जितना ज़िन्दगी में दूर या नज़दीक बैठता था।

(हमारा इस्लाम, ज़ियारते कुबूर और ईसाले सवाब का बयान, हिस्सा : 5, स. 359)

सुवाल : ज़ियारत के लिये कौन सा दिन और वक़्त बेहतर है ?

जवाब : चार दिन ज़ियारत के लिये बेहतर हैं : पीर, जुमा'रात, जुमुआ़ और हफ़्ता और अगर जुमुआ़ के दिन जाना हो तो नमाज़े जुमुआ़ से पहले जाना अफ़्ज़ल है और हफ़्ते के दिन तुलूए़ आफ़्ताब तक और जुमा'रात को दिन के अव्वल वक़्त और बा'ज़ उ़लमा ने फ़रमाया कि आख़िर वक़्त में अफ़्ज़ल है। इसी त़रह़ मुतबर्रिक रातों में भी ज़ियारते कुबूर अफ़्ज़ल है मसलन शबे बराअत, शबे क़द्र वग़ैरा। यूंही ईदैन के दिन और अ़शरए ज़िल ह़िज्जा में भी बेहतर है। और औलियाए किराम رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ के मज़ारात पर सफ़र कर के जाना जाइज़ है, वोह अपने ज़ाइर को नफ़्अ़ पहुंचाते हैं और ज़ियारत करने वाले को बड़ी बरकात

www.dawateislami.net

ह़ासिल होती हैं। हां ! औ़रतों को मज़ारात पर नहीं जाना चाहिये, मर्दों को चाहिये कि इन्हें मन्अ़ करें।

(हमारा इस्लाम, ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 360)

सुवाल : तीजा, दसवां, चालीसवां, शशमाही, बरसी वग़ैरा करना जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : हम अहले सुन्नत के नज़दीक ज़िन्दों के हर अ़मले नेक और हर क़िस्म की इबादत ख़्वाह माली हो या बदनी, फ़र्ज़ व नफ़्ल और ख़ैर ख़ैरात का सवाब मुर्दों को पहुंचाया जा सकता है और इस में कुछ शक नहीं कि ज़िन्दों के ईसाले सवाब से मुर्दों को फ़ाइदा पहुंचता है। अब रहा दिन मुक़र्रर करना मसलन तीसरे दिन या दसवें या चालीसवें दिन, तो येह तख़्सीसात न शरई हैं न इन्हें शरई समझा जाता है या'नी येह कोई भी नहीं कहता कि सिर्फ़ इसी दिन में सवाब पहुंचेगा, अगर किसी दूसरे दिन किया जाए तो नहीं पहुंचेगा। येह मह़ज़ रवाजी और उ़र्फ़ी बात है जो लोगों ने अपनी सहूलत के लिये बना रखी है। लिहाज़ा इन्तिक़ाल के बा'द ही से क़ुरआने मजीद की तिलावत और ख़ैर ख़ैरात का सिलसिला जारी किया जा सकता है बल्कि चाहिये तो येह कि ज़िन्दों को भी ईसाले सवाब किया जाए।

अल ग़रज़ येह तीजा और चालीसवां वग़ैरा सब इसी ईसाले सवाब की सूरतें हैं और क़त़ई जाइज़ हैं मगर येह ज़रूरी है कि सब काम अच्छी निय्यत से किये जाएं, नुमाइशी न हों वरना न सवाब है न ईसाले सवाब, बल्कि बा'ज़ सूरतों में तो उल्टा वबाल होता है मसलन बा'ज़ लोग ऐसे मौक़ओं पर उधार, क़र्ज़ बल्कि सूदी रुपिये से मह़ज़ अपनी बिरादरी में नाक ऊंची रखने के लिये येह सब कुछ करते हैं, येह

www.dawateislami.net

नाजाइज़ होने के साथ साथ गुनाह भी है । यूंही रिश्तेदारों की इस मौक़अ़ पर दा'वत की जाती है, येह ग़लत़ है, येह मौक़अ़ दा'वत का नहीं बल्कि मोह़ताजों, फ़क़ीरों को खिलाने का है, ताकि मय्यित को सवाब पहुंचे । बा असर इस्लामी भाइयों को अपनी अपनी क़ौम व बिरादरी में इस की इस्लाह़ करनी चाहिये ।

(हमारा इस्लाम, ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 360)

सुवाल : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की नियाज़ का खाना मालदार खा सकते हैं या नहीं ?

जवाब : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن की नियाज़ का खाना न सिर्फ़ येह कि जाइज़ है बल्कि बाइ़से बरकत भी है । रजब शरीफ़ के कूंडे, मुह़र्रम का शरबत या खिचड़ा, माहे रबीउ़ल आख़िर की ग्यारहवीं शरीफ़ जिस में ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म शैख़ **अ़ब्दुल क़ादिर** जीलानी قُدِّسَ سِرُّهُ الرَّبَّانِي की फ़ातिह़ा दिलाई जाती है, और रजब की छटी तारीख़ हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ह़ज़रते सय्यिदुना **मुईनुद्दीन** चिश्ती अजमेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की फ़ातिह़ा दिलाई जाती है, यूंही हुज़ूर ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का तोशा या ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ **अ़ब्दुल ह़क़** رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه का तोशा, येह वोह चीज़ें हैं जो सदियों से मुसलमानों के अ़वाम व ख़वास व उ़लमा व फ़ुज़ला में जारी हैं और इन में ख़ास एहतिमाम किया जाता है और उमरा भी इस में ज़ौक़ो शौक़ से शरीक होते हैं और त़आ़मे तबर्रुक से फ़ैज़ पाते हैं ।

(हमारा इस्लाम, ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 361)

सुवाल : मुह़र्रमुल ह़राम में शुहदाए करबला رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم اَجْمَعِيْن के सिवा किसी और की फ़ातिह़ा दुरुस्त है या नहीं ?

www.dawateislami.net

जवाब : जिस त़रह़ दूसरे दिनों में सब की फ़ातिह़ा हो सकती है इन दिनों में भी हो सकती है। येह ख़याल ग़लत़ है कि मुह़र्रम में सिवाए शुहदाए करबला رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم اَجْمَعِیْن के दूसरों की फ़ातिह़ा न दिलाई जाए।

(हमारा इस्लाम, ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 361)

सुवाल : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن का उ़र्स जाइज़ है या नहीं ?

जवाब : बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَہُمُ اللّٰہُ الْمُبِیْن का उ़र्स जो हर साल इन के विसाल के दिन होता है, या'नी इस तारीख़ में लोग जम्अ़ होते हैं, क़ुरआने मजीद पढ़ते और दूसरे अज़्कार, ख़ैर ख़ैरात करते हैं, या मीलाद शरीफ़ वग़ैरा किया जाता है, येह भी जाइज़ है क्यूंकि ऐसे काम जो बाइ़से ख़ैरो बरकत हैं जिस त़रह़ और दिनों में जाइज़ हैं, इन दिनों में भी जाइज़ हैं। फिर औलियाए किराम رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِم के मज़ारात पर ह़ाज़िरी हर मुसलमान के लिये सआ़दत और बाइ़से बरकत है। रहे ऐसे काम जो शरअ़न मम्नूअ़ हैं, वोह तो हर ह़ालत में मज़मूम हैं और मज़ाराते त़य्यिबा के पास तो और ज़ियादा बुरे।

(हमारा इस्लाम, ज़ियारते क़ुबूर और ईसाले सवाब का बयान, ह़िस्सा : 5, स. 362)

ईसाले सवाब के 16 मदनी फूल

﴾1﴿ फ़र्ज़, वाजिब, सुन्नत, नफ़्ल, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, ह़ज, बयान, दर्स, मदनी काफ़िले में सफ़र, मदनी इन्आ़मात, नेकी की दा'वत, दीनी किताब का मुत़ालआ़, मदनी कामों के लिये इनफ़िरादी कोशिश वग़ैरा हर नेक काम का ईसाले सवाब कर सकते हैं।

﴾2﴿ मय्यित का तीजा, दसवां, चालीसवां, और बरसी करना अच्छा है कि येह ईसाले सवाब के ही ज़राएआ़ हैं, शरीअ़त में तीजे वग़ैरा के अदमे जवाज़ (या'नी नाजाइज़ होने) की दलील न होना ख़ुद दलीले

www.dawateislami.net

जवाज़ है और मय्यित के लिये ज़िन्दों का दुआ करना कुरआने करीम से साबित है जो कि ईसाले सवाब की अस्ल है। चुनान्चे

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِيْمَانِ (پ ۲۸، الحشر: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और वोह जो इन के बा'द आए अ़र्ज़ करते हैं ऐ हमारे रब हमें बख़्श दे और हमारे भाइयों को जो हम से पहले ईमान लाए।*

﴿3﴾ तीजे वग़ैरा का खाना सिर्फ़ उसी सूरत में मय्यित के छोड़े हुवे माल से कर सकते हैं जब कि सारे वुरसा बालिग़ हों और सब के सब इजाज़त भी दे, अगर एक भी वारिस ना बालिग़ है तो सख़्त ह़राम है। हां, बालिग़ अपने ह़िस्से से कर सकता है।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, कफ़न का बयान, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 822)

﴿4﴾ अगर तीजे का खाना पकाया जाए तो सिर्फ़ फ़ुक़रा को खिलाएं मालदारों को येह खाना नहीं खाना चाहिये।

(मुलख़्ख़स अज़ बहारे शरीअ़त, ता'ज़िय्यत का बयान, जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 853)

﴿5﴾ एक दिन के बच्चे को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं, उस का तीजा वग़ैरा भी करने में ह़रज नहीं।

﴿6﴾ जो ज़िन्दा हैं उन को भी बल्कि जो मुसलमान अभी पैदा नहीं हुवे उन को भी पेशगी (एडवान्स में) ईसाले सवाब किया जा सकता है।

﴿7﴾ मुसलमान जिन्नात को भी ईसाले सवाब कर सकते हैं।

﴿8﴾ ग्यारहवीं शरीफ़, रजबी शरीफ़ (या'नी 22 रजबुल मुरज्जब को सय्यिदुना इमाम जा'फ़रे सादिक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के कूंडे करना) वग़ैरा जाइज़ है, कूंडे ही में खीर खिलाना ज़रूरी नहीं दूसरे बरतन में भी खिला सकते हैं। इस को घर से बाहर भी ले जा सकते हैं।

www.dawateislami.net

﴾9﴿ बुज़ुर्गों की फ़ातिहा के खाने को ता'ज़ीमन "नज़्रो नियाज़" कहते हैं और येह नियाज़ तबर्रुक है इसे अमीर व गरीब सब खा सकते हैं।

﴾10﴿ ईसाले सवाब के खाने में मेहमान की शिर्कत शर्त नहीं। घर के अफ़राद अगर ख़ुद ही खालें जब भी कोई ह़रज नहीं।

﴾11﴿ हो सके तो हर रोज़ (नफ़्अ़ पर नहीं बल्कि) अपनी बिकरी का एक फ़ीसद और मुलाज़मत करने वाले तनख़्वाह का माहाना कम अज़ कम तीन फ़ीसद सरकारे ग़ौसे पाक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नियाज़ के लिये निकाल लिया करें। इस रक़म से दीनी किताबें तक़्सीम करें या किसी भी नेक काम में ख़र्च करें اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकतें ख़ुद ही देखेंगें।

﴾12﴿ मस्जिद या मद्रसा का क़ियाम सदक़ए जारिय्या और ईसाले सवाब का बेहतरीन ज़रीआ़ है।

﴾13﴿ दास्ताने अ़जीब, शहज़ादे का सर, दस बीबियों की कहानी और जनाबे सय्यिदा की कहानी वग़ैरा सब मन घड़त क़िस्से हैं इन्हें हरगिज़ न पढ़ा करें इसी त़रह़ एक पॅम्फ़लेट बनाम "वसिय्यत नामा" लोग तक़्सीम करते हैं जिस में किसी "शैख़ अह़मद" का ख़्वाब दर्ज है येह भी जा'ली है इस के नीचे मख़्सूस ता'दाद में छपवा कर बांटने की फ़ज़ीलत और न तक़्सीम करने के नुक़्सानात वग़ैरा लिखे हैं इन का भी ए'तिबार न करें।

﴾14﴿ जितनों को भी ईसाले सवाब करें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रह़मत से उम्मीद है कि सब को पूरा मिलेगा, येह नहीं कि सवाब तक़्सीम हो कर टुकड़े टुकड़े मिले। (बहारे शरीअ़त ज़ियारते क़ुबूर जि. 1, ह़िस्सा : 4, स. 850 मुलख़्ख़सन ردالمحتار،ج۳،ص۱۸۰،دار المعرفة)

﴾15﴿ ईसाले सवाब करने वाले के सवाब में कोई कमी वाक़ेअ़ नहीं होती बल्कि येह उम्मीद है कि इस ने जितनों को ईसाले सवाब किया उन

www.dawateislami.net

सब के मजमूए़ के बराबर इस को सवाब मिले। मसलन कोई नेक काम किया जिस पर इस को दस नेकियां मिलीं अब इस ने दस मुर्दों को ईसाले सवाब किया तो हर एक को दस दस नेकियां पहुंचेगी जब कि ईसाले सवाब करने वाले को एक सौ दस और अगर एक हज़ार को ईसाले सवाब किया तो इस को दस हज़ार दस। وَ عَلٰی هٰذَا الْقِیاس

(बहारे शरीअ़त, ज़ियारते क़ुबूर जि. 1, हि़स्सा : 4, स. 850, मुलख़्ख़स अज़ फ़तावा रज़विय्या जि. 9, स. 629 रज़ा फ़ाउन्डेशन)

﴾16﴿ ईसाले सवाब सिर्फ़ मुसलमान को कर सकते हैं, काफ़िर या मुर्तद को ईसाले सवाब करना या इस को मर्हूम कहना कुफ़्र है

(मदनी पन्ज सूरह, स. 403)

भलाई की मुहर और गुनाह मुआ़फ़

हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो येह दुआ़ किसी मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मुहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है :

سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

(سنن ابی داوٗد، کتاب الادب، ج۲، ص٦٦٧)

www.dawateislami.net

ईसाले सवाब का त़रीक़ा

ईसाले सवाब (या'नी सवाब पहुंचाना) के लिये दिल में निय्यत कर लेना काफ़ी है, मसलन आप ने किसी को एक रुपिया ख़ैरात दिया या एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा या किसी को एक सुन्नत बताई या नेकी की दा'वत दी या सुन्नतों भरा बयान किया, अल ग़रज़ कोई भी नेकी की। आप दिल ही दिल में इस त़रह़ निय्यत कर लें मसलन अभी मैं ने जो सुन्नत बताई इस का सवाब सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को पहुंचे। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ सवाब पहुंच जाएगा। मज़ीद जिन जिन की निय्यत करेंगे उन को भी पहुंचेगा, दिल में निय्यत होने के साथ साथ ज़बान से कह लेना सुन्नते सह़ाबा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم है जैसा कि ह़दीसे सा'द رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ में आया कि उन्हों ने कुंवां खुदवा कर फ़रमाया : "येह उम्मे सा'द के लिये है।" (سنن ابی داود، کتاب الزکاۃ، باب فی فضل سقی الماء، الحدیث: ۱۶۸۱، ج۲، ص ۱۸۰)

ईसाले सवाब का मुरव्वजा त़रीक़ा

आज कल मुसलमानों में ख़ुसूसन खाने पर जो फ़ातिह़ा का त़रीक़ा राइज है, वोह भी बहुत अच्छा है जिन खानों का ईसाले सवाब करना है वोह सारे या सब में से थोड़ा थोड़ा खाना नीज़ एक गिलास में पानी भर कर सब को सामने रख लें।

अब اَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم पढ़ कर एक बार

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

قُلْ یٰۤاَیُّهَا الْكٰفِرُوْنَ ۙ لَاۤ اَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ وَ لَاۤ اَنْتُمْ
عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ۚ وَ لَاۤ اَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ وَ
لَاۤ اَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَاۤ اَعْبُدُ ؕ لَكُمْ دِیْنُكُمْ وَ لِیَ دِیْنِ ۧ

www.dawateislami.net

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ لَمْ يَلِدْ ۙ
وَلَمْ يُوْلَدْ ۙ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۚ

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۙ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا
وَقَبَ ۙ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۙ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۚ

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ مَلِكِ النَّاسِ ۙ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ
الْخَنَّاسِ ۚ الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۚ

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ
يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا
الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ
غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۚ

www.dawateislami.net

एक बार :

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ﴿۱﴾ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿۲﴾ الَّذِيْنَ
يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿۳﴾ وَ
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَ مَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَ بِالْاٰخِرَةِ
هُمْ يُوْقِنُوْنَ ﴿۴﴾ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۗ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۵﴾

पढ़ने के बा'द येह पांच आयात पढ़िये :

﴿۱﴾ وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ﴿۱۶۳﴾ (پ۲، البقرۃ:۱۶۳)

﴿۲﴾ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۵۶﴾ (پ۸، الاعراف:۵۶)

﴿۳﴾ وَ مَاۤ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷، الانبیاء:۱۰۷)

﴿۴﴾ مَا كَانَ مُحَمَّدٌ اَبَاۤ اَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَ لٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ
وَ خَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۴۰﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۴۰)

﴿۵﴾ اِنَّ اللّٰهَ وَ مَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ؕ يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا
عَلَيْهِ وَ سَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ﴿۵۶﴾ (پ۲۲، الاحزاب:۵۶)

अब दुरूद शरीफ़ पढ़िये :

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَ اٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمَ ؕ
صَلٰوةً وَّ سَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿۱۸۰﴾ وَ سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿۱۸۱﴾
وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۸۲﴾
(پ۲۳، الصّٰفّٰت:۱۸۰-۱۸۲)

www.dawateislami.net

अब हाथ उठा कर फ़ातिहा पढ़ाने वाला बुलन्द आवाज़ से "اَلْفَاتِحَة" कहे, सब लोग आहिस्ता से سُوْرَةُ الْفَاتِحَة पढ़ें, अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला इस त़रह़ ए'लान करे : "मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने जो कुछ पढ़ा है इस का सवाब मुझे दे दीजिये।" तमाम ह़ाज़िरीन कह दें : आप को दिया। अब फ़ातिहा पढ़ाने वाला ईसाले सवाब कर दे। ईसाले सवाब के अल्फ़ाज़ लिखने से क़ब्ल इमामे अहले सुन्नत आ'ला ह़ज़रत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़ातिहा से क़ब्ल जो सूरतें वग़ैरा पढ़ते थे वोह तह़रीर करता हूं :

आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का फ़ातिहा का त़रीक़ा

एक बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ مٰلِكِ

يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ اِهْدِنَا

الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ

غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۠

एक बार

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَيُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ ؕ

لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا

بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَ مَا خَلْفَهُمْ ۚ وَ لَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ

مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضَ ۚ

وَ لَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَ هُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝۲۵۵

www.dawateislami.net

तीन बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢ لَمْ يَلِدْ ۙ

وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

ईसाले सवाब के लिये दुआ का त़रीक़ा

या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जो कुछ पढ़ा गया (अगर खाना वग़ैरा है तो इस त़रह़ से भी कहें) और जो कुछ खाना वग़ैरा पेश किया गया है बल्कि आज तक जो कुछ टूटा फूटा अ़मल हो सका है इस का सवाब हमारे नाक़िस अ़मल के लाइक़ नहीं बल्कि अपने करम के शायाने शान मर्ह़मत फ़रमा और इसे हमारी जानिब से अपने प्यारे मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से तमाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तमाम सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُم तमाम औलियाए इ़ज़ाम رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की जनाब में नज़्र पहुंचा। सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के तवस्सुत़ से सय्यिदुना आदम सफ़ीयुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام से ले कर अब तक जितने इन्सान व जिन्नात मुसलमान हुवे या क़ियामत तक होंगे सब को पहुंचा, इस दौरान जिन जिन बुज़ुर्गों को ख़ुसूसन ईसाले सवाब करना है उन का नाम भी लेते जाएं, अपने मां बाप और दीगर रिश्तेदारों और अपने पीरो मुर्शिद को भी ईसाले सवाब करें। (फ़ौत शुदगान में से जिन जिन का नाम लेते हैं उन को ख़ुशी ह़ासिल होती है)

अब ह़स्बे मा'मूल दुआ ख़त्म कर दें। (अगर थोड़ा थोड़ा खाना और पानी निकाला था तो वोह दूसरे खानों और पानी में डाल दें)

(नमाज़ के अह़काम, स. 486-494)

www.dawateislami.net

इमाम के लिये 30 मदनी फूल

अज़ : बानिये दा'वते इस्लामी, आ़शिक़े आ'ला ह़ज़रत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास** अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

इमामत इस्लाम की बेहतरीन ख़िदमत और रिज़्क़े ह़लाल के ह़ुसूल का अ़ज़ीम ज़रीआ़ है। मगर ला परवाही के बाइ़स मुक़्तदियों की नमाज़ों का बोझ مَعَاذَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जहन्नम में पहुंचा सकता है। लिहाज़ा मुमकिन हो तो दा'वते इस्लामी के आ़लमगीर मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना मह़ल्ला सौदागरान पुरानी सब्ज़ी मन्डी कराची (या जहां मुयस्सर आए) में इमामत कोर्स **ज़रूर ज़रूर ज़रूर** कीजिये।

﴾1﴿ बहारे शरीअ़त के इब्तिदाई चार ह़िस्से पढ़ कर समझ लीजिये ज़रूरतन उ़लमाए अहले सुन्नत से भी रहनुमाई ह़ासिल कर लीजिये।

﴾2﴿ नमाज़ में जो सूरतें और अज़्कार पढ़ते हैं वोह लाज़िमन किसी सुन्नी क़ारी को सुना दें।

﴾3﴿ अगर मआ़शी परेशानी न हो तो बिला उजरत इमामत اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ आप के लिये दोनों जहान में बाइ़से सआ़दत है।

﴾4﴿ बिला सख़्त मजबूरी तन ख़्वाह बढ़ाने का मुत़ालबा मुनासिब नहीं नीज़ ज़ियादा मुशाहरे के लालच में दूसरी मस्जिद में चला जाना एक इमाम को किसी त़रह़ ज़ैब नहीं देता।

﴾5﴿ मेहरबानी कर के पेशगी तन ख़्वाह न लें बल्कि पहली तारीख़ से क़ब्ल भी तन ख़्वाह क़बूल न करें कि ज़िन्दगी का क्या भरोसा !

﴾6﴿ सुवाल करने, क़र्ज़ मांगने से बचें वरना इस का नुक़्सान ख़ुद ही देख लेंगे।

﴾7﴿ आज कल इमाम अपने आप को ख़त़ीब, और मुअज़्ज़िन ख़ुद को नाइब इमाम कहना कहलवाना पसन्द करने लगे हैं। इमामुल अम्बिया

www.dawateislami.net

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गुलाम को इमाम, और सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुअज़्ज़िन सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दीवाने को मुअज़्ज़िन कहलवाने में शर्म नहीं करनी चाहिये।

﴿8﴾ लिबासे तक़्वा इख़्तियार करें, झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी वग़ैरा गुनाहों से परहेज़ करते रहें। इस से आख़िरत के ख़सारे के साथ साथ दुन्या में भी येह नुक़्सान होगा कि लोग आप से बद ज़न होंगे।

﴿9﴾ ज़ियादा बोलने, क़हक़हा लगाने और मज़ाक़ करने से इ़ज़्ज़त और रो'ब में कमी आती है। मुक़्तदियों से बे तकल्लुफ़ भी न बनें।

﴿10﴾ हुब्बे जाह से बचें, शोहरत व इ़ज़्ज़त बनाने की ख़्वाहिश आप के लिये बाइ़से हलाकत साबित हो सकती है।

﴿11﴾ इमाम का मिलनसार होना बे ह़द ज़रूरी है। लिहाज़ा नमाज़ों के बा'द लोगों से मुलाक़ात करें, फिर थोड़ी देर के लिये वहीं तशरीफ़ रखें मगर दुन्या की बातें न करें, सिर्फ़ दीनी गुफ़्तगू, वोह भी आहिस्तगी के साथ हो कि नमाज़ियों वग़ैरा के लिये तशवीश का बाइ़स न बने।

﴿12﴾ जो इमाम मिलनसार नहीं होता, लोगों से दूर दूर रहता है, सिर्फ़ अपने जैसे या'नी दाढ़ी इ़मामे वालों ही से मेल जोल रखता है तो आ़म लोग भी उस से दूर भागते हैं और अगर इमामत वग़ैरा के मुआ़मले में आड़ा वक़्त आता है तो तआ़वुन ह़ासिल नहीं होता और फिर ...

﴿13﴾ मुअज़्ज़िन साहिब और ख़ुद्दामे मस्जिद से बना कर रखें। इन पर हुक्म चलाने के बजाए सआ़दत समझते हुवे मस्जिद की सफ़ाई अपने हाथों से करते रहा करें, दरियां ख़ुद बिछाएं, ग़ैर ज़रूरी पंखे वग़ैरा ख़ुद ही बन्द कर दिया करें,

﴿14﴾ वुज़ूख़ाने की सफ़ाई में भी ख़ुद्दाम का हाथ बटा दिया करें, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ महब्बत भरी फ़ज़ा क़ाइम होगी और इन को मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र के लिये आमादा करना आप के लिये आसान होगा।

www.dawateislami.net

﴾15﴿ मस्जिद इन्तिज़ामिया के साथ हरगिज़ उलझाव पैदा न करें, इन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आएं और कोशिश कर के इन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करवाएं।

﴾16﴿ किसी भी सुन्नी इमाम व इन्तिज़ामिया से हरगिज़ न बिगाड़ें। इन पर तन्क़ीदें कर के इन्हें अपना मुख़ालिफ़ न बनाएं। अगर बिलफ़र्ज़ आप से कभी कोताही हो भी जाए तो फ़ौरन मुआ़फ़ी मांग लें। हां, जिस की शरई ग़लती हो तो हुस्ने तदबीर के साथ बराहे रास्त उस की इस्लाह़ करें।

﴾17﴿ अत़राफ़ की मसाजिद के अइम्मए अहले सुन्नत और इन्तिज़ामिया से मुरासिम उस्तुवार करें और इन्हें दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का शरफ़ दिलवाएं।

﴾18﴿ जुमुआ़ व ईदैन की शराइत़ में से येह भी है कि इन्हें क़ाइम करने वाला ह़ाकिमे इस्लाम या उस का माज़ून (या'नी इजाज़त याफ़्ता) हो। फ़ी ज़माना उ़लमाए अहले सुन्नत ह़ाकिमे इस्लाम के क़ाइम मक़ाम हैं। लिहाज़ा अपने शहर के सब से बड़े सुन्नी आ़लिम (जिस की त़रफ़ लोग शरई मसाइल में रुजूअ़ करते हों) से इजाज़त ले लीजिये। अब इजाज़त याफ़्ता उसी मस्जिद वग़ैरा में जुमुआ़ व ईदैन क़ाइम करने के लिये दूसरे को इजाज़त दे सकता है। अगर पूरे शहर में कोई भी ऐसा आ़लिम न हो तो आ़म लोग जिस को चाहें अपने लिये जुमुआ़ व ईदैन का इमाम बना सकते हैं। (ख़ुसूसन नई ता'मीर कर्दा मस्जिद में इस मस्अले का ख़याल रखा जाए।)

﴾19﴿ जुमुआ़ व ईदैन में ख़ुत़बाते रज़विय्या ही पढ़ें कि येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली और आ़शिक़े रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और मुजद्दिदे आ'ज़म इमाम **अह़मद रज़ा ख़ान** عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के मुरत्तब शुदा हैं। उन के अल्फ़ाज़ में कमी बेशी न करें कि वली की ज़बान व क़लम से निकले हुवे अल्फ़ाज़ भी तबर्रुक होते हैं।

www.dawateislami.net

﴾20﴿ जुमुआ़ को उ़मूमन नमाज़ियों की अकसरिय्यत ख़ुत़बे के वक़्त पहुंचती है। ऐसे में लोगों की नफ़्सिय्यात का ख़याल रखना ज़रूरी है मसलन मुक़र्ररा वक़्त पर जमाअ़त क़ाइम होना, बयान में दिल चस्पी का सामान मुहय्या करना वग़ैरा। बयान आसान और सादा अल्फ़ाज़ पर मुश्तमिल हो। अ़वाम में अदक़ मज़ामीन न छेड़ें बल्कि इस उसूल کَلِّمُوا النَّاسَ عَلٰی قَدْرِ عُقُوْلِهِمْ (या'नी लोगों की अ़क़्लों के मुत़ाबिक़ कलाम करो) को मद्दे नज़र रखें। लोग औलियाउल्लाह رَحْمَةُاللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ की ह़िकायात व करामात उ़मूमन दिल चस्पी से सुनते हैं और अगर इन को सुन्नतें सिखाई जाएं तो एक दम क़रीब आ जाते हैं, क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी का ज़ेह्न भी दें। हर बयान का इख़्तिताम दा'वते इस्लामी के सुन्नतों की तरबिय्यत के मदनी क़ाफ़िलों की बरकतों और इन में सफ़र की तरग़ीब पर हो तो मदीना मदीना।

﴾21﴿ बयान, ख़ुत़बा, दुआ़ और सलातो सलाम वग़ैरा के लिये ह़स्बे ज़रूरत स्पीकर मुंह की सीध में पहले ही से जमा लें फिर उस को ऑन (On) करें वरना इस की खड़ खड़ का इन्तिहाई ना पसन्दीदा शोर मस्जिद में गूंजेगा।

﴾22﴿ उ़लमाए अहले सुन्नत के मा बैन जिन मसाइल में इख़्तिलाफ़ पाया जाता है उन के बयान से इजतिनाब फ़रमाएं।

﴾23﴿ अगर आप बा सलाहिय्यत आ़लिमे दीन हैं तो रोज़ाना दर्से क़ुरआन (**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान शरीफ़** से) और दर्से ह़दीस देने का शरफ़ ह़ासिल करें।

﴾24﴿ बयान वग़ैरा में अपने लिये आ़जिज़ाना अल्फ़ाज़ कहते वक़्त दिल पर ग़ौर कर लिया करें, अगर क़ल्ब आ़जिज़ी से ख़ाली हो तो इन्किसारी के अल्फ़ाज़ से आप ख़ुद को झूट और रियाकारी के गुनाह से किस त़रह़ बचा सकेंगे।

www.dawateislami.net

﴾25﴿ दर्स व बयान से क़ब्ल तय्यारी की आ़दत बनाएं, ज़रूरतन उ़लमाए अहले सुन्नत की कुतुब से फ़ोटो कापियां करवा कर अपनी डाइरी में चस्पां कर लें।

﴾26﴿ दीगर कुतुबे दीनिया के साथ साथ हुस्सामुल ह़रमैन, इह़याउल उ़लूम, मिन्हाजुल आ़बिदीन वग़ैरा भी मुत़ालए़ में रखें।

﴾27﴿ रोज़ाना फ़ैज़ाने सुन्नत के दर्स में शिर्कत फ़रमाया करें, और ज़रूरतन ख़ुद भी दर्स दे दिया करें।

﴾28﴿ आप की मस्जिद से हफ़्तावार अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत ज़रूर होना चाहिये। इस में आप ख़ुद भी शरीक रहें फिर देखें आप की मस्जिद में सुन्नतों की कैसी बहार आती है, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

﴾29﴿ हर माह कम अज़ कम तीन दिन मदनी क़ाफ़िले में सफ़र को अपना मा'मूल बनाएं, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप की **बेटरी चार्ज** होती रहेगी।

﴾30﴿ हर माह मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के ज़िम्मादार इस्लामी भाई को जम्अ़ करवाते रहें। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ तक़्वा पैदा होगा।

इक़ामत के बा'द इमाम साहिब ए'लान करें

अपनी एड़ियां, गर्दनें और कन्धे एक सीध में कर के सफ़ सीधी कर लीजिये। दो आदमियों के बीच में जगह छोड़ना गुनाह है, कन्धे से कन्धा मस या'नी टच (Touch) किया हुवा रखना वाजिब, सफ़ सीधी रखना वाजिब और जब तक अगली सफ़ कोने तक पूरी न हो जाए जान बूझ कर पीछे नमाज़ शुरूअ़ कर देना तर्के वाजिब, नाजाइज़ और गुनाह है। 15 साल से छोटे ना बालिग़ बच्चों को सफ़ों में खड़ा न रखिये, इन्हें कोने में भी न भेजिये, छोटे बच्चों की सफ़ सब से आख़िर में बनाइये। (नमाज़ के अह़काम, स. 267) (तफ़्सीली मा'लूमात के लिये देखिये : फ़तावा रज़विय्या, स. 219-225)

www.dawateislami.net

नेकी की दा'वत

हम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के आ़जिज़ बन्दे और उस के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के अदना ग़ुलाम हैं। यक़ीनन ज़िन्दगी बे ह़द मुख़्तसर है। हम लम्ह़ा ब लम्ह़ा मौत के क़रीब होते जा रहे हैं। अ़नक़रीब हमें अन्धेरी क़ब्र में उतार दिया जाएगा। नजात तमाम जहानों के पालने वाले **अल्लाह** रब्बुल आलमीन عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त और मोमिनीन पर रह़मो करम फ़रमाने वाले रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ में है।

दा'वते इस्लामी का एक मदनी क़ाफ़िला.....शहर से आप के अ़लाक़े की.....मस्जिद में आया हुवा है। हम **नेकी की दा'वत** के लिये ह़ाज़िर हुवे हैं। आप से अ़र्ज़ है कि आप भी हमारा साथ दीजिये.....मस्जिद में अभी बयान जारी है। आप अभी तशरीफ़ ले चलिये और चल कर बयान में शिर्कत फ़रमा लीजिये। हम आप को लेने के लिये आए हैं। आइये, तशरीफ़ ले चलिये.....अगर अभी नहीं आ सकते तो नमाज़े मग़रिब वहीं अदा फ़रमा लीजिये। नमाज़ के बा'द اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सुन्नतों भरा बयान होगा। आप से आ़जिज़ाना इल्तिजा है बयान ज़रूर सुनियेगा।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ आप को दोनों जहान की भलाइयां नसीब फ़रमाए। اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللهُ تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

www.dawateislami.net

दुआएं

مَوْلَایَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَآئِمًا اَبَدًا عَلٰی حَبِیْبِكَ خَیْرِ الْخَلْقِ كُلِّهِمِ

یَارَبِّ بِالْمُصْطَفٰی بَلِّغْ مَقَاصِدَنَا وَاغْفِرْ لَنَا مَا مَضٰی یَا وَاسِعَ الْكَرَمِ

اَللّٰهُمَّ رَبِّ اجْعَلْنِیْ مُقِیْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّیَّتِیْ

رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِیْ وَلِوَالِدَیَّ

وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ یَوْمَ یَقُوْمُ الْحِسَابُ

तर्जमा : ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का क़ाइम करने वाला रख, और कुछ मेरी औलाद को ऐ हमारे रब ! और मेरी दुआ सुन ले। ऐ हमारे रब ! मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब क़ाइम होगा।

اَللّٰهُمَّ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّیّٰتِنَا

قُرَّةَ اَعْیُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِیْنَ اِمَامًا ﴿۷۴﴾

तर्जमा : *ऐ हमारे रब ! हमें दे हमारी बीबियों और हमारी औलाद से आंखों की ठन्डक, और हमें परहेज़गारों का पेशवा बना।*

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِیْرِنَا

وَكَبِیْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَهٗ مِنَّا فَاَحْیِهٖ

عَلَی الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّیْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَی الْاِیْمَانِ

(नमाज़ के अह़काम, नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा, स. 383)

तर्जमा : *इलाही عَزَّوَجَلَّ ! बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर मुतवफ़्फ़ा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को, इलाही عَزَّوَجَلَّ तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे।*

www.dawateislami.net

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ
تَبَارَكْتَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

(صحیح مسلم، کتاب المساجد ومواضع الصلوۃ، باب استحباب الذکر بعد الصلاۃ...الخ، الحدیث:۵۹۲، ص۲۹۸)

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! तू सलाम है और तुझ ही से सलामती है तू बरकत वाला है ऐ जलाल और बुज़ुर्गी वाले।

فَسَهِّلْ يَا اِلٰهِيْ كُلَّ صَعْبٍ بِحُرْمَتِ سَيِّدِ الْاَبْرَارِ سَهِّلْ

(मदनी पन्ज सूरह, ख़त्मे क़ादिरिय्यह, स. 261)

तर्जमा : ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! नेकों के सरदार صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में तमाम मुश्किलात ह़ल फ़रमा।

اَللّٰهُمَّ اَعِنَّا عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ

(فردوس الاخبار للدیلمی، الحدیث:۱۷۲۲، ج۱، ص۲۴۲)

तर्जमा : ऐ हमारे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें अपने ज़िक्रो शुक्र और अच्छी त़रह़ इ़बादत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा।

اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِيْ كِتَابِيْ بِيَمِيْنِيْ وَحَاسِبْنِيْ حِسَاباً يَّسِيْرًا

(हमारा इस्लाम, अच्छी अच्छी दुआ़एं, ह़िस्सा : 3, स. 162)

तर्जमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मुझे मेरा नामए आ'माल दाएं हाथ में अ़त़ा फ़रमा और मुझ से आसान ह़िसाब ले।

اَللّٰهُمَّ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِيْنَ

तर्जमा : ऐ मेरे रब عَزَّوَجَلَّ बख़्श दे और रह़म फ़रमा और तू सब से बरतर रह़म करने वाला। اٰمِيْن اٰمِيْن يَا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ بِجَاهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

www.dawateislami.net

ग़म ख़्वारी का सवाब

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो शख़्स अपने किसी (मुसलमान) भाई की मुसीबत में ता'ज़ियत करता (या'नी तसल्ली देता) है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ बरोज़े क़ियामत उसे इ़ज़्ज़त का लिबास पहनाएगा। (الترغیب والترھیب، ج٤،ص٣٤٤)

मस्जिद में हंसने की सज़ा

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है, हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : اَلضَّحِكُ فِی الْمَسْجِدِ ظُلْمَةٌ فِی الْقَبْرِ यानी "मस्जिद में हंसना क़ब्र में अंधेरा (लाता) है।"

(الفردوس بماثور الخطاب، ج٢،ص٤١،حدیث٣٧٠٦)

जन्नत में भी उ़लमा की ह़ाजत होगी

मदीने के सुल्त़ान, रह़मते आ़लमिय्यान, सरवरे ज़ीशान صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने पुरनूर है : जन्नती जन्नत में उ़लमाए किराम के मोह़ताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ़ को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के दीदार से मुशर्रफ़ होंगे। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ फ़रमाएगा : تَمَنَّوْا عَلَیَّ مَا شِئْتُم या'नी "मुझ से मांगो, जो चाहो।" जन्नती उ़लमाए किराम की त़रफ़ मुतवज्जेह होंगे कि अपने रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से क्या मांगे ? वोह फ़रमाएंगे : येह मांगो, वोह मांगो, जैसे वोह लोग दुन्या में उ़लमाए किराम के मोह़ताज थे जन्नत में भी उन के मोह़ताज होंगे।

(الفردوس بمأثور الخطاب،الحدیث: ٨٨٠، ج١، ص٢٣٠والجامع الصغیر للسیوطی،الحدیث:٢٢٣٥،ص١٣٥)

www.dawateislami.net

مآخذ و مراجع

نام کتاب	مصنف	مطبوعہ
کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳۴۰ ھ	برکات رضا ھند
التفسیر الکبیر	امام محمد بن عمر فخر الدین رازی ۶۰۶ ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
الدر المنثور	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ ھ	دار الفکر بیروت
المؤطا	امام مالک بن انس ۱۷۹ ھ	دار المعرفۃ بیروت
الآثار	امام ابو یوسف یعقوب بن ابراھیم الانصاری ۱۸۲ ھ	المکتبۃ الشاملۃ
صحیح البخاری	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن اسماعیل بخاری ۲۵۶ ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
صحیح مسلم	امام ابو الحسین مسلم بن الحجاج القشیری ۲۶۱ ھ	دار ابن حزم بیروت
سنن ابن ماجہ	امام ابو عبد اللّٰہ محمد بن یزید ابن ماجہ ۲۷۳ ھ	دار المعرفۃ بیروت
سنن ابی داود	امام ابو داود سلیمان بن اشعث ۲۷۵ ھ	دار الفکر بیروت
سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی ۲۷۹ ھ	دار الفکر بیروت
المصنف	الحافظ عبد اللّٰہ بن محمد بن ابی شیبۃ ۲۳۵ ھ	دار الفکر بیروت
المسند	امام احمد بن حنبل ۲۴۱ ھ	دار الفکر بیروت
سنن الدارمی	امام عبد اللّٰہ بن عبد الرحمن الدارمی ۲۵۵ ھ	دار الفکر بیروت
السنن الکبری	امام ابو عبد الرحمٰن احمد بن شعیب النسائی ۳۰۳ ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت
المعجم الکبیر	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ ھ	دار احیاء التراث العربی بیروت
المعجم الاوسط	امام ابو القاسم سلیمان بن احمد الطبرانی ۳۶۰ ھ	دار الفکر بیروت
المستدرک	امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم النیشاپوری ۴۰۵ ھ	دار المعرفۃ بیروت
حلیۃ الاولیاء	امام ابو نعیم احمد بن عبد اللّٰہ اصبھانی ۴۳۰ ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت

www.dawateislami.net

شعب الایمان	امام ابو بکر احمد بن الحسین البیهقی ۴۵۸ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
فردوس الاخبار	امام حافظ ابوشجاع شیرویه بن شهر دار الدیلمی ۵۰۹ھ	دارالفکر بیروت
الاحسان برتیب صحیح ابن حبان	امیر علاء الدین علی بن بلبان فارسی ۷۳۹ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مشکاة المصابیح	امام محمد بن عبد اللّٰه الخطیب التبریزی ۷۴۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مجمع الزوائد	امام نور الدین علی بن ابی بکر ۸۰۷ھ	دار الفکر بیروت
الجامع الصغیر	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
جمع الجوامع	امام جلال الدین عبد الرحمن بن ابی بکر السیوطی ۹۱۱ھ	دار الفکر بیروت
کشف الخفاء	امام اسماعیل بن محمد جراحی ۱۱۶۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت
مرقاة المفاتیح	امام نور الدین علی بن سلطان (ملا علی قاری) ۱۰۱۴ھ	دار الفکر بیروت
رد المحتار	محمد امین بن عمر المعروف ابن عابدین ۱۲۵۲ھ	دارالمعرفة بیروت
فتاوی رضویه	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خاں ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈ یشن مرکز الاولیاء
بهار شریعت	محمد امجد علی اعظمی ۱۳۶۷ھ	مکتبة المد ینه باب المدینه
همارا اسلام	مفتی محمد خلیل خان برکاتی ۱۴۰۵ھ	فرید بک سٹال مرکز الاولیاء
نماز کے احکام	امیر اهلسنت محمد الیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتهم العالیه	مکتبة المد ینه باب المدینه
الصواعق المحرقة	امام احمد بن حجر الهیتمی المکی ۹۷۴ھ	مدینة الاولیاء (ملتان)
قصیدة البردة	امام شرف الدین محمد بن سعید البوصیری ۶۹۵ھ	ضیاء القرآن پبلکشنز لاهور
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خاں ۱۳۴۰ھ	مکتبة المد ینه باب المدینه
ذوق نعت	علامه مولانا حسن رضا بن نقی علی خاں ۱۳۲۶ھ	برکات رضا هند
مدنی پنج سوره	امیر اهلسنت محمد الیاس عطار قادری رضوی دامت برکاتهم العالیه	مکتبة المد ینه باب المدینه
فرهنگ آصفیه (لغت	سید احمد دهلوی ۱۹۱۶ء	مرکز الاولیاء(لاهور)
اردو لغت	اردو لغت بورڈ	باب المدینه(کراچی)

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इ़ल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

याद दाश्त

दौराने मुत़ालआ़ ज़रूरतन अन्डर लाइन कीजिये, इशारात लिख कर सफ़ह़ा नम्बर नोट फ़रमा लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इल्म में तरक़्क़ी होगी।

उ़नवान	सफ़ह़ा	उ़नवान	सफ़ह़ा

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عزوجل तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा'रात मग़रिब की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है। आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िलों में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी इन्आ़मात पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عزوجل

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें

देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560

अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200

मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्राउन्ड फ़्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997

हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786

नागपुर :- सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पुरा, नागपुर, महाराष्ट्र, फ़ोन : 07304052526

अजमेर :- 19 / 216, फ़लाहे दारैन मस्जिद के क़रीब, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, राजस्थान, फ़ोन : 09352694586

हुबली :- ए जे मुढोल कोम्पलेक्स, ए जे मुढोल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक - फ़ोन : 09900332092

बनारस :- अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बाशाह की तकिया, मदनपुरा, बनारस, यु.पी, फ़ोन : 09369023101

Web : www.dawateislami.net / E- mail : maktabadelhi@gmail.com